अनुवादक : योगेन्द्र चौधरी

मूल्य : रु० 8 00

प्रथम सस्करण 1974
HASIL RAHA TEEN (Novel), by Vimal Mitra

हासिल रहा तीन

६०४

उपन्यास

विमल मित्र



राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

गणित का पहाड़। आयों के आंसू का पहाड़ हो सकता है तो गणित का पहाड़ नहीं हो सकता क्या ? कम से कम रणवीर को तो यही प्रतीत होता है। इतने-इतने रुपयों का हिसाब करते-करते पहाड़ के किस कोने में वह पछाड़ खाकर गिर पड़ता है कि उसे कोई होश ही नहीं रहता। तब लाखों रुपये उस पर छलांग लगाकर कूद पड़ते हैं। रुपयों की लहरों में तब वह डूबने-उतराने लगता है।

एक हिसाब ज्यों ही खत्म होता है कि दूसरा हिसाब उसके सर पर आकर सवार हो जाता है। तब उसकी सांसें घुटने लगती हैं।

उस दिन उसी तरह कुछेक वाउचर आकर उसके सर पर सवार हो गए।

रणवीर उस वक्त नाश्ता करने जा रहा था।

मैनेजर ने कहा, "नहीं ; इसकी जरूरत आज ही है···"

रुपयों की राशि पर दृष्टि पड़ते ही रणवीर चौंक पड़ा। सबको खत्म करने में कम से कम पांच-छह घण्टे लगेंगे। किसी दिन हिसाब करते-करते ही उसके पिता ने आखिरी सांस ली थी। आदमी के जीवन में हिसाब का कोई अंत है ! दण्ड, पल, दिन, क्षण, मुहूर्त। हर दण्ड, हर पल रणवीर का पिता हिसाब किया करता था : पाप का हिसाब, पुण्य का हिसाब, लेन और देन का हिसाब। हर रोज वह हिसाब से खर्च किया करता था। पिता को हमेशा यही भय बना रहता था कि आय की बनिस्बत कहीं व्यय की राशि ज्यादा न हो जाए। लेकिन वह जितना ही हिसाब करता हिसाब के लेन-देन में उतना ही खो जाया करता था।

याद है, बहुत बार आधी रात में रणवीर की नींद जब टूट जाती तो वह अपने बाप को फर्श पर बैठा, लालटेन की रोशनी में हिसाब के खाते में खोया हुआ पाता।

मां को गुस्सा हो आता। बोलती, 'इतना तुम क्या हिसाब करते हो ?' बाबूजी कहते, 'हिसाब बगैर किए कहीं काम चल सकता है ! तुम लोग इतने-इतने प्राणी हो, खाओगे क्या ?'

इस पर मां कुछ नही कहती थी। वह मन ही मन हंसती थी।

बाबूजी समझ जाते थे और कहते थे, 'अभी बात तुम्हारी समझ मे नहीं आ रही है। जब मैं मर जाऊंगा तब समझोगी···'

दुनिया के दूसरे-दूसरे आदमी जब आराम के साथ मौज से जीवन जीते थे तब बाबूजी हिसाब में तल्लीन रहते थे : एक के बाद दो, दो के बाद तीन, तीन के बाद चार। मगर रणवीर ने कभी ऐसा नहीं पाया कि बाबूजी का हिसाब मिल गया हो। बाबूजी का हिसाब हालांकि कभी मिलता नहीं था लेकिन मिलाने के लिए वह प्राणपण से कितनी ही कोशिशें करते थे !

बाबूजी बीच-बीच में ऊबकर मा से कहते थे, 'जानती हो, कल हिसाब नहीं मिला···'

जिस तरह बाबूजी का हिसाब नहीं मिलता था, मां का हिसाब भी कभी मिलता था ? मां का भी अपना एक हिसाब था। छुटपन से बड़े होने तक मां को भी बहुत सारा हिसाब-किताब करना पडा है। मां ने हिसाब करके किसी दिन इसकी चाह की थी कि बड़े घर में उसकी शादी होगी, एक बड़े परिवार की वह गृहिणी होगी, विख्यात सन्तान की मां बनेगी।

लेकिन मां का सारा हिसाब कब गड्डमड हो गया, क्यों गड्डमड हो गया, इसकी जानकारी खुद मां को भी नही है। फिर भी वह मन ही मन जिन्दगी-भर हिसाब-किताब मे ही डूबी रही।

एकाएक मैनेजर आकर उपस्थित हुआ।

"कहो बोम, कितना कर चुके ? हरीअप, हरीअप···क्या सोच रहे हो ?"

फर्श पर मोटा गलीचा बिछा है। मैनेजर के पैरो की आहट कानों में पहुंच नही पाई थी। अगर पहुचती तो वह सावधान हो जाता। फिर भी जल्दबाजी करने से ही क्या हिसाब मिल जायेगा ? मैनेजर का अपना हिसाब क्या मिल चुका है ? रणवीर के बाप का हिसाब नही मिला, मां के साथ भी यही बात रही। हो सकता है रणवीर को स्वयं का हिसाब भी न मिले। रणवीर जिस मुहल्ले मे रहता है उस, नीलमणि हालदार लेन, के बाशिन्दों में से किसी

का हिसाब मिला है !

रणवीर फिर से हिसाब करने बैठ गया । गणित का पहाड़ । आंखों के आंसू का जबकि पहाड़ हो सकता है तो गणित का पहाड़ नहीं हो सकता ? इतने रुपयों का हिसाब-किताब करते-करते रणवीर के सर पर लाखों रुपये छलांग लगाने लगे । तब वह रुपयों की लहरों में डूबने-उतराने लगा । पांच साते पैंतीस, पैंतीस का पांच, हासिल रहा तीन'''

सचमुच नीलमणि हालदार लेन के तमाम बाशिन्दे हिसाबी हैं, खास तौर से उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के तीनमंजिले के बाशिन्दे। पहली मंजिल पर मदनलाल अपने बाल-बच्चे, पत्नी और सास के साथ रहता है। दूसरी मंजिल पर हिमांशु सरकार अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्रवधू के साथ और तीसरी मंजिल पर हरिपद चक्रवर्ती ।

हर कोई हिसाब के साथ चलता है । जन्म से मृत्यु तक जीवन को हिसाब के बाड़े के अन्दर चारों तरफ से बांधकर रखना चाहता है । और यह क्या सिर्फ उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के बाशिन्दे ही चाहते हैं ? इस मकान का मालिक भी तो हिसाबी ही है । मकान-मालिक भी हिसाब करता है : पांच साते पैंतीस, पैंतीस का पांच, हासिल रहा तीन'''

दरअसल ईश्वरप्रसाद झुनझुनियां इस मकान का मालिक है। आदिकाल से लेकर अनन्तकाल तक यह इस मकान का मालिक बना रहेगा । उसमें कोई उलट-फेर नहीं होने जा रहा है । कम से कम इन तीनों किरायेदारों का यही मत है । कब ईश्वरप्रसाद झुनझुनियां ने यह मकान बनवाया था, उसका हिसाब किसी को भी मालूम नहीं है । जब कलकत्ता कॉरपोरेशन नहीं बना था, शायद उससे भी पहले का यह मकान है । हो सकता है उसके बाद का हो । लेकिन उस हिसाब के खाते को कौन देखने जाता है, कौन सरे-जमीन तहकीकात करने जाता है । इतना वक्त किसके पास है ? इससे तो बेहतर है कि बीते दिनों के पापों को दूर करो, जिससे अधिक लाभ हो ।

बीते दिनों के पापों को दूर करने के लिए ही राधा बुआ मकान में एक-

मंजिले से बाहर निकली थी। सुबह नल पर 'गंगा-स्नान' करने के बाद रास्ते पर ज्यों ही पांव रखने जा रही थी कि सामने सर्वनाश आकर खड़ा हो गया। थोड़ा और आगे बढ़ते ही दुबारा नहाना पड़ता।

बिलकुल दरवाज़े के ऊपर ही कई जूठे केले के पत्ते और मिट्टी के टूटे प्याले पड़े थे।

यह दृश्य देखते ही राधा बुआ चिहुंक उठी, "ओ नेड़ी, नेड़ी···"

भवदुलाल उस समय सोकर जगा था और अखबार पर आंखें दौड़ा रहा था। किस सिनेमाघर में कौन-सी तस्वीर चल रही है, उसकी सूची मन-ही-मन स्थिर कर रहा था। अचानक सास की पुकार सुनते ही चंचल हो उठा।

राधा बुआ की बेटी उस वक्त बिस्तर से उठने-उठने को थी। मां की पुकार सुनते ही उठने जा रही थी। भवदुलाल ने कहा, "उफ, सुबह-सुबह तुम्हारी मां का शोर-शराबा शुरू हो गया।"

उसके बाद अपनी पत्नी की ओर देखता हुआ बोला, "तुम्हें उठने की ज़रूरत नहीं, मैं देखने जा रहा हूं···"

इतना कहकर तहमद संभालकर गांठ कसता हुआ कमरे से बाहर निकल पड़ा। सोने के कमरे के सामने छोटा-सा आंगन है। आंगन का तीन-चौथाई हिस्सा कोयले-उपलों से भरा है। उसी के बीच ईंट से घिरे एक स्थान में थोड़ी-सी मिट्टी डालकर तुलसी का बिरवा रोपा गया है। असल में उस स्थान को सास ने तुलसी के बिरवे के लिए ही तैयार किया था। मगर धीरे-धीरे कई मिर्च के पौधे रोप दिए थे। उसके बाद भी जब जगह बच गई तो उसमें लौकी की बेल लगा दी थी। लौकी की वह बेल बढ़ते-बढ़ते खंडहरनुमा दीवार पर चढ़ गई थी। बाहरी आदमी जिससे लौकी की फुनगी तोड़ न लें इसके लिए राधा बुआ ने आंगन के बीच एक मचान बनाया था। उस बेल में लौकी नहीं फलती थी परन्तु पत्ते उगते थे। पत्तों की भरमार की वजह से आंगन की रोशनी और हवा रुक गई थी और आंगन में गन्दगी रात-दिन जमती जा रही थी। बुआ की करतूत से आंगन में काई जम जाने के कारण चलना-फिरना मुश्किल हो गया था। एक बार पांव फिसल जाने के कारण नेड़ी को तीन महीने तक खाट पर पड़ा रहना पड़ा था। विधाता को जितना क्रोध है वह राधा बुआ की लड़की पर ही है। लड़की शरीर से हट्टी-कट्टी है। हर साल बच्चा पैदा

करती है, देखकर यह कोई कह नहीं सकता है।

यह तो एक परेशानी हुई। उस पर सास की बातें। सास की बातें बात के बजाय जैसे तीर हों। और होते न होते तीर छोड़ना शुरू कर देती है।

"क्या हुआ मां ? क्या हुआ ?"

राधा बुआ ने दामाद को आते देखकर अपनी जबान में तीखापन लाकर कहा, "अभागों की अक्ल तो देखो, अपनी ही आंखों से देख लो। अभागों को और दूसरी जगह नहीं मिली, मेरे मकान के सामने ही जूठन, मछली का कांटा और घोइयां फेंक दी हैं। अब मैं क्या करूं, बेटा ?"

भवदुलाल ने भी देखा। सवा चार फुट की गली है। उसमें अगर जूठन और कांटे पड़े हों तो आदमी जाए तो कैसे !

"आपने छू लिया क्या ?" भवदुलाल ने कहा।

राधा बुआ बोली, "मालूम नहीं, बेटा, छुआ है या नहीं, याद नहीं है। फिर भी मन में जबकि खटका पैदा हो गया तो कपड़ा फींच लेना ही बेहतर रहेगा···"

भवदुलाल ने कहा, "एक बार तो आप नहा चुकी हैं···"

"तो क्या अभी नहायी हूं ? वह तो सवेरे चार बजे ही। चार बजे नहा-धोकर, पूजा-पाठ करके निकल रही थी। अब बताओ तो सही, किस ग्रह के चक्कर में फंस गई !"

"किसने फेंका है ?" भवदुलाल ने पूछा।

राधा बुआ बोली, "और कौन फेंकेगा ? यह सरासर पाकिस्तानियों की करतूत है।"

भवदुलाल समझ गया, 'पाकिस्तानी' का अर्थ हुआ तीसरी मंजिल का किरायेदार हरिपद बाबू। हरिपद चक्रवर्ती।

'सारा दोष मकान-मालिक का है, यह हरामी कहां-कहां से गंवारों को लाकर इस मकान में घुसाता है और परेशानी ढोनी पड़ती है हम लोगों को। मैं तो तुम्हें सैकड़ों बार कह चुकी हूं, भव, कि मकान-मालिक से एक बार जाकर कहो कि भले आदमी के मुहल्ले में पाकिस्तानियों को क्यों बसाये हुए हो ! जिन लोगों को शुद्ध-अशुद्ध का ज्ञान नहीं, उन लोगों के साथ रहने से किसी का जात-धर्म कहीं टिक सकता है ?"

भवदुलाल ने कोई जवाब न दिया। ज्यादा बोलने से तीसरी मंजिल में रहने वालों के कान में बातों की भनक पहुंचेगी और फिर झगड़े की शुरुआत हो जायेगी। और जैसे ही झगड़े की शुरुआत होगी, हो-हल्ला, शोरगुल के चलते कौए और चील तक पास नहीं फटकेंगे।

भवदुलाल जल्दी-जल्दी घर के अन्दर चला आया। उसके बाल-बच्चे उस वक्त भी फर्श पर बिछे बिस्तर पर बेतरतीब ढंग से लेटे थे। इसके बाद झोली लेकर बाज़ार जाना है। उसकी पत्नी उस वक्त लेटी हुई देह मरोड़ रही थी।

भवदुलाल ने कहा, "बाजार जा रहा हूं, वहा से क्या-क्या लाना है ?"

नीरजा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"क्यो जी, तुमने तो कुछ बताया ही नहीं। आज तुम्हारी तबीयत कैसी है ?"

इस पर भी नीरजा चुपचाप पड़ी रही।

"अगर तुम बताओगी नहीं तो मैं समझू कैसे ? मुझे डाक्टर से सब कुछ बताना जो पड़ेगा।"

फिर भी नीरजा चुप की चुप पड़ी रही, अपने बदन को एक बार मरोड़कर बोली, "बाप रे, अब सहा नहीं जाता···"

इसके बाद वह फिर से करवट बदलकर लेट गई। भवदुलाल तब तक कमीज पहन चुका था। इसके बाद मेज की दराज खोलकर उसने मनीबैग को अपनी जेब के हवाले किया। अचानक ऊपर से शंखध्वनि आने लगी। हरि बाबू के घर में शंख बज रहा था। उसकी लड़की की शादी हो रही है। तो उस लड़की की भी आखिर शादी हो ही गई !···

"ओह, तुम यहां आ चुके हो ! ए भव, जाकर देखो तो कौन आया है !"

सिर झुकाए ज्योंही आंगन के पार पहुंचा, दरवाजे पर बगल में छाता दबाए सृष्टिधर को पाया।

"क्यों सृष्टिधर, तुम इस वक्त ?"

सृष्टिधर एक अजीब प्राणी है। उसके चेहरे पर हर क्षण हंसी तैरती रहती है। आज के जमाने में जिनमें क्रोध नाम की चीज़ का अस्तित्व नहीं है, सृष्टिधर वैसे ही विरल प्राणियों में से एक है। बड़ा ही विनयी, बड़ा ही मृदु-भाषी। सीधा-सादा और परोपकारी।

"जी, एक काम से आया हूं।"

"मालूम है, तुम काम के आदमी हो, काम रहे बिना तुम नहीं आते हो।" भवदुलाल ने कहा, "किराया—किराया लेने आए हो? मगर अबकी मैं किराया नहीं चुकाऊंगा, भाई जान, यह तुम्हें कहे देता हूं। पहले तुम्हारे मालिक को इस बात का फैसला करना पड़ेगा तब मैं किराया चुकाऊंगा···"

उंगली से जूठे केले के पत्तों के ढेर की ओर इशारा करती हुई राधा बुआ बोली, "यह देखो, जो प्रत्यक्ष है उसे प्रमाण की क्या जरूरत, तुम अब नकार नहीं सकते हो। देखो, अपनी आंख से देख लो, लोग-बाग ऐसे में कैसे आना-जाना करें···?"

अब जैसे युधिष्ठिर की नजर उधर गई हो।

उसने कहा, "ओह् राम-राम, यह तो केले के जूठे पत्ते पड़े हैं!"

"हां-हां, ठीक से देख लो, सखुए का पत्ता नहीं है, न बांस का और न ही मरवी का—केले के जूठे पत्ते हैं, हां केले के। और अगर तुम्हारी आंखों में चर्बी छा गई हो तो अपने मालिक को बुलाकर दिखा दो···"

भवदुलाल अब तक चुप खड़ा था। बोला, "हां, अभागे मकान-मालिक को लाकर दिखा दो।"

युधिष्ठिर ने कहा, "इतना बिगड़ क्यों रही हैं, बुआजी! मालिक ने तो कहा ही है कि वे किसी दिन आएंगे। हो सकता है कि आज ही आएं।"

भवदुलाल बोला, "आयेगा? तुम्हारा मालिक आ रहा है?"

खुशी में भवदुलाल क्या करे, उसकी समझ में नहीं आया। बोला, "सचमुच युधिष्ठिर, आ रहा है?"

"हां; यही बात तो कहने के लिए मैं आया हूं, मेहमान जी! बुधवार को मालिक की चिट्ठी मिली है। लिखा है: आज तीसरे पहर कलकत्ता आ रहा हूं।"

फिर भी भवदुलाल को जैसे उसकी बातों पर विश्वास न हुआ हो। खुशी के मारे भवदुलाल की आंखें अधमुंदी-सी हो गयीं। चालीस सालों से पत्रावार कर रहा है, लेकिन आज तक इस मकान के मालिक ईश्वरप्रसाद ढनढनियां का चेहरा किसी ने देखा नहीं है।

राधा बुआ लेकिन दुनियादारी में पटु है—अपने दामाद भवदुलाल से भी

अधिक पटु। इतने दिनों से दामाद की गृहस्थी में आकर वास कर रही है। कितनी ही बार रसोईघर की मरम्मत कराने को कहा है, कितनी ही बार आगन की काई से फिसलकर मरते-मरते बची है, कितनी ही बार दोमंजिले के बरामदे की दरकी छत से बिस्तर पर गदा पानी गिर चुका है, कितनी ही बार पाखाने की सीढ़ी पर फिसल जाने के कारण टांग मुरक चुकी है, कितनी ही बार सृष्टिधर को भला-बुरा सुना चुकी है। सृष्टिधर से जब-जब कहा है, उसने बताया है कि अबकी मालिक आ रहे है।

लेकिन मालिक कभी नही आया।

यहां तक कि इस मकान के किरायेदारों ने ईश्वरप्रसाद ढनढनिया का चेहरा तक नही देखा है, हालांकि वे ठीक वक्त पर किराया देते आए हैं। सृष्टिधर वक्त पर ही रसीद लेकर हाज़िर हो जाता है। रसीद पर दस्तखत बना रहता है।

किरायेदार पूछते, "क्यों जी सृष्टिधर, तुम्हारे मालिक तो खूब आए ?"

सृष्टिधर हमेशा यही कहता, "मालिक आयेंगे। मालिक बहुत सारे कामों मे फंसे रहते हैं। मालिक कितना काम करें, बाबूजी ! अकेले आदमी ठहरे। अबकी मालिक बहुत झंझट मे फंस गए हैं, कभी मद्रास जा रहे हैं तो कभी दिल्ली और कभी बंबई···"

ये बातें कोई नयी नही हैं। इस मकान के तीनों मंजिल के किरायेदार ये बातें हमेशा से सुनते आ रहे हैं। इन बातों से राधा बुआ को भुलाया नही जा सकता है।

राधा बुआ बोली, "मानती हूं, मकान-मालिक जहन्नुम चला गया, मगर तुम किसलिए हो ? तुम अपनी आंखों से यह सब अनर्थ नही देख रहे हो ? मैं भीगे कपडे से दुबारा नहाऊं और मरूं ? बेशक यह पाकिस्तानियों की ही करतूत है— तीनमंजिले के पाकिस्तानियों की···"

सृष्टिधर ने कहा, "आहिस्ता से बोलिए, बुआजी, उन लोगों के कान में भनक पहुंचेगी। उनके घर में आज शादी है।"

"क्या कहा ? आहिस्ता से बोलूं ? क्यों ? तुम्हारे घर में किरायेदार हूं तो इसका मतलब यह नही कि मैंने चोरी की है। मैं क्या तुम्हारे मालिक का दिया खाती हूं ? मैं तो अपने दामाद की बात तक नहीं मानती हूं। दामाद

सामने ही खड़ा है, पूछकर देख लो न ! मैं अगर उचित बात कहूं तो इसमें किसी से डरने की क्या बात है ? दूसरों के घर में लड़की की शादी नहीं होती है ? वह शादी है या निकाह—यह क्या मुझे मालूम नहीं ?"

युधिष्ठिर भारी मुसीबत में फंस गया।

"अजी ओ युधिष्ठिर, युधिष्ठिर !"

ऊपर से पता नहीं, किसने पुकारा। युधिष्ठिर को मालूम है कि किस मंजिल में कौन उसे पुकार रहा है। युधिष्ठिर जल्दी-जल्दी जाने की कोशिश कर रहा था। "चलूं, बुआजी !" उसने कहा, "ऊपर से कोई बुला रहा है चलूं…"

"जाने का मतलब ? तुम जा नहीं सकते। पहले इसका फैसला कर दो, फिर जाना। पहले बता जाओ कि इन जूठे पत्तों को कौन फेंकेगा ? यह तो कोई अच्छी बात नहीं है। हम लोग भी तो किराया देते हैं ! कोई मुफ्त में नहीं रहते हैं।"

"अब किराया मत देना, भव," राधा बुआ बोली, "देखना है कि हरामजादा मकान-मालिक हमारा क्या कर लेता है !"

युधिष्ठिर ने कहा, "बुआजी, मैं तो कह ही रहा हूं कि आज मालिक आ रहे हैं। वे आकर हरेक की बात सुनेंगे। आपकी छत से पानी गिरता है, यह देखेंगे; आंगन में एक नाली बनवा देंगे, जो-जो करने का है, सब करा देंगे।"

"मालिक की बातें बाद में होंगी। पहले यह तो बताओ, इन जूठे पत्तों का क्या होगा ?"

युधिष्ठिर ने कहा, "यही बात कहने तो ऊपर जा रहा हूं, बुआजी !"

"तुम पर यकीन नहीं किया जा सकता है, भैया," राधा बुआ बोली, "तुम जाओगे तो लौटकर नहीं आओगे। मैं तुम्हारी नस-नस पहचानती हूं। तुम्हें अभी फैसला करके ही जाना है…"

अचानक एक छोटी-सी लड़की दौड़ती हुई वहां आई।

"ए युधिष्ठिर, जरा ऊपर चलो, बाबूजी तुम्हें बुला रहे हैं।"

"चलता हूं, बिटिया !" इतना कहकर युधिष्ठिर जब चुपचाप जाने लगा, राधा बुआ ने आगे बढ़कर रास्ता रोक लिया। बोली, "जा तो रहे हो, मगर जवाब देते जाओ।"

युधिष्ठिर को जब कोई जवाब न सूझा तो छोटी लड़की से ही साफ-साफ

पूछा, "मुन्नी, तुम लोगों ने जूठे पत्ते नीचे क्यों फेंक दिए हैं ? सामने सड़क पर कूड़ादान का टीन है, वहां नहीं फेंक सकती हो ?"

उस छोटी लडकी के छोटे होने से क्या होगा ! बोली, "हम लोगों ने फेंका है, यह तुमसे किसने कहा ?"

राधा बुआ तैयार थी ही। बोली, "तुम लोगों ने नही फेंका है तो क्या भूत-प्रेत फेंकने आए ? अब हम लोग भी तुम्हारे घर में पाखाना फेंकेंगे, तब पता चलेगा।"

"ए सृष्टिधर, सृष्टिधर···"

छोटी लडकी ने अब ऊपर की ओर मुंह किए चिल्लाते हुए कहा, "देखिए न बाबूजी, सृष्टिधर आना नही चाहता है।"

भवदुलाल ने कहा, "आप चली आयें, मा ! मैं मेहतर बुलाकर साफ करा लूगा। उन लोगों से बेकार मे झगडा करने से कोई फायदा नहीं है। आइए, चली आइए · "

अचानक अन्दर से नीरजा की कराह सुनाई पड़ी, "मां, ओ मां···"

"बाप रे, यह तो नेड़ी की आवाज है !" इतना कहकर ज्योंही वह अन्दर गयी, अवाक् रह गई। फिर चिल्लाकर पुकारा, "ए भव, सर्वनाश हो गया ! जल्दी आओ, जल्दी···ए भव···"

भवदुलाल अब नही रुका। एक ही दौड में आगन के अन्दर आया और वहा का दृश्य देखते ही हतप्रभ हो उठा। देखा, नीरजा काई-भरे आगन मे गिर-कर कराह रही है। उसका एक पैर नल की ओर है और सिर बरामदे की ओर। जूड़ा खुलकर छितर गया है।

तभी राधा बुआ ने नेड़ी के चेहरे की ओर झुककर पूछा, "ओ नेड़ी, नेड़ी, क्या हुआ बिटिया ? कैसे गिर पड़ी ? मैंने उस दिन भव से कहा था, गर्भवती औरत है, किसी भी दिन लहू-लुहान हो सकती है। अब हो गई न ! नेड़ी, बेटी नेड़ी···"

उसके बाद भवदुलाल की ओर ताकती हुई बोली, "खड़े-खडे क्या देख रहे हो, बेटा ? अंबिका डाक्टर को बुला लाओ ! पता नही, कौन-सा सर्वनाश हो गया।"

भवदुलाल अब खडा नही रहा, तहमद पहने ही डाक्टर के घर की ओर

दौड़ पड़ा। घर से निकलकर रास्ते पर आते ही देखा, एक ठेले पर भरपूर बांस लदा है। साथ में साज-सज्जा करने वाले आदमी हैं।

देखकर भवदुलाल बगल से जा रहा था, मगर जा नहीं सका।

तीसरी मंजिल का हरिपद चक्रवर्ती हंसता हुआ भवदुलाल की तरफ आया। हरिपद चक्रवर्ती सबके सामने हंसने वाला व्यक्ति नहीं है। जो हंसता नहीं है, उसे देखकर डरने की बात ही है! हरिपद चक्रवर्ती को हंसते हुए देखकर भवदुलाल सहम गया।

"आज जया की शादी है। आज शाम।"

और उसने भवदुलाल की तरफ एक निमंत्रण पत्र बढ़ा दिया।

"जरूर आइएगा। मेरा सगा-संबंधी कोई नहीं है, आप ही लोगों पर मुझे भरोसा है।"

भवदुलाल की समझ में न आया कि क्या कहे।

हरिपद चक्रवर्ती ने फिर कहना शुरू किया, "बहुत ही जल्दी शादी तय हो गई, साहब, यही वजह है कि पहले सूचना नहीं दे सका। दामाद मन के लायक मिल गया है, इसके अलावा लड़की तो अभी-अभी सत्रह साल की हुई है। आप लोग खड़े होकर शादी करा दें। आपको मालूम ही है कि मैं अकेला आदमी ठहरा, मेरा अपना कोई नहीं है।"

बात सुनते-सुनते भवदुलाल के मन में हुआ कि हरिपद चक्रवर्ती के गाल पर तड़ाक् से एक थप्पड़ जमा दे। यह कोई शादी है भला! न तो किसीने ऐसी दुलहन देखी है और न ऐसा दुलहा ही। भयंकर साजिश है!

उस लड़के की बात ही भवदुलाल को बार-बार याद आने लगी। लड़के ने रोते-रोते कहा था, 'मेरी कोई गलती नहीं है, सर! मैं गरीब आदमी हूं, मेरे पिताजी कैंसर के मरीज हैं, मेरी बहन पोलियो की शिकार है। आप लोग मुझे छोड़ दें। मुझे क्षमा कर दें। मैं इस मुहल्ले में फिर कभी पैर नहीं रखूंगा...'

"अच्छा, तो फिर चलू, भवदुलाल बाबू..."

हरिपद चक्रवर्ती चला गया। भवदुलाल की आंखें एक बार उस तरफ गईं। इस आदमी की तकदीर अच्छी है! वैसी लड़की की भी अन्ततः शादी हो गई। चाहे शादी वैसे भी हो, लेकिन उसकी मांग में वह सिंदूर भरेगा तो। हो सकता है, बनारसी साड़ी भी पहनाए, हो सकता है शंख भी बजाए; दृष्टि-

विनिमय होगा, कोहबर सजाया जाएगा। हो सकता है सब कुछ वैसे ही हो, जैसा कि हर विवाह-शादी के मौके पर होता है। किसी चीज को छोड़ा नही जाएगा···

ईश्वरप्रसाद ढनढनियां की कुल संपत्ति यह मकान ही नहीं है। इस मकान के किरायेदारो के लिए ईश्वरप्रसाद ढनढनिया को चिन्ता नही है। ईश्वरप्रसाद के और भी बहुत-से मकान है, और भी जायदाद है। कोई कहता है, ईश्वर-प्रसाद करोड़पति है और कोई कहता है अरबपति—मल्टी-मिलिनायर। दर-असल ईश्वरप्रसाद कौन है, किसी किरायेदार ने उसे नही देखा है। वह कभी दिल्ली में रहता है, कभी मद्रास मे और कभी बंबई में। फिर कभी लंदन, पेरिस और न्यूयार्क मे। समूची दुनिया मे उसका कारोबार फैला है। अकेले तमाम कारबार की देखभाल नही कर पाता है इसलिए उसने आदमी और दलाल रखे हैं। सृष्टिधर उसी कोटि का एक व्यक्ति है। कालीघाट के इस मकान की देखरेख और किराये की वसूली के लिए ही सृष्टिधर उस किस्म का एक दलाल है।

सृष्टिधर कहता, "मुझसे क्यों कह रही है, बुआजी, मैं तो नौकर ठहरा, मालिक आयेंगे तो उन्ही से कहिएगा···"

राधा बुआ भी उसी किस्म की है। वह कहती, "तुम्हारे मालिक के चेहरे पर झाड़ू मारूं ! तुम्हारे मालिक के हाथो में बेशुमार काम हैं तो इससे हमें क्या ? हम लोग कितने सुख से रह रहे हैं, यह क्या तुम्हारा मालिक एक बार आकर देख नही सकता ?"

भवदुलाल कहता, "अरे भैया, हम आज है, कल नही रहेंगे, तुम्हारे मालिक का मकान उसी का रहेगा, हम लोग उसकी जायदाद मे हिस्सा बंटाने तो नही जा रहे है !"

परन्तु सृष्टिधर किसी की बात से गुस्से में नही आता है। वह निरासक्त की तरह हंस देता है। कहां किसके रसोईघर की चाल से अन्दर पानी टपकता है, किसके आगन मे काई जम गई है, किसकी दीवार से रेत झड़ गई है, किसके नल मे पानी नही आ रहा है, किसकी नाली मे कूड़ा-कचरा जम गया है—

सब कुछ सृष्टिधर ध्यान से देखता है। सभी को सांत्वना देता रहता है। कहता है, "अहा-हा ! सचमुच आप लोगों को बड़ी ही तकलीफ़ होती है···"

हरिपद चक्रवर्ती तीसरी मंजिल का किरायेदार है। पाकिस्तान बनने के बहुत पहले से ही इस मकान में है। लगभग तीन पुरखों से इस मकान में रहता आया है। लेकिन पाकिस्तान बन जाने के बाद से ही राधा बुआ वगैरह ने उसके साथ एक विशेषण लगा दिया है। दोष में दोष इतना ही है कि वे लोग बारिशाल के आदि-बाशिन्दे हैं।

सृष्टिधर कहता था, "ठहरिए, अबकी मालिक आ जायें तो उन्हें एक बार यहां ले आऊंगा। आप लोगों में से जिनको जो कुछ कहना है, कहिएगा।"

हरिपद चक्रवर्ती कहता था, "तुम्हारे मालिक यहां क्यों आयेंगे, सृष्टिधर ? वे ठहरे बड़े आदमी—करोड़पति ! वे भला गरीबों का दुख क्यों समझेंगे ?"

"नहीं-नहीं; क्या कह रहे हैं आप ! मेरे मालिक बड़े ही सीधे-सादे हैं। दया का अवतार समझिए। कितना ही दान-धान करते रहते हैं।"

हरिपद चक्रवर्ती कहता था, "सो दया के अवतार रहे ! हम लोगों का दुःख कोई नहीं समझेगा, सृष्टिधर ! हमें सिर्फ तुम्हीं पर भरोसा है।"

सृष्टिधर कहता था, "नहीं-नहीं; अबकी देखिएगा, मालिक को जबरन यहां ले आऊंगा।"

इसी तरह सृष्टिधर हर बार सभी को भरोसा दिया करता था। परंतु मालिक कभी नहीं आया। आने का उसे वक्त नहीं मिला। अंततः पहली मंजिल में भपटुलाल ने एक बार खुद कारीगर बुलाकर रसोईघर की चाल की मरम्मत करा ली थी, आंगन में जमी काई ब्लीचिंग पाउडर से साफ करा ली थी और ऊपर से गिराये हुए केले के पत्तों को मेहतर बुलाकर राखदान में डलवा दिया था। अन्ततः तीसरी मंजिल के हरिपद चक्रवर्ती ने भी राज-मिस्त्री की खुशामद-बरामद कर दीवार में बालू का पलस्तर करा लिया था, नल के कारीगर को बुलाकर नल ठीक करा लिया था और मेहतर बुलाकर नाली के कूड़े-कचरे को कूड़ेदान में फेंकवाने का इन्तजाम किया था।

"मां, सृष्टिधर को बुला लाई हूं।"

"अरी ओ सृष्टिधर, तुम्हारे कारनामे भी अजीब हैं !"

वह मकान रास्ते पर सिर ऊंचा किये खड़ा है। मकान की बाहरी दीवार

में हो सकता है किसी जमाने में पलस्तर हो, मगर अब उसका निशान तक नहीं है। छत के कंगूरे पर पीपल के कई पौधों की जड़ें अड्डा जमाए हुए है। सीढ़ी की रेलिंग टूटी हुई है। संभल-संभलकर ऊपर जाना पड़ता है। जरा-सा भी असावधान रहे तो आदमी एकबारगी पहली मंजिल के पाखाने की छत पर जा गिरे। हरिपद बाबू बहुत दिनों से सृष्टिधर को कह रहे हैं। दूसरी मंजिल के हिमांशु बाबू ने भी कहा है। हिमांशु बाबू बूढ़े आदमी हैं। वह कहते, 'मैं ब्लड-प्रेशर का मरीज हूं, सृष्टिधर, किसी दिन हड्डियां टूट जायेंगी और पाखाने की छत पर मरी हुई हालत में पाया जाऊंगा। अपने मालिक से कहकर कोई रास्ता निकालो, सृष्टिधर!'

सृष्टिधर कहता, 'और कुछ दिनों के लिए धीरज रखें, मौसाजी, मालिक सब ठीक-ठाक करा देंगे।'

हिमांशु बाबू कहते, 'अब कब ठीक कराएगा, सृष्टिधर? मेरे मरने के बाद ठीक कराएगा?'

सृष्टिधर आश्चर्य में आकर कहता, 'छिः छिः, आप क्या कह रहे हैं, मौसाजी! इस तरह की मनहूस बातें कान से सुनने से भी पाप होता है।'

इतना कहकर वह उंगलियों से अपने कानों के सूराखों को बंद कर लेता था। उसके बाद उंगलियों को हटाकर कहता, 'आप जैसे आदमी जब तक धरती पर है, तभी तक हम लोगों की भलाई है, मौसाजी! आप लोगों के जाते ही सब कुछ अंधेरे में बदल जाएगा, तब हम लोगों के लिए जीना एक समस्या हो जाएगा।'

सृष्टिधर की बातें बड़ी मीठी हुआ करती हैं। दुनिया में जो भी सृष्टिधर से बातचीत करेगा, उसकी बात सुनकर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। लेकिन बस इतना ही! बात बनाने में सृष्टिधर को कोई पछाड़ नहीं सकता। ईश्वर-प्रसाद ढनढनियां इतने दिनों से इस मकान का जो मालिक बनकर बैठा हुआ है, इसका श्रेय सृष्टिधर को ही है।

जीना चढ़ते-चढ़ते बीच रास्ते में ही सृष्टिधर ने कहा, "मौसीजी, मैं आपकी सेवा में हाजिर हूं।"

हिमांशु बाबू ने कहा था, 'मैं बूढ़ा आदमी हूं, ज्यादा दिनों तक नहीं टिकूंगा। मकान के हकदार तुम्हीं लोग रहोगे। सस्ता मकान मिल जायेगा तो मैं चला जाऊंगा। फिर तुम मकान की मरम्मत क्यों नहीं करा रहे हो?'

सृष्टिधर ने कहा था, 'मरम्मत कराऊंगा, मौसाजी! अबकी मरम्मत

कराऊंगा। मालिक ज्यों ही आयेंगे, उन्हें यहां ले आऊंगा। मालिक को अपनी आंखों से सब दिखाऊंगा।'

'तुम दिखाने लगे और तुम्हारे मालिक ही यहां आने लगे...'

मौसीजी रसोईघर से बाहर निकलीं और अपने सामने युधिष्ठिर को पाते ही क्रोध से भभक उठीं।

बोली, "कब से तुम्हें पुकार रही हूं! अब तक तुम नीचे क्या कर रहे थे? किस-किस से बातचीत कर रहे थे? लगता है जैसे वे लोग हमसे ज्यादा किराया देते हैं। उन लोगों को तुम निकालकर बाहर क्यों नहीं करते? तीस रुपया किराया देंगे और आंख दिखाएंगे! तुम लोग इसी के लायक हो। हम लोग क्योंकि हर महीने पहली तारीख को ही किराया चुका देते हैं, इसलिए तुम यहां थूक तक फेंकने नहीं आते हो···"

युधिष्ठिर विनम्रता से झुककर गद्‌गद स्वर में बोला, "बेटे पर इतना गुस्सा क्यों कर रही हैं, मौसीजी! मैं तो मौसाजी को देखने ही आ रहा था। सुनने में आया है कि उन्हें फिर से दिल का दौरा पड़ गया है।"

मौसीजी बोली, "अपनी चिकनी-चुपड़ी बातें छोड़ो, युधिष्ठिर। मैं तुम्हें राई-रत्ती पहचानती हूं। राधा बुआ से मिलकर अभी तुम किसे कोस रहे थे? किसकी धज्जियां उड़ा रहे थे? सोचते हो, मैं ऊपर से कुछ सुन ही नहीं पाती हूं? मैं बहरी हूं? फिर से कहे देती हूं, अगर किसी दिन हमारे नाम से चुगली करोगे तो बूढ़े दांत का जबड़ा फेंकवा दूंगी।"

युधिष्ठिर ने कहा, "आप लोगों के बारे में कहां कोई बातचीत हो रही थी!"

"झूठी बात मत बोलो, युधिष्ठिर," मौसीजी ने कहा, "तुम्हारी जीभ गल जाएगी।"

"सच कह रहा हूं, मौसीजी, आपके बारे में कोई बात नहीं हो रही थी।"

'फिर झूठ बोलते हो? तो क्या मैंने 'कान' के बदले 'धान' सुना?"

उसके बाद कमरे के सामने जाकर पुकारा, "अजी ओ, सुनते हो, युधिष्ठिर क्या कहता है, सुनो! मैंने अपने कानों से सुना कि राधा बुआ हमारी निंदा कर रही है और युधिष्ठिर कहता है कि नहीं···"

हिमांशु बाबू बोले, "युधिष्ठिर कहां है? उसे यहां बुलाओ, बुलाओ तो···"

मौसीजी ने बाहर आकर पुकारा, "कहां हो जी, युधिष्ठिर, अन्दर आओ,

मालिक तुम्हे बुला रहे है।"

सृष्टिधर ने कहा, "मौसाजी को आप तंग करने क्यों गईं? अभी वे बीमार हैं।"

अन्दर से बुलाहट आई, "कहां हो भाई, सृष्टिधर?"

"आया मौसाजी, आज आप कैसे है?"

हिमाशु बाबू लेटे हुए थे। जल्दी-जल्दी उठकर बैठ गये। बोले, "तुम्हारे मालिक के अत्याचार से मैं कही चंगा रह सकता हूं? आलतू-फालतू बातें छोड़ो। नीचे का किरायेदार अब तक हमारे खिलाफ क्या-क्या कह रहा था? हम लोगों ने उनके सिर पर गंदगी फेंकी है? हमें कोई दूसरा आदमी नही मिला कि चुन-चुनकर उनके सिर पर गदगी फेंकी? गदगी फेंकने के लिए हमने पाच रुपये तनख्वाह पर मेहतर रखा है, मालूम है?"

मौसीजी सामने ही खडी थी। बोली, "मैं तो तुमसे कहती ही आई हूं कि सृष्टिधर को जैसा तुम सोचते हो, वैसा नहीं है। नवरी शैतान है। तुम्ही कहा करते थे, 'ऐसी बात नही है, सृष्टिधर भला आदमी है, उसका मालिक ही बुरा है। सृष्टिधर करे तो क्या करे!' अब लो, समझो।"

सृष्टिधर ने कहा, "नही मौसीजी, काली माता की सौगन्ध खाकर कहता हूं, मैंने कुछ भी नही कहा है।"

"फिर तुम्हारी मौसीजी बना-बनाकर कह रही है?"

बगल के कमरे मे उस समय विजय बिस्तर पर नीद की बांहों में खोया था। नयी शादी करने के बाद से विजय देर से सोकर उठता है। पत्नी नलघर में थी।

अचानक बगल के कमरे मे बहस-मुबाहिसा होते देखकर दौडता हुआ वह इस कमरे के अन्दर आया। बोला, "बाबूजी, आप फिर चिल्ला रहे हैं?"

हिमाशु बाबू ने कहा, "चिल्लाऊंगा नही तो क्या मुंह सीकर रहूं? मुहल्ले के आदमी आकर गाली दे जायें और मैं बूढा आदमी खामोश पडा रहूं? तुम लोगों का ध्यान तो कही है नही, सिर्फ अड्डेबाजी करते हो और खेल देखते रहते हो..."

विजय ने सृष्टिधर की ओर देखते हुए कहा, "देख रहे हो न, बाबूजी बीमार हैं। ऐसे वक्त में कोई किराया मांगने आता है?"

सृष्टिधर ने कहा, "हुजूर, मैं किराया मागने नही आया हूं। मौसीजी ने

बुला भेजा, इसीलिए···"

"पहले तुम कमरे से बाहर जाओ। बाहर···"

माँ बोली, "तुम उसे बाहर क्यों निकाल रहे हो ? मैं उसे फैसला करने के लिए बुला लाई और तुम···"

तब विजय ने युधिष्ठिर को ठेलना शुरू कर दिया था। "तुम पहले कमरे के बाहर जाओ, कमरे के बाहर से बात करो।"

"उसे बाहर निकाल देने से क्या फायदा होगा ?" हिमांशु बाबू बोले, "तुम लोगों के अत्याचार से, लगता है, शांति से मरना भी मुश्किल है।···अजी ओ, जरा पानी दो तो···"

हिमांशु बाबू बिस्तर पर बैठे-बैठे हाँफने लगे।

परंतु उस क्षण हिमांशु बाबू की बातचीत किसी के कान में नहीं पहुँची। उधर विजय जितनी तीखी आवाज में चिल्ला रहा था, मौसीजी भी उतनी ही तीखी आवाज में चिल्ला रही थी।

विजय ने कहा, "इतने दिनों से हम कुछ नहीं कहते हैं, इसीलिए न ! उन लोगों के घर की बिल्ली हमारे रसोईघर में घुसकर मछली खा जाती है। हमने इसके लिए कुछ कहा है ? और तुम यह जो कहते हो कि हमने उनके सिर पर गंदगी फेंकी है, सो गंदगी पर क्या हमारा नाम लिखा है, जो कहेंगी कि हमने ही फेंकी है ? इस मकान में सिर्फ हमी लोग रहते हैं ? तीसरी मंजिल पर आदमी नहीं रहते ? वे गंदगी फेंकना नहीं जानते हैं या उनके मकान में गंदगी जमा नहीं होती है···?"

माँ ने भी लड़के की बात पर हामी भरी। बोली, "हमने फिर भी काफी इनके लिहाज़ पर मेहनत रखा है। तीसरी मंजिल के वालों ने हम लोगों की तरह मेहनत रखा है ?"

हिमांशु बाबू फिर से चिल्ला पड़े, "अजी ओ, सुनती हो···मेरी छाती कैंची-कैंची सी कर रही है···"

नयी बहू का नहाना-धोना खत्म हो चुका था। गुसलखाने के दरवाजे टूटे हुए हैं। नाली बेकार है। बहुत दिन पहले के बने हैं। पता नहीं, कौन-सी लकड़ी है ! हो सकता है कि ईश्वरप्रसाद हलवाई को भी मालूम न हो। दीमक लग

जाने के कारण बहुत दिनों से नाकाम हो गए हैं। उसी हालत में हमेशा आबरू बचायी जा रही है। परंतु विजय की शादी के बाद कुछ इन्तजाम किया गया। नलघर में जाने के बाद नयी बहू के ध्यान में एकाएक आया कि अन्दर जाने से किसी की भी इज्जत सुरक्षित नहीं रह सकती है।

नयी बहू ने कहा था, "तुम लोगों का बायरूम कैसा है जी! मैं वहां नहाने नहीं जाऊंगी।"

"अब ज्यादा दिन इस मकान में रहना नहीं है। बालीगंज मुहल्ले में एक नया फ्लैट लूंगा।" विजय ने कहा था।

सो जब होगा, तब होगा। इसके पहले तो काम चलना चाहिए। मगर दरवाजों की कौन मरम्मत करायेगा? बढई कहां मिलेगा? विजय ने एक दिन सृष्टिधर को पकडा था, "हमारे बाथरूम के दरवाजे टूट गए हैं, मरम्मत नहीं करा दोगे?"

सृष्टिधर ने कहा था, "करा दूंगा भैया, किसी दिन बढई बुलाकर ठीक करा दूंगा। तीसरी मंजिल का आंगन टूट गया है, सीमेंट मंगाकर उसे ठीक करा दूंगा। उन लोगों के रसोईघर की टाली टूट गई है और पानी चूता है, उसे भी ठीक करा दूंगा। फिर आपके बाथरूम के दरवाजे और ऊपर की रेलिंग..."

सृष्टिधर की मरम्मत कराने वाली चीजों की सूची खासी लंबी है: दीवार का पलस्तर, कमरे का फर्श, आंगन की सीढ़ी, रसोईघर की छत, रेलिंग तथा और भी बहुत कुछ। उसका हिसाब उसे जबानी याद है। लेकिन मरम्मत कौन कराएगा?—किरायेदार या मकान-मालिक?

सृष्टिधर कहता, "मेरे मालिक ही सब करा देंगे, हुजूर! आप लोग चुपचाप बैठकर देखें कि मालिक क्या-क्या कराते हैं। अबकी मालिक आएंगे तो सब ठीक करा देंगे।"

फिर भी चालीस-पचास साल से सिर्फ नाम का ही उल्लेख होता रहा है और मरम्मत नहीं हो रही है। दीवार का पलस्तर, रसोईघर की छत, कमरे का फर्श, आंगन की सीढ़ी, जीने की रेलिंग, बाथरूम के दरवाजे—सभी चीजें जैसी पहले थी अब भी वैसी ही हैं। चालीस-पचास सालों से मरम्मत न होने की वजह से और भी पुरानी होती जा रही हैं, और भी टूट-फूट रही हैं, और भी अधिक जर्जर होती जा रही हैं।

अंत में झल्लाकर विजय एक दिन बाज़ार से टीन का एक टुकड़ा खरीदकर ले आया, साथ-साथ कांटियां भी।

उस क्षण उसका चेहरा बिलकुल उतरा हुआ था।

"इस पट्ठे मकान-मालिक से कुछ भी नहीं होगा। खुद अपना हाथ लगाना होगा।"

और वह हथौड़े से टीन के टुकड़े को सपाट करने लगा। हथौड़े की चोट से ठन-ठन आवाज़ होने लगी। पहली मंज़िल के भवदुलाल से लेकर तीसरी मंज़िल के हरिपद चक्रवर्ती तक दौड़े-दौड़े आये।

"क्या हो रहा है? इतनी आवाज़ किस चीज़ की हो रही है, सरकार साहब?"

विजय तब भी हथौड़े से चोट किए जा रहा था।

रसोईघर के अन्दर से मां दौड़ी-दौड़ी आई और बोली, "अरे विजय, तीसरी मंज़िल का बांगाल धमकियां दे रहा है।"

विजय बोला, "धमकियां देने दो। अपने घर में मैं दरवाज़े की मरम्मत कर रहा हूं, इसमें किसी को दखल देने की क्या ज़रूरत?"

"वे लोग दरवाज़े के सामने आकर खड़े हैं और तुम्हें बुला रहे हैं।" मां ने कहा।

"बुलाने दो।" विजय ने कहा, "मैं क्या उन लोगों का नौकर हूं?"

तब भवदुलाल बाहर से पुकार रहा था, "अरे भाई, अन्दर कौन है? कौन आवाज़ कर रहा है?"

विजय अब खुद को रोक नहीं सका। हाथ में हथौड़ा थामे सीधे सदर दरवाज़े के पास चला आया।

"कौन?"

"मैं पहली मंज़िल में रहता हूं, ऊपर इतनी आवाज़ क्यों कर रहे हैं? मेरे घर में मेरी पत्नी का एडवांस स्टेज चल रहा है…"

तीसरी मंज़िल के हरिपदबाबू बोले, "धड़ाम-धड़ाम आवाज़ करने से लोगों को क्या असुविधा नहीं हो रही है? बंद कीजिए, अब आवाज़ करना बंद कीजिए।"

"आवाज़ नहीं करूं, इसके मानी? आपके हुक्म से?"

हरिपद चक्रवर्ती जवानी के दिनों में धुरंधर दुस्साहसी थे। किसी ज़माने में

वारिशाल में लाठी-छुरा चलाया करते थे। उनका शरीर भी गटा हुआ है। उन्होंने कहा, "आपके बाबूजी कहां है—हिमांशु बाबू ?"

"बाबूजी चाहे कही रहें। मैं आवाज करूंगा, मेरी मर्जी, आप लोग रोकने वाले कौन होते हैं ?"

एक युवक के मुह से ऐसी बातें सुनते ही भवदुलाल का तेवर चढ गया। यही कुछ दिन पहले उसने इस युवक को हाफपैंट पहनकर स्कूल जाते देखा है और इसी बीच अब यह 'योग्य' हो गया !

"तुम हिमाशु बाबू के लडके हो न ? तुम्हारा नाम विजय है न ?"

विजय ने कहा, "देखिए, 'विजय-विजय' मत कीजिए। आप लोगों को आगाह किये देता हूं। जो कहना है झटपट कहिए और रास्ता नापिए।"

हरिपद चक्रवर्ती ने भवदुलाल के चेहरे की ओर देखा। उसके बाद बोले, "देखा न जनाब, आजकल के लडके कितने इपर्टिनेंट हो गए है। मेरा लड़का होता तो मैं दिखा देता···"

बात समाप्त होने के पहले ही विजय बरस पडा, "चुप रहिए, 'इंपर्टिनेंट' शब्द जबान पर मत लाइए। हम भी अंग्रेजी जानते हैं। इस मकान मे सबके सब हैगर्ड किरायेदार आकर जम गए हैं। जाइए, अपनी लडकी को जाकर संभालिए···"

भवदुलाल ने शान्त स्वर में कहा, "उन्होने कोई अनुचित तो नही कहा है, भैया ?"

मगर विजय के बोलने के पहले ही हरिपद बाबू ने कहा, "क्या कहा ?··· मेरी लडकी के बारे मे क्या कहा ?"

विजय के हाथ में उस वक्त भी हथौड़ा था। सीना तानकर बोला, "हां, आपकी लड़की की ही बाबत कह रहा था। इतनी बडी बेहया लडकी आपने अपने घर में रख छोड़ी है। शादी करा नही पाते है तो घर से क्यों निकलने देते हैं ? घर मे रोककर रख नही पाते ?"

हरिपद बाबू क्रोध से कांपने लगे।

"अरे छोकरे, तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मेरी जयन्ती पर कलंक लगाओ ?"

विजय बोला, "जो देखा है, कह दिया। हम लोग कोई अंधे नही हैं।"

"खबरदार ! हमारी जयन्ती के बारे में अब अगर कुछ बोले कि···"

बातचीत के दौरान ही विजय हथौड़ा लिए एक पग आगे बढ़ आया।

"मैं कहूं तो दोष," उसने कहा, "मुहल्ले के लोगों की जबान आप बन्द कर सकते हैं ? ये लोग तो ढिंढोरा पीट रहे हैं।"

"फिर जबान खोल रहे हो ? फिर ?"

"कहूंगा तो क्या कर लीजिएगा ?" विजय ने कहा, "मारिएगा ? मारकर देखिए न। देखूं, आपके बदन में कितनी ताकत है !"

इतना कहकर विजय ने हथौड़े को ऊपर की ओर उठाया और सामने की ओर बढ़ आया।

लेकिन तभी मां सिर पर घूंघट डाले आगे बढ़ आई। लड़के को कसकर पकड़ा और बोली, "बेटा, तुम नीच आदमी से झगड़ा क्यों करते हो ?"

विजय तब मां के हाथ से छुटकारा पाने की कोशिश कर रहा था। उसने कहा, "छोड़ो, मुझे छोड़ दो, मेरे घर पर आकर ये लोग मुझे बेइज्जत करेंगे और मैं मुंह सीकर पड़ा रहूं ? छोड़ो..."

मां ने बेटे को नहीं छोड़ा। बोली, "किसकी लड़की, किसके लड़के के साथ सैर-सपाटा करती है, किसके साथ रात गुजारती है—इसके लिए तुम्हें फिक्र क्यों ? तुम उसके कौन होते हो ? समझेगी लड़की और समझेगा उसका बाप। तुम नाहक ही सरदर्द मोल क्यों लेते हो ?"

विजय ने कहा, "फिर मुहल्ले के लड़के मुझसे कहने क्यों आते हैं ? चूंकि हम एक ही मकान के किरायेदार हैं इसीलिए कहते हैं न ! यही वजह है कि मैं तुमसे कहा करता हूं कि इस मकान को छोड़ दो और चलकर भले आदमियों के मुहल्ले में मकान किराये पर लेकर रहो।"

"तो चलो," मां बोली, "मैं जाने से तुम्हें मना करती हूं ? या कि यह कहती हूं कि इस घर में बड़ा ही सुख मिल रहा है ? चलो, नाहक दिमाग मत खराब करो। चलो..."

इतना कहकर मां अपने लड़के को खींचती हुई अन्दर ले गई, फिर सदानन्द और हरिपद चक्रवर्ती के सामने ही धड़ाम से दरवाजे बन्द कर सिटकनी चढ़ा दी।

"देखा न हिमांशु बाबू के लड़के की करतूत !"

हरिपद चक्रवर्ती ने भी सदानन्द बाबू के चेहरे पर आंखें टिका दीं। सद-

दुलाल ने कहा, "आप लोग क्योंकि प्रोटेस्ट नही करते हैं इसीलिए इन लोगों का दिमाग सातवें आसमान पर चढ गया है।"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "यह सब असल में मकान-मालिक की ड्यूटी है, साहब ! मकान-मालिक अगर वैसा होता तो हमारे लिए चिन्ता की क्या बात थी ! आप सृष्टिधर से क्यों नहीं कहते हैं ? सृष्टिधर आता है तो हम सभी उससे सलीके से पेश आते है। हमारी यही गलती है। हम लोग जेंटलमैन का भाव दिखाते है···"

भवदुलाल अब खडा नही रहा।

पीछे से हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "सुनिए भवदुलाल बाबू, और एक बात सुनते जाइए।"

भवदुलाल टूटी सीढ़िया उतरते-उतरते ठिठककर खड़ा हो गया। "क्या ?" उसने पूछा।

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "आपसे एक बात कहना भूल गया। अपनी नौकरानी से जरा कह दे कि जूठे बरतन मली राख दरवाजे के सामने न फेंका करे।"

"क्या कहते है, साहब ? मेरी नौकरानी जूठी राख दरवाजे के सामने फेंकती है ? हर्गिज नही, ऐसा हो ही नही सकता। मेरी सास इन सबों के बारे में बड़ी पर्टिकुलर रहा करती है। वह जरूर ही किसी दूसरे मकान की नौकरानी होगी।"

"आप यह कहिएगा तो मैं कैसे मान लू ?" हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "मैंने अपनी आखों से देखा है।"

"हो नही सकता ! आपने गलत देखा है। यह हो ही नही सकता है।"

हरिपद चक्रवर्ती भी कम न थे। उन्होंने कहा, "फिर भी आप कहते हैं कि हो ही नही सकता। फिर तो मुझे अपनी आखों पर ही अविश्वास करना होगा। मैं क्या आपकी नौकरानी को पहचानता नही ?"

भवदुलाल को गुस्सा हो आया, "देखिए, जो-सो मत बकिए। हम पाकिस्तानियों की तरह गन्दे नहीं रहते है। मेरी सास इन सब बातो मे बडी पर्टिकुलर रहती है।"

हरिपद चक्रवर्ती बोले, "हम घटिया लोगो की तरह अपनी बड़ाई अपने मुह

से नहीं करते।"

"जबान संभालकर बातचीत कीजिए, जनाब," भवदुलाल ने कहा, "कहे देता हूं।"

"यकीन न हो तो अभी चलिए, घर के सामने चलकर दिखा देता हूं। अभी तक वहां झींगा मछली की चोइयां गिरी हुई है, अभी तक साफ नहीं किया गया है।" हरिपद चक्रवर्ती ने कहा।

"झींगा मछली!"

"हां," हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "झींगा मछली की चोइयां! सड़ी झींगा मछली की बदबू फैल रही है, मक्खियां भिनभना रही हैं।"

"देखिए, झूठ मत बोलिए। आज मेरे घर पर झींगा मछली आयी ही नहीं है। पता लगाइए, हो सकता है कि आपकी नौकरानी ही ने फेंका हो।"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "जनाब, हम लोग आप जैसे घटिया लोगों की तरह सड़ी झींगा मछली के भक्त नहीं हैं। हमारे यहां आज हिलसा मछली आयी है। खुद मैंने बारह रुपये किलो की दर से हिलसा मछली खरीदी है।"

भवदुलाल ने कहा, "आप किसको पैसे की गरमी दिखा रहे हैं? पैसे की गरमी दिखानी ही है तो किसी दूसरे को दिखाइए। यहां कोई फायदा नहीं होगा।"

"पैसे की गरमी मैं दिखा रहा हूं या आप?" हरिपद चक्रवर्ती ने कहा।

"आप जबरदस्ती झगड़ा करना चाहें तो मैं लाचार हूं। मैंने आपकी तरह कब कहा कि किस दर की कितनी मछली खरीदी है?"

"फिर आपने क्यों कहा कि आपकी नौकरानी ने रास्ते के सामने मछली नहीं फेंकी है?"

भवदुलाल को देर हो रही थी। बोला, "जाइए-जाइए, मैं आप से तर्क करना नहीं चाहता। मेरे पास इतना वक्त नहीं है। अगर बड़प्पन ही दिखाना है तो बालीगंज में किराये का मकान लेकर रहिए। यहां साठ रुपये किराये के मकान में मरने के लिए क्यों पड़े हैं?"

इतना कह चुकने के बाद भवदुलाल वहां रुका नहीं, जल्दी-जल्दी कमजोर जीने को तय करता हुआ नीचे उतरा और घर के अन्दर घुस गया।

ईश्वरप्रसाद ढनढनिया सभवत ईश्वर की तरह ही अदृश्य रहता है। अन्यथा इतने-इतने लोगो से जब भेंट-मुलाकात होती है तो उससे क्यों नही होती ? भवदुलाल दिख पडता है, हिमाशु बाबू दिख पड़ते हैं, हरिपद चक्रवर्ती भी दिख पडते हैं। राधा बुआ जो मुहल्ले-मुहल्ले मे अपनी और पराई बातों का बखान किये चलती है वह तो दिख ही जाती है, मगर उसकी लडकी नेड़ी, जो हर साल बच्चे जनती है और हांफती रहती है, वह भी यदा-कदा दिख जाती है। कभी-कभी वह बच्चे को गोद में लिए गली के नुक्कड पर आकर खड़ी होती है। घर में रहते-रहते जब ऊबने लगती है, तब कपड़ा पहने बाहरी दुनिया को देखने लगती है।

अब तीसरी मंजिल के हरिपद बाबू या हरिपद चक्रवर्ती की बात लीजिए। बाप जी तोड़ मेहनत करने पर एक बहुत बड़े कुनबे का खर्च चलाता है। सुबह उठते ही लड़को को पढाने किसी मुहल्ले की ओर निकल जाता है। वहां से लौटते ही दो कौर जल्दी-जल्दी निगलकर दफ्तर की ओर दौड लगाता है। फिर दफ्तर से सीधे अपने छात्रो के मकान की तरफ चल देता है। एक के बाद दूसरे छात्र के मकान में जाता है। कैसे सूर्य अस्त हो जाता है, इसका पता उसे नही चलता।

घर आते ही हडबडाता हुआ कमरे मे घुस जाता है। वहा उसे अपने पलंग पर सिनेमा की ढेर सारी पत्र-पत्रिकाए मिलती। पूछता, "ये सब क्या हैं जी ?"

पत्नी कहती, "आख से तो देख ही रहे हो कि यह सब क्या है, फिर बक-बक क्या करते हो ?"

इतनी देर के बाद हरिपद को होश आया। वह गौर से अपनी पत्नी की ओर ताकने लगा। आज तेवर चढा हुआ लगता है।

"क्या बात है ? क्या हुआ है आज ?"

पुष्प बोली, 'क्या हुआ है, यह दूसरी मंजिल के किरायेदार से पूछकर देखो।"

"दूसरी मंजिल के किरायेदार ने क्या किया ? फिर गाली-गलौज किया है ?"

पुष्प बोली, "कहे देती हूं, कल ही तुम्हें दूसरा मकान ठीक करना है, वरना मैं खुदकुशी कर लूगी।"

पुष्प की ये बातें कोई नयी नही हैं। मकान की बाबत ही उसने तीस साल के दरमियान तीस हजार बार खुदकुशी करने की इच्छा जाहिर की है। हर बार उसने हरिपद से घर बदलने को कहा है और हर बार आत्महत्या की धमकी दी है। हरिपद के लिए यह आम तौर से कोई नयापन नही रखता है। इसके लिए हरिपद कभी घबराहट महसूस नही करता है। इसके अलावा जिसे सुबह से शाम तक जी तोड़ परिश्रम करके जीवन जीना पड़ता है, उसके लिए इन तुच्छ बातों से परेशान होना कोई मानी नही रखता।

इन बातों पर बिना ध्यान दिए हरिपद पत्र-पत्रिकाओं को उलट-पुलटकर देखने लगा। हर पन्ने पर नंगी तस्वीरें थी।

"यह सब घर मे कौन ले आया ? कौन खरीदता है ?"

पुष्प बोली, "कौन खरीदता है, यह जानने से तुम्हे कौन-सा फायदा होगा ? कोई तुम्हारे पैसे से तो खरीद नही रहा है ?"

हरिपद को गुस्सा हो आया, "मैं घर का मालिक हूं। मैं यह नही जान सकता हूं कि लड़के-बच्चे क्या करते हैं ?"

पुष्प बोली, "जानकर तुम बड़ा ही उपकार करोगे ! दूसरे मकान का आदमी आकर तुम्हारी औरत का जब अपमान कर जाता है, उस समय तुम्हारा ध्यान खिंचता है ? कहां कौन सिनेमा की पत्र-पत्रिकाएं खरीदकर पैसा बरबाद करता है, उसी तरफ तुम्हारा ध्यान है ? पढ़ा है तो अच्छा किया है, खरीदा है तो ठीक किया है…"

"किसने तुम्हारा अपमान किया है, बताओ। बगैर बताये मैं कैसे जानूंगा ?"

पुष्प बोली, "तुमसे कहकर क्या होगा ? तुम्हें कहना या पेड़-पौधों से कहना एक जैसा है। मुझ पर जैसा ज़ोर-ज़ुल्म करते हो, उन लोगों पर करो तो समझूं।"

"किसने क्या कहा ?—राधा बुआ ने ? या हिमांशु बाबू की औरत ने ?"

पुष्प बोली, "चुप रहो। मुझसे बात मत करो। खाना ढंककर रख दिया है, खाकर सो रहो। तुमसे मैं बक-बक नही कर सकूंगी।"

इसके बाद बात करना व्यर्थ था। हरिपद ने नल के पास जाकर मुंह-हाथ धोया और खाने के लिए रसोईघर मे पहुंचा।

"हरिपद बाबू !"

हरिपद बाबू ने तब तक थाली में हाथ नही डाला था। वही से चिल्लाकर

ईश्वरप्रसाद ढनढनियां संभवतः ईश्वर की तरह ही अदृश्य रहता है। अन्यथा इतने-इतने लोगों से जब भेंट-मुलाकात होती है तो उससे क्यों नहीं होतो? भयदुलाल दिख पड़ता है, हिमांशु बाबू दिख पड़ते हैं, हरिपद चक्रवर्ती भी दिख पड़ते हैं। राधा बुआ जो मुहल्ले-मुहल्ले में अपनी और पराई बातों का बखान किये चलती है यह तो दिख ही जाती है, मगर उसकी लड़की नेडी, जो हर साल बच्चे जनती है और हांफती रहती है, वह भी यदा-कदा दिख जाती है। कभी-कभी वह बच्चे को गोद में लिए गली के नुक्कड़ पर आकर खड़ी होती है। घर में रहते-रहते जब ऊबने लगती है, तब कपड़ा पहने बाहरी दुनिया को देखने लगती है।

अब तीसरी मंजिल के हरिपद बाबू या हरिपद चक्रवर्ती की बात लीजिए। बाप जी तोड़ मेहनत करने पर एक बहुत बड़े कुनबे का खर्च चलाता है। सुबह उठते ही लड़कों को पढ़ाने किसी मुहल्ले की ओर निकल जाता है। वहां से लौटते ही दो कौर जल्दी-जल्दी निगलकर दफ्तर की ओर दौड़ लगाता है। फिर दफ्तर से सीधे अपने छात्रों के मकान की तरफ चल देता है। एक के बाद दूसरे छात्र के मकान में जाता है। कैसे सूर्य अस्त हो जाता है, इसका पता उसे नहीं चलता।

घर आते ही हड़बड़ाता हुआ कमरे मे घुस जाता है। वहां उसे अपने पलग पर सिनेमा की ढेर सारी पत्र-पत्रिकाएं मिलती। पूछता, "ये सब क्या हैं जी?"

पत्नी कहती, "आख से तो देख ही रहे हो कि यह सब क्या है, फिर बक-बक क्या करते हो?"

इतनी देर के बाद हरिपद को होश आया। वह गौर से अपनी पत्नी की ओर ताकने लगा। आज तेवर चढ़ा हुआ लगता है।

"क्या बात है? क्या हुआ है आज?"

पुष्प बोली, "क्या हुआ है, यह दूसरी मंजिल के किरायेदार से पूछकर देखो।"

"दूसरी मंजिल के किरायेदार ने क्या किया? फिर गाली-गलौज किया है?"

पुष्प बोली, "कहे देती हूं, कल ही तुम्हे दूसरा मकान ठीक करना है, वरना मैं खुदकुशी कर लूंगी।"

पुष्प की ये बातें कोई नयी नहीं हैं। मकान की बावत ही उसने तीस साल के दरमियान तीस हजार बार खुदकुशी करने की इच्छा जाहिर की है। हर बार उसने हरिपद से घर बदलने को कहा है और हर बार आत्महत्या की धमकी दी है। हरिपद के लिए यह आम तौर से कोई नयापन नही रखता है। इसके लिए हरिपद कभी घबराहट महसूस नही करता है। इसके अलावा जिसे सुबह से शाम तक जी तोड़ परिश्रम करके जीवन जीना पड़ता है, उसके लिए इन तुच्छ बातों से परेशान होना कोई मानी नहीं रखता।

इन बातों पर बिना ध्यान दिए हरिपद पत्र-पत्रिकाओं को उलट-पुलटकर देखने लगा। हर पन्ने पर नंगी तस्वीरें थी।

"यह सब घर में कौन ले आया ? कौन खरीदता है ?"

पुष्प बोली, "कौन खरीदता है, यह जानने से तुम्हें कौन-सा फायदा होगा ? कोई तुम्हारे पैसे से तो खरीद नही रहा है ?"

हरिपद को गुस्सा हो आया, "मैं घर का मालिक हू। मैं यह नही जान सकता हूं कि लड़के-बच्चे क्या करते हैं ?"

पुष्प बोली, "जानकर तुम बड़ा ही उपकार करोगे ! दूसरे मकान का आदमी आकर तुम्हारी औरत का जब अपमान कर जाता है, उस समय तुम्हारा ध्यान खिचता है ? कहा कौन सिनेमा की पत्र-पत्रिकाएं खरीदकर पैसा बरबाद करता है, उसी तरफ तुम्हारा ध्यान है ? पढ़ा है तो अच्छा किया है, खरीदा है तो ठीक किया है..."

"किसने तुम्हारा अपमान किया है, बताओ। बगैर बताये मैं कैसे जानूगा ?"

पुष्प बोली, "तुमसे कहकर क्या होगा ? तुम्हें कहना या पेड़-पौधों से कहना एक जैसा है। मुझ पर जैसा जोर-जुल्म करते हो, उन लोगों पर करो तो समझू।"

"किसने क्या कहा ?—राधा बुआ ने ? या हिमांशु बाबू की औरत ने ?"

पुष्प बोली, "चुप रहो। मुझसे बात मत करो। खाना ढंककर रख दिया है, खाकर सो रहो। तुमसे मैं बक-बक नही कर सकूगी।"

इसके बाद बात करना व्यर्थ था। हरिपद ने नल के पास जाकर मुह-हाथ धोया और खाने के लिए रसोईघर मे पहुंचा।

"हरिपद बाबू !"

हरिपद बाबू ने तब तक थाली मे हाथ नही डाला था। वहीं से चिल्लाकर

पूछा, "कौन ?"

हरिपद को आवाज पहचानी जैसी लगी। जल्दी-जल्दी भोजन को फिर से ढंक दिया। दरवाजे की सिटकनी खोलते ही देखा—सामने हिमांशु बाबू खड़े हैं। बगल में उनका लड़का है।

"आपकी लड़की कहां है ? अपनी लड़की को एक बार बुलाइए।"

हरिपद आश्चर्यचकित हो गया। "मेरी लड़की ? जयन्ती ?" उसने पूछा।

"हां-हां, एक बार उसको पुकारिए न। विजय को आपकी लड़की ने क्या कहा है, इसका मुकाबला आमने-सामने हो जाये।"

"मेरी लड़की ने ? आपके लड़के से कहा है ? क्या कहा है ?"

हिमांशु बाबू बोले, "सो सब अपनी लड़की के मुंह से ही सुन लीजिएगा।"

"मगर बात क्या है ? मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा है। मैं अभी-अभी घर आया हूं। अब तक खाना नहीं खाया है। खाने बैठा ही था कि उठकर चला आया।"

"सो आप खाना खाने जाइए। अपनी लड़की को बुलवा दें। बस, इसी से हो जायेगा।"

"अपनी लड़की को ? खैर, देखता हूं···"

इतना कहकर हरिपद अन्दर आया। पुष्प उस वक्त बिस्तर पर पीठ के बल लेटी हुई थी।

हरिपद बोला, "अजी ओ, सुनती हो, जया कहा है ? जयन्ती ?"

पुष्प जैसी की तैसी लेटी रही। बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

हरिपद ने सोचा, उसकी पत्नी शायद सो गयी है। देह झकझोरकर पुकारा, "अजी ओ, सुनती हो, दूसरी मंजिल के हिमांशु बाबू आये हैं। उनके साथ उनका लड़का है। जयन्ती को बुलाने को कहते हैं। वह कहा है ?"

"उफ, तंग मत करो। जयन्ती कहा है, इसका मुझे क्या पता ? क्यों बुला रहे हैं ?"

हरिपद बोला, "इतनी रात तक वह कहा रहती है ? अब तक घर क्यों नहीं वापस आयी ?"

पुष्प ने एक भी बात का उत्तर न दिया। उसी तरह नींद का स्वांग रचकर लेटी रही।

"भारी विपत्ति है !" हरिपद बोला, "अभी मैं हिमांशु बाबू से जाकर क्या कहूं, बताओ तो सही ! भारी परेशानी है। रात का साढे नौ बज गया। अब तक क्यों नहीं लौटी है ? वह कहां जाती है ? सिनेमा देखने गयी है ?"

पुष्प बोली, "कान के सामने भन-भन भन-भन मत करो। अच्छा नहीं लग रहा है। तुम्हारी लड़की कहां गयी है, यह बात वही जानती है !"

"फिर अगर मैं जाकर यही बात कहूं तो उचित जंचता है ? बताओ तो, वे लोग क्या सोचेंगे। रात दस बजने जा रहा है। इतनी बड़ी लड़की अब तक घर वापस नहीं आयी है।"

तभी जयन्ती जीने से तीसरी मंजिल की ओर आ रही थी। आते ही अपने सामने दूसरी मंजिल के किरायेदारों को देखकर चकित हो गयी।

हिमांशु बाबू को शुरू में घबराहट महसूस हुई। एक तो दो सौ साठ ब्लड प्रेशर है, उसपर डायबेटीज ! इतनी रात तक बहस करने से चीनी की मात्रा में वृद्धि हो जायेगी।

शुरू में जयन्ती ने ही बात छेड़ी, "किसे खोज रहे हैं ?"

हिमांशु बाबू ने कहा, "लो, आ ही गई। तुम्हें ही खोजने आया था। तुम्हें 'तुम' कहकर संबोधित कर रहा हूं, कुछ अन्यथा न लेना। तुम्हें मैंने जनमते देखा है।"

जयन्ती ने उसी तरह जवाब दिया, "इतनी बहानेबाजी की क्या जरूरत ? क्या कहना चाहते हैं, कहिए !"

हिमांशु बाबू ने ऐसी आशा न की थी। कुछ भी हो, है तो उनकी लड़की की हमउम्र ! इतनी शान ! बोले, "मेरे लड़के से तुमने क्या कहा है, बेटी ? लड़के को मैं साथ लिए आया हूं। तुम्हारे सामने ही मुकाबला हो जाए।"

जयन्ती की आखें विजय पर गयीं। उसके बाद बोली, "आपके लड़के ने क्या कहा है, यही कहिए न !"

हिमांशु बाबू ने कहा, "अरे, तुम चुप क्यों हो ? उसने तुम्हें क्या कहा है, कहो न !"

विजय बोला, "मैंने तो आपको बताया ही है, बाबूजी ! मुझे गाली-गलौज किया है।"

हिमांशु बाबू संतुष्ट नहीं हुए। बोले, "क्या गाली-गलौज किया है ?"

" 'सूअर का बच्चा' कहा है।" विजय ने बताया।

हिमांशु बाबू ने जयन्ती की ओर देखते हुए कहा, "छिः छिः बिटिया, तुमने यह बात कही है ?"

जयन्ती बोली, "आपके लड़के ने मेरे फ्रेंड का इनसल्ट क्यों किया ?"

"तुम्हारे फ्रेंड का इनसल्ट किया है ? तुम्हारा फ्रेंड कौन है ?"

जयन्ती बोली, "अपने लडके से ही पूछ लीजिए न ! आपका लडका कोई अधा नही है, उसे सब मालूम है।"

हिमाशु बाबू ने विजय की ओर मुडकर कहा, "तुमने इसके फ्रेंड को बेइज्जत किया था ? मुझसे यह क्यों नही बताया ?"

विजय बोला, "इसी ने अपने फ्रेंड के सामने पहले मेरा इनसल्ट किया था।"

जयन्ती बोली, "मैंने पहले बेइज्जत किया है ? झूठा कही का !"

विजय चिल्ला उठा, "खबरदार, झूठ मत बोलो ! फिर मैं सब कुछ कह दूंगा। यह मत सोचना कि मुझे कुछ भी मालूम नही है। आनन्द राय के साथ तुम रात कहां गुजारती हो, यह भी बता दूगा···"

जयन्ती क्रोध से तिलमिला उठी। "शटअप ··!" उसने कहा।

हिमांशु बाबू ने देखा, मामला पेचीदा होता जा रहा है। बोले, "तुम लोग चुप रहो। बेकार गुस्से मे आ रहे हो ! ठडे दिमाग से बातचीत करो। आनन्द राय कौन है ?"

"आनन्द राय मेरा फ्रेंड है।" जयन्ती ने कहा, "विजय उसके पास मेरे खिलाफ शिकायत क्यो करता है ! मैं चाहे जहा और जिस किसी के साथ सैर-सपाटा करूं, इससे आपके लडके को ईर्ष्या क्यो होती है ?"

तब तक हरिपद आ चुका था। अपनी लड़की के गले की आवाज सुनते ही अन्दर से दौड़ा-दौडा आया। आते ही वहा की स्थिति देखकर ठिठक गया। लड़की की ओर ताकता हुआ बोला, "तुम्हें लौटने में इतनी देर क्यों हुई ?"

हिमांशु बाबू ने कहा, "यही बात मैं कह रहा था, हरिपद बाबू। अपने लड़के से मुकाबला करा रहा था। आपकी लड़की ने मेरे लडके को सूअर का बच्चा कहकर गाली दी है।"

जयन्ती फुफकार उठी, "कहा है तो ठीक किया है ! पहले तो सिर्फ सूअर का

बच्चा ही कहा है, अब अगर मेरे फ्रेंड का इनसल्ट करेगा तो हरामी का बच्चा कहकर गाली दूंगी।"

हिमांशु बाबू बोले, "देखा न हरिपद बाबू, आपने देखा न! आपने अपने कान से ही सब सुना!"

हरिपद बोला, "ए जयन्ती, तुम क्या बक रही हो?"

जयन्ती ने अपने बाप की तरफ मुड़कर कहा, "आप चुप रहिए बाबूजी, मैंने जो अच्छा सोचा, सो कहा है। गली-रास्ते में यह मेरा पीछा करता रहता है, मालूम है!"

"तुम्हारा पीछा करता है?"

"हां, मेरा पीछा करता है। मैं बस पर चढ़ती हूं तो यह भी मेरे पीछे-पीछे बस पर चढ़ता है। ट्राम पर चढ़ती हूं तो मेरे पीछे-पीछे ट्राम पर चढ़ता है।"

हिमांशु बाबू ने कहा, "मेरा लड़का तुम्हारा पीछा करते हुए ट्राम पर चढ़ता है? उसको क्या कोई काम नहीं है कि तुम्हारा पीछा करता चले? मेरा लड़का सवेरे भात खाकर कॉलेज जाता है और रात में घर वापस आता है।"

"सचमुच कॉलेज जाता है या कॉलेज का नाम बताकर सिनेमा देखने जाता है, इसकी खोज-खबर आपने ली है?"

"उनका लड़का कॉलेज जाए या जहन्नुम में जाए, इसके लिए तुमको चिन्ता क्यों है? तुम अपना काम देखो।" हरिपद ने कहा।

अब हिमांशु बाबू अपने लड़के की ओर मुड़कर बोले, "क्यों, तुम चुप क्यों हो? बताओ, तुम कॉलेज जाते हो या सिनेमा?"

विजय बोला, "मैं कॉलेज जाता हूं या नहीं जाता हूं—इसकी कैफियत मैं इसे नहीं देने जा रहा हू। पहले यह बताए कि मुझे गाली-गलौज क्यों किया!"

हरिपद बोला, "नहीं, यह कहने से नहीं चलेगा। मेरी लड़की योंही गाली-गलौज नहीं कर सकती है। तुमने कुछ किया है, जरूर ही उसका पीछा किया है।"

विजय ने कहा, "आपकी कैरेक्टरलेस लड़की का पीछा करूं, मैं ऐसा फूलिश नहीं हूं।"

"क्या कहा?" गुस्से में हरिपद सीना तानकर आगे बढ़ आया।

"बाबूजी, आप चुप रहिए, मैं इसे मजा चखाती हूं…"

इतना कहकर जयन्ती आगे बढ़ी और अपने पैर का चप्पल उतारकर विजय के मुंह की ओर ज़ोर से फेंका। पर वह चप्पल जाकर हिमांशु बाबू के मुह पर लगा। हिमांशु बाबू बगल मे ही खड़े थे। इस तरह की घटना घटित होगी, हिमाशु बाबू ने यह सोचा तक न था।

"क्या कर रही हो, जया ? क्या कर रही हो ?"

हरिपद बाबू का कलेजा थरथराने लगा। लेकिन इसके पहले ही विजय ने एक काड कर डाला। वह शेर की तरह जयन्ती की गरदन पर कूद पड़ा। उसके बाद बाल पकड़कर घसीटते हुए ज़मीन पर बिठा दिया और बोला, "मेरे बाबूजी को जूते से मारोगी ? मेरे बाबूजी का इनसल्ट करोगी ?"

हिमाशु बाबू तब घटना की आकस्मिकता से आश्चर्य में खोये हुए थे। लेकिन हरिपद बाबू इस काड को देखकर खामोश नही रह पाए। सामने छलाग लगाकर विजय को खीच-खांचकर छुड़ा लेना चाहा। "इतनी हिम्मत ! मेरी लड़की पर हाथ उठाओगे ?"

उस तंग सीढ़ी पर एक भयंकर काड घटित होने लगा। बाहर शोरगुल सुनकर हरिपद बाबू की पत्नी अपने को रोक नहीं सकी। पुष्प के कानो में सब कुछ पहुंच रहा था। जब बेहद शोरगुल होने लगा, वह सबके सामने आकर उपस्थित हुई। आकर लडकी का हाथ पकडा और बोली, "हरामजादी लडकी, नीच आदमियों से नीच की तरह झगड़ रही हो ! तुम्हे शर्म नही आती ? वे लोग तो नीच हैं ही, इसके चलते हम भी नीचता पर उतर आएं ? चलो···"

और वह लड़की को खीचती हुई घर के अन्दर ले आई। उसके बाद हरिपद बाबू को भी पुकारा, "तुम मुंह बाये क्यो खड़े हो ? कमीनो का चेहरा देख रहे हो ? चले आओ···"

इतना कहकर उसने हरिपद बाबू के एक हाथ को पकडकर ज़ोर से खीचा और भीतर ले गई। उसके बाद सदर दरवाज़े को धड़ाम से बन्दकर सिटकनी लगा दी।

इस क़िस्म की घटना इस मकान के लिए कोई नई बात नही है। पचास-साठ

सालों से इस उनतीस बटे तीन बटे छह नंबर के नीलमणि हालदार लेन के मकान में यही होता आ रहा है।

नीलमणि हालदार लेन कब बनी है, पता नहीं। लेकिन मकान की शक्ल देखने से पता चलता है कि यह उसके पहले ही बन चुका है।

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन। इस मकान को ईश्वरप्रसाद ढनढनियां ने कब खरीदा था, जिस तरह उसे खुद इस बात का पता नहीं है, उसी तरह नीलमणि हालदार लेन के बाशिन्दों को भी मालूम नहीं है। याद नहीं है। कहने का मकसद है कि एक हाथ से दूसरे हाथ में जाए, इसका चिह्न किसी ने कभी देखा तक नहीं है। मकान पहले जैसा था, बाद में भी वैसा ही रहा। आगे कोई दूसरा आदमी महीने के पहले हफ्ते में आया करता था, बाद में मृष्टिधर आने लगा।

एक दिन सवेरे-सवेरे आकर मृष्टिधर हरेक के नाम से नोटिस ले आया।

एकमंजिले के भवदुलाल ने दरवाजा खोलते ही पूछा, "कौन ?"

बाहर से जवाब आया, "मैं हूं।"

"अरे, तुम कौन हो, यही बताओ न ! 'मैं' का कोई नाम नहीं है ?"

"मैं मृष्टिधर हूं।"

भवदुलाल ने ज्योंही दरवाजा खोला, मृष्टिधर ने अपने चेहरे पर भरपूर मुसकराहट लाकर नोटिस आगे बढ़ा दिया—"मेरे खाते में यहां हस्ताक्षर कर दीजिए, हुजूर !"

"किस चीज का नोटिस है ? हस्ताक्षर क्यों करना है ?"

"जी, पढ़ते ही बात समझ में आ जायेगी।"

भवदुलाल ने मन लगाकर नोटिस पढ़ा। नीचे ईश्वरप्रसाद ढनढनियां के एटर्नी का हस्ताक्षर था—मेरे मुवक्किल श्री ईश्वरप्रसाद ढनढनियां ने स्वस्थ मन और स्वेच्छा से हाल में इस जायदाद को खरीद लिया है। आज से भविष्य में इस मकान के तीनों किरायेदार हर माह के पहले हफ्ते में मेरे मुवक्किल श्री ईश्वरप्रसाद ढनढनियां को किराया चुकायें।...इत्यादि...

भवदुलाल ने नोटिस लेकर खाते पर हस्ताक्षर कर दिए।

"और तुम कौन हो ?" भवदुलाल ने पूछा।

मृष्टिधर निश्छल हंसी हंसता हुआ बोला, "जी, मैं तो बता ही चुका कि

सृष्टिधर हूं—ईश्वरप्रसाद ढनढनियां का कर्मचारी।"

यह नोटिस लेकर सृष्टिधर जमाना पहले आया था। कब किस तारीख मे आया था, किसी को भी याद नही है। शास्त्र मे ईश्वर के दूत के शुभागमन की बातो का उल्लेख है। यह भी ठीक वैसा ही है। सृष्टिधर ईश्वरप्रसाद ढनढनिया का दूत है। वह दूत आदिकाल से नोटिस लेकर इस मुहल्ले में आ रहा है—उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के बाशिन्दो को नोटिस देने आता है और रुपया लेकर चला जाता है। महीने के बाद महीने, साल के बाद साल गुजर जाते हैं और जन्म, मृत्यु और विवाह का साक्षी यह सृष्टिधर रह जाता है। एकमंजिले के भवदुलाल के मकान में कभी सन्तान जन्म लेती है, दोमंजिले के हिमाशु बाबू के मकान मे बीमारी का ऐसा आक्रमण होता है कि अब मरे तब मरे और तीनमंजिले के हरिपद चक्रवर्ती के मकान मे विवाह की शंखध्वनि गूंज उठती है। हरेक का साक्षी है यह सृष्टिधर—ईश्वर का जीवन्त दूत!

उस दिन सडक पर एकाएक जयन्ती से मुलाकात हो गई।

शुरू में हिमाशु बाबू का लडका पहचान नही सका। उसे ठीक सड़क नहीं कहा जा सकता है। सडक होती तो विजय पहचान ही लेता। गैस की रोशनी या बिजली के खंभे के नीचे चेहरा पहचानने मे कठिनाई नही होती है। इधर चौरंगी से शुरू करके उधर एलगिन रोड के मोड़ तक—पूरब की तरफ के फुटपाथ तक—जितनी दूर जाया जाए, किसी-न-किसी से मुलाकात होगी ही। कोई किसी लैंपपोस्ट के नीचे खड़ा है। कोई सडक के बस-ट्राम की ओर चुपचाप ताकता हुआ खड़ा है। मुद्रा ऐसी होती है जैसे किसी के इन्तजार में खडा हो। शुरू में तुम उससे कुछ भी बात न करो। तुम भी दसेक हाथ फासले पर खड़े हो जाओ। फिर बीच-बीच में लड़की की ओर ताको। देखोगे, वह भी तुम्हारी ओर ताक रही है।

इस तरह बहुत देर तक ताक-झांक के बाद तुम फासले को कम कर दो। लगभग पांच गज के फासले तक बढकर चले आओ। तब वह लड़की या तो उत्तर की तरफ या दक्षिण की तरफ चलना शुरू कर देगी।

तब तुम पीछे-पीछे चलो।

विजय ने जेब से सिगरेट निकालकर जलाई।

देखा, वह लड़की भवानीपुर की तरफ जाने लगी।

विजय भी चलने लगा।

बिलकुल निकट आ जाने पर उस लड़की ने मुंह घुमाकर देखा। किन्तु देखते ही चौंक पड़ी।

"तुम ?"

और कुछ देर होती तो दोनों व्यक्ति दो दिशाओं में गायब हो जाते। मगर ऐसा नहीं हुआ।

जयन्ती ने उछलकर विजय की कमीज के कॉलर को पकड़ लिया।

"भागकर कहां जाओगे ?"

विजय उस क्षण हतप्रभ-सा हो गया था। क्या कहे, समझ में नहीं आया।

"क्यों, चुप क्यों हो ? लड़की का पीछा करते हो ? मालूम है, अभी तुम्हें पुलिस से पकड़वा सकती हूं।"

पुलिस का नाम सुनते ही विजय और ज्यादा घबरा गया। तब तक उधर सड़क के लोग तमाशा देखने के लिए इकट्ठे हो गए थे।

"क्या हुआ, बिटिया ? इसने क्या किया ?"

जयन्ती बोली, "देखिए न, मैं सड़क से जा रही हूं और यह मेरा पीछा किए चल रहा है। पीछे से आकर मुझे पुकार रहा था।"

एक आदमी भीड़ को ठेलकर आगे बढ़ आया और बोला, "हटिए, मैं देखता हूं...."

और उसने विजय के बालों को पकड़कर खींचा, "बताओ, तुम कौन हो ? बताओ, तुम क्यों इसके पीछे-पीछे चल रहे थे और क्यों इसे पुकार रहे थे ? कहो, तुम्हारा मतलब क्या है ?"

विजय अपराधी की तरह इतने-इतने आदमियों के बीच सिर झुकाए खड़ा रहा।

"आप इसका गला छोड़ दें, हम लोग इसकी खातिर करते हैं।"

इतना कहकर एक व्यक्ति ने जयन्ती को हट जाने के लिए कहा। जयन्ती ने कहा, "रोज-रोज यह मेरा पीछा करता है।"

उस आदमी ने विजय के गाल पर तड़ाक् से एक तमाचा जमाकर उसे जमीन पर पटक देना चाहा। लेकिन बगल के आदमी की देह से टकरा जाने के

कारण विजय ने अपने-आपको थोडा संभाल लिया।

"बताओ साले, जवाब दो, खामोश रहोगे तो मारते-मारते खत्म कर दूंगा। क्यो पीछा किया था ?"

विजय ने किसी तरह जवाब दिया, "मैंने पीछा नहीं किया था।"

"स्साले, फिर झूठ बोलता है ?"

इतना कहकर फिर से एक झापड लगाया।

उस वक्त जयन्ती की आंखो से आंसू टपक रहे थे। ये आसू विजय के अपमान से नही, बल्कि इतने-इतने आदमियों के धिक्कार और अजनबियों की सहृदयता के कारण टपक रहे थे।

"देखिए, मैं भले घर की लडकी हू। इन लोगों की शैतानी से सड़क पर चलना तक मुश्किल हो गया है।"

"रोइए मत, बहनजी ! हम इसे सही रास्ते पर ला देते हैं। स्साले, तेरे घर में मा-बहन नही है ? स्साले, तेरे घर मे बहू-बेटी नही है ? भले घर की लड़कियो का पीछा करता है ?"

तब सरदर्द से विजय की हालत बदतर थी।

"मेरे बाल छोड़ दें। बडा दर्द हो रहा है। छोडिए···"

"स्साले तेरे बाल छोड दूगा ? तेरा सर मुडाकर उसपर मट्ठा डालूंगा, तब छोड़ूंगा। अभी क्या हुआ है !"

एक भले आदमी ने कहा, "छोड़ दीजिए साहब, इतना हंगामा करने के बजाय इसे पुलिस के सिपुर्द कर दीजिए, झंझट खत्म हो जायेगी।"

"पुलिस के सिपुर्द क्यो कर दू, साहब ? पुलिस के सिपुर्द कर देने से पुलिस इसे सजा देगी ? आज की पुलिस क्या पहले की जैसी पुलिस है ?"

जयन्ती बोली, "अब इसको मत मारिए। छोड़ दीजिए, मुझे डर लग रहा है।"

एक नेता किस्म का आदमी आगे बढ़ आया और बोला, "आप बेवजह क्यो डर रही हैं ? हम लोग हैं, आपके लिए डरने की क्या बात है ?"

"सड़क पर अगर मुझे फिर से अपमानित करे ?"

"इसका मतलब ? पट्ठे को ऐसा सबक सिखाऊंगा कि जिन्दगी मे फिर किसी का पीछा करने की हिम्मत नही करेगा। आप बेफिक्र रहिए, मैं खुद आपको घर

पहुंचा दूंगा।"

"नही, नहीं; आपको तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं।"

आदमी बोला, "तकलीफ की क्या बात ? यह तो हमारा कर्तव्य है।"

एक दूसरा आदमी बोला, "नहीं-नही; आप ऐसा मत कहें। मैं आपको टैक्सी से घर पहुंचा दूंगा। चलिए···"

एक तीसरे आदमी ने आगे बढ़कर कहा, "आप यहां खड़ी क्यों हैं ? इधर ये लोग संभालेंगे। चलिए, इन कमीनों की बात में मत रहे। चलिए···"

उस आदमी ने जयन्ती का हाथ पकड़कर खींचा।

उधर से एक आदमी ने कहा, "आप कौन हैं, साहब ? आपको इतनी गरज क्यों ? हम लोगो की बात में आप क्यो दखलन्दाजी कर रहे है ?"

"चुप रहिए, आपका मतलब मैं समझता हू। एक हेल्पलेस लेडी के लिए आप लोग ही क्यों सरदर्द मोल ले रहे है ?"

उसके बाद जयन्ती की ओर मुड़कर बोला, "चलिए, मैं खुद आपको आपके मकान में पहुंचा दूं।"

लेकिन अचानक एक कांड घटित हो गया।

एकाएक एक प्राइवेट कार आकर फुटपाथ के पास खड़ी हुई। एक साफ-सुथरे युवक ने गाड़ी के अन्दर से झांककर कहा, "कौन, जयन्ती ! यहां क्या हुआ है ? किस चीज की भीड है ?"

अब सबकी दृष्टि गाड़ी की तरफ गई।

"आनन्द दा, तुम ? जान बचा दी तुमने !"

आनन्द ने पूछा, "यहा हो-हल्ला क्यों मचा है ?"

जयन्ती बोली, "बाद मे कहूंगी। अभी तुम किसी तरह मुझे घर पहुंचा दो।"

युवक ने जयन्ती को गाड़ी में बिठाया। उसके बाद इंजन स्टार्ट कर धुआं उड़ाता हुआ सामने की ओर निकल गया।

जो लोग अब तक उस लड़की के गिर्द जमा होकर वीरता का प्रदर्शन कर रहे थे, वे बेवकूफ की तरह उस ओर ताकते हुए खडे रह गए। उसके बाद जब गाडी आंखों से ओझल हो गई, वे एक-दूसरे के मुंह की ओर ताकने लगे। आश्चर्य है ! आजकल किसी पर विश्वास नही किया जा सकता, साहब !

"वह लड़की गृहस्थ घर की है ?"

इस बात का कोई उत्तर न दे सका। अब सबके मन में सन्देह पैदा होने लगा—अब तक जिसकी सुरक्षा के लिए वे आगे बढ़कर आए थे, दरअसल वह कौन है ?

विजय तब लोगों के हाथों से मुक्त हो चुका था। तब उस पर किसी का आक्रोश नहीं था। इस बीच वह अपनी कमीज को ठीक करके अपने-आपको थोड़ा-बहुत संयत कर चुका था।

"मेरी बात पर तब आप लोगों ने यकीन नहीं किया।" उसने कहा।

भीड़ तब छंट चुकी थी। जो दो-एक व्यक्ति तब जाने-जाने को प्रस्तुत थे उनकी समझ मे भी यह बात आ गई कि असल मे इस युवक की कोई गलती नहीं है। हो सकता है कि यह लड़की ही आधी गृहस्थ हो !

एक आदमी ने कहा, "कैसे समझें कि किसके मन में क्या है ! आजकल चेहरा देखकर समझना मुश्किल है···"

सभी के चले जाने के बाद उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के दोमंजिले के किरायेदार हिमांशु सरकार का पुत्र विजय सरकार जैसे आसमान से गिरा। वह लड़की तीनमंजिले के हरिपद चक्रवर्ती की लड़की है, यह बात उसकी कल्पना में कैसे आ सकती थी !

छि: छि: ! आदमी इस तरह की गलती भी कर सकता है !

उस दिन सृष्टिधर ने आते ही अचानक कहा, "मेहमान साहब, मेरे मालिक आए हुए हैं।"

भवदुलाल ने कुल मिलाकर तब चाय को होंठों से लगाया था। राधा बुआ सृष्टिधर के गले की आवाज सुनते ही बाहर निकल आई।

"ओ सृष्टिधर, सृष्टिधर···" उसने पुकारा।

सृष्टिधर तब जल्दबाजी में था। यह समाचार हिमांशु बाबू को भी सुनाना है। लेकिन बुआजी की पुकार सुनकर लौट आया।

"मुझे पुकार रही हैं, बुआजी ?"

राधा बुआ बोली, "अचानक तुम क्या कह गए और तुरन्त दौड़कर भागे

जा रहे हो, अच्छी तरह तुम्हारी बात सुन नहीं सकी। क्या कह गए ?"

सृष्टिधर ने अपने चेहरे पर भरपूर मुसकराहट बिखेरकर कहा, "यह बात दोमंजिले के चाचाजी से भी कहनी है न ! चाचाजी बहुत दिनों से कहते आ रहे हैं कि उनके जीने की रेलिंग कमजोर हालत में है। इसीलिए···"

"तो तुम्हारे लिए दोमंजिले के किरायेदार ही बड़े हैं, सृष्टिधर ? हम लोग एकमंजिले में रहते हैं तो कुछ भी नहीं हैं ? हम लोग क्योंकि तीस रुपया किराया देते हैं इसलिए हम किरायेदार की गिनती में नहीं हैं ? हम लोग भेड़-बकरी है ?"

सृष्टिधर ने दांतों से जीभ काटकर कहा, "छि: छि:, बुआजी, आप क्या कहती हैं ! मैंने आपसे यह कब कहा ? मैंने यही कहा कि मेरे मालिक कल आ रहे हैं। यह कहकर ही मैं चला जा रहा था।"

इस बात को सुनते ही जैसे आग लग गई हो। राधा बुआ ने पूछा, "सच कह रहे हो ?"

"सच नहीं तो झूठ कह रहा हूं, बुआजी ?" सृष्टिधर ने कहा, "मैंने मालिक को लिखा था कि मकान की मरम्मत कराए बगैर अब नहीं चलेगा। सभी को बहुत परेशानी हो रही है—एकमंजिले के मेहमान साहब के आंगन में गड्ढा हो गया है और रसोईघर की चाल से बरसात में पानी टपकता है।"

राधा बुआ बोली, "तुमने सचमुच लिखा है ?"

"लिखूंगा क्यों नहीं ? आप लोगों को तकलीफ हो रही है, इसे क्या अपनी आंखों से नहीं देख रहा हूं !"

"फिर बेटा सृष्टिधर, तुम जब इतना कर ही रहे हो तो हमारे पाखाने की सीढ़ी भी ठीक करने को कह दो। सीढ़ी की ईंटें उखड़ गई हैं, कभी भी हाथ-पांव टूट सकते हैं, लंगड़ी होकर मौत के मुंह में पड़ सकती हूं। बेटा, इसे ठीक करा दो।"

सृष्टिधर ने कहा, "मालिक के आते ही ठीक करा दूंगा। मालिक को लाकर सब कुछ दिखाऊंगा, वह बड़े ही भले आदमी हैं, बुआजी ! मालिक एक बार आ जाएं, फिर तो यह मकान बिलकुल नया हो जायेगा। इस मकान को खरीदने के दिन से आज तक उन्होंने इसे देखा तक नहीं है।"

राधा बुआ सृष्टिधर की बात सुनकर बेहद खुश हुई, "तुम्हारे मालिक कब आ रहे हैं ?"

सृष्टिधर ने कहा, "बारह बजे के अन्दर ही ले आऊंगा, ज्यादा देर न लगेगी।"

"फिर तुम्हारे मालिक अगर रसोईघर मे घुसना चाहें तो ?"

"अच्छी तरह दिखाने के लिए रसोईघर के अन्दर ले ही जाना होगा, बुआजी। मालिक को अपनी आंखो से देखना है, वरना उन्हे कैसे पता चलेगा कि कहा-कहा टूटा हुआ है।"

शुरू-शुरू मे इस तरह की बातों पर सभी किरायेदार विश्वास करते थे। सृष्टिधर को भी विश्वास की दृष्टि से देखते थे। सोचते थे, मकान-मालिक ईश्वरप्रसाद ढनढनिया किसी दिन आएगा। आकर सभी के सुख-दुःख को समझेगा। उसके बाद राज-मिस्त्री लगाकर तमाम असुविधाएं दूर कर देगा।

लेकिन कहा कुछ हुआ ? न मकान-मालिक आया और न ही राज-मिस्त्री लगाया गया। किरायेदारो का तमाम दुख-दर्द, शिकवा-शिकायत, महीने के बाद महीने, साल के बाद साल जमा हो-होकर पहाड़ के रूप मे बदल गई। न किसी अन्याय या अभियोग का कोई प्रतिकार हुआ और न कोई हल ही निकाला गया।

फिर भी उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन की जीवन-यात्रा में कोई व्यतिक्रम घटित नही हुआ। एकमंजिले के भवदुलाल के घर में उसकी पत्नी साल-दर-साल बच्चे जनती रही, दोमंजिले के हिमाशु सरकार का लड़का विजय सरकार मुहल्ले मे गुंडागर्दी करता रहा और तीनमंजिले के हरिपद चक्रवर्ती की लड़की रात गहराने पर घर वापस आती रही।

लेकिन उस दिन एक काड घटित हो गया।

विजय ने मुहल्ले के अड्डे मे यार-दोस्तो से इस प्रसंग को छेड़ा।

"इसका रिवेंज लेना है, पटला," उसने कहा, "वरना हम लोगो की इज्जत धूल में मिल जायेगी।"

सडक के नुक्कड पर यार-दोस्तों की जमात एक बार सुबह और एक बार शाम के वक्त अड्डेबाजी करती है।

पटला ने कहा, "तूने पहले क्यों नही बताया ? साली को ससुराल की सैर करा लाता ! जानते हो, मुचिपाड़ा थाने का ओ० सी० मेरे मौसाजी का फ्रेंड है।"

विजय ने कहा, "तुम्हारी कसम, पहले इतनी बात मेरी समझ में नहीं आई। मैंने सोचा, यों ही कोई बाजारू औरत है, चरने के लिए बाहर आई है, जैसा कि अमूमन उस मुहल्ले में होता रहता है।"

"उसके बाद तूने क्या किया ?"

"मैं पीछे-पीछे फॉलो करने लगा। मैं जितना ही आगे बढ़ता जा रहा था, लड़की भी उतना ही आगे बढ़ रही थी। सोचा, देखूं, यह लड़की कहां जाती है। आखिर सर्कुलर रोड के पास ज्योंही पहुंचा, लड़की मुड़कर खड़ी हो गई। सोचा, श्योर शॉट है ! मगर कसम तुम्हारी, ज्योंही चेहरे पर आंख गई, दिमाग गरम हो गया।"

"क्यों ?"

विजय ने कहा, "देखा, हमारे तीनमंजिले के किरायेदार की लड़की है···"

पटला, केतो, चांदा—सभी चिहुंक उठे।

"एँ, तेरे मकान के तीनमंजिले के किरायेदार की लड़की ? सड़क पर गाहक की टोह में निकली थी ?"

विजय बोला, "फिर क्या दूसरी बात कह रहा हूं, यार ! मैं जानता था, संगीत सीखने के लिए शायद किसी संगीत-विद्यालय में जाती है। इसीसे लौटने में देर होती है। मगर उसने सड़क पर कारोबार बिछाया है, इसकी जानकारी मुझे कैसे हो सकती है !"

"उसके बाद ?"

विजय बोला, "सोचा कि कहूं : क्यों जी, तुमने कब से यह कारोबार शुरू किया ? लेकिन कुछ कहने के पहले ही ससुरी ने चिल्लाना शुरू किया। बोली : देखिए, यह लड़का तब से मेरा पीछा कर रहा है···"

"उसके बाद ?—उसके बाद क्या हुआ ?"

विजय अपनी लज्जा की कहानी गौरव के साथ कहने लगा, "उसके बाद भैया, चारों तरफ से लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। उन लोगों ने मेरे गले को दबोच लिया।"

"यह क्या ? और तूने क्या किया ?"

"मैं क्या कर सकता था, भाई," विजय ने कहा, "अकेला था, इसलिए कुछ बोल नहीं सका। सालों ने सोचा कि सती-साध्वी युवती है और मैं उसे बहका

रहा हूं। तुम्हारी कसम, ऐसा करने लगे जैसे वे सब सत्यवीर युधिष्ठिर हों। सालों ने मेरी कमीज के कॉलर को कसकर पकड़ लिया।"

"और वह लड़की ?"

"जयन्ती तब फूट-फूटकर रोने लगी। मानो, उसका सर्वनाश हो गया हो।"

पटला ने कहा, "इस्स, तूने भयंकर गलती की। हम लोगों को एक बार खबर भेजना चाहिए था। मुचिपाड़ा थाने का ओ० सी० मेरे मौसाजी का फ्रैंड है, मैं जाकर उनसे कह देता।"

केतो बोला, "उसके बाद ?"

विजय बोला, "उसके बाद एक कांड हो गया। एकाएक कहीं से एक प्राइवेट कार आई। उससे एक मस्ताना बाहर निकला और उसके आते ही जयन्ती उसकी छाती से लग गई और बोली : मुझे बचाओ आनन्द दा !"

पटला बोला, "आनन्द दा ? वह किस नाते में भाई लगता है ?"

"आनन्द उस कप्तान का नाम है।"

"कोई सगा-संबंधी है ?"

"अरे नहीं, सगा क्यों होने लगा ? बॉय-फ्रेंड होगा, और क्या ! सगा-संबंधी होता तो मुझे पता रहता। माल तो मेरे तीनमंजिले में ही रहता है !"

केतो का असली नाम है कार्तिक। कार्तिक की तरह चेहरा न रहने पर भी कार्तिक की तरह ही साज-पोशाक में रहता है। लंबी काले रंग की तंग मोहरी की पैंट, बदन पर बुशर्ट।

उसने कहा, "अरे, मैंने उस माल को देखा है, वह चायना बाजार का माल है।"

पटला ने कहा, "चायना बाजार के माल का मतलब ?"

केतो ने समझाया, "मतलब यह कि सस्ता माल। चायना बाजार में पांच रुपये का माल डेढ़ रुपये में बिकता है।"

विजय ने कहा, "तुझे कैसे पता चला ? मेरे ऊपर के मकान में रहती है, मुझे पता ही नहीं और तुझे कैसे मालूम हो गया ?"

केतो ने कहा, "शर्त लगाओ, मैं अगर डेढ़ रुपये में वह माल खरीदकर ले आऊं तो तू क्या देगा ?"

पटला ने कहा, "शर्त लगाने को तैयार हूं।"

"एक पैकेट गोल्डफ्लेक सिगरेट देना पड़ेगा।"

पटला ने अपनी तलहथी आगे बढ़ा दी। केतो ने अपनी तलहथी पटला की तलहथी पर पटक दी। बस, शर्त लग गई। एक पैकेट सिगरेट से एक लड़की का मापदंड निश्चित कर लिया जाए। इस मुहल्ले के लड़कों के लिए इससे बढ़कर हार-जीत नहीं हो सकती है। दुनिया की दुःख-तकलीफ, राशन में मिलने वाला घटिया चावल और अर्थाभाव उन्हें विचलित नहीं करता है। एक पैकेट सिगरेट मिल जाने से ही वे एक लड़की के सर्वनाश की कल्पना को साकार कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस मुहल्ले के आज के युवक कुछ भी नहीं चाहते हैं।

अचानक उत्तर की ओर से एक लड़की तितली की तरह अपनी पांखों को पसारे इसी रास्ते की ओर आती हुई दिख पड़ी।

रास्ते के दूसरे मोड़ से केतो संकेतसूचक सिसकारी देने लगा : स्-स्-स्-स्-स्-स्...

इस मोड़ पर खड़ा विजय इस सिसकारी का अर्थ समझता है। वह भी अपने होंठों से जोर से सिसकारी देने लगा। यानी देख लिया है।

उसके बाद जब तक इस मुहल्ले के लड़के उस ओर आंख टिकाए रहे तब तक वे अपलक सिर्फ एक ही बात कहने की चाह करने लगे :

पनिया भरन को जाने न दे
जाये तो वापस आने न दे
दइया रे दइया...

एक ही साथ गीत की शुरुआत कर सभी लड़की पर आंखें टिकाए तल्लीन थे कि एकाएक पीछे से जाल लगी पुलिस की वैन आकर खड़ी हो गई।

"यहां तुम लोग क्या कर रहे हो ?"

विजय डर गया। केतो ने थरथराती आवाज में कहा, "गीत गा रहे हैं।"

"सड़क के मोड़ पर गीत गाए बगैर नहीं चल सकता ? गीत गाने की और कोई जगह नहीं मिली ? जाओ, अपने-अपने घर चले जाओ।"

थाने का ओ० सी० बेंत की मोटी छड़ी घुमाकर फिर से गाड़ी में ड्राइवर की बगल में आकर बैठ गया। केतो, विजय, पटला तीनों जल्दी-जल्दी गली में दुबक गए और उन्होंने राहत की सांस ली।

लेकिन उस दिन पुलिस की वैन अकस्मात् उनतीस बटे तीन **बटे छह** नील-

मणि हालदार लेन के मकान के बिलकुल करीब ब्रेक लगाकर खड़ी हो गई।

राधा बुआ तब तांबे की एक तश्तरी मे फूल-बेलपात लेकर शीतला मंदिर में पूजा करने जा रही थी। पुलिस देखते ही ठिठककर खडी हो गई।

"ओ नेडी, नेडी, अरी घर के सामने पुलिस आकर क्यों खड़ी हुई? ए भव, आओ, देख जाओ···"

भवदुलाल हर रोज की तरह फर्श पर बैठकर पत्नी की देख-भाल कर रहा था। सास की बात सुनते ही बाहर निकल आया। पुलिस! जैसे इस शब्द पर उसे विश्वास ही नही हुआ।

पत्नी बोली, "अजी, पुलिस क्यो आई है, जाकर देखो न।"

जाने की इच्छा नही थी। लेकिन बिना गए रहा भी नही गया।

"जयन्ती चक्रवर्ती नाम की कोई लड़की इस मकान में रहती है?"

थाने का ओ० सी० खुद आया था। वर्दी में लैस पुलिस अफसर। यमदूत की तरह चेहरा।

राधा बुआ सहमती हुई बोली, "मुझे कोई जानकारी नहीं है, भैया, मेरा दामाद घर में है, बुला देती हूं।"

उसके बाद हड़बड़ाती हुई घर के अन्दर घुसकर बोली, "ए भव, तुम्हें पुकार रही हूं और तुम सुन ही नही रहे हो! उधर पुलिस आई है, क्या-क्या तो पूछताछ कर रही है। मैं क्या से क्या कह डालूगी, तुम एक बार बाहर जाओ।"

भवदुलाल ने काछ संभालते हुए कहा, "चल रहा हूं मां, आप जाइए।"

ओ० सी० खड़ा का खड़ा था।

भवदुलाल के आते ही पूछा, "जयन्ती चक्रवर्ती किस मंजिले में रहती है?"

"हुजूर, हरिपद चक्रवर्ती की लड़की है। तीनमंजिले मे। उधर से सीधे जीने से तीनमंजिले पर चले जाइए।"

कोतवाल अब रुका नही। दल-बल के साथ एकबारगी जीने की ओर चला गया। तब पुलिस की गाडी देखकर सड़क पर कुछ आदमी इकट्ठे हो गए थे।

"क्या हुआ साहब? पुलिस क्यों आई है? चोरी का मामला है?"

एक आदमी बोला, "चले आइए साहब, इन झमेलों मे न रहना ही अच्छा है। अंत में गवाही देने को कहेगा, तब कोर्ट-कचहरी करते-करते परेशान होइएगा।"

लेकिन उत्सुकता बड़ी कठिन चीज होती है—एकदम कछुए की तरह। पकड़

लेगी तो तब तक नही छोड़ेगी जब तक कि मेघ न गड़गड़ाए।

"क्यों साहब, इतना मजमा क्यों लगा रहे है ? तमाशा देखने आए हैं ? भागिए, भागिए यहां से···"

पुलिस के पहरेदारों ने सभी को हटाना चाहा। लेकिन लोग जाएं ही क्यों ? तुम्हारे घर में कौन-सी कलंकजनित घटना घटी है, अगर यह जान ही नहीं पाए तो जीवन जीना क्या ! जीवित रहने मे कौन-सा सुख है ?

दोमंजिले के हिमांशु बाबू यह खबर सुनते ही चिहुंक उठे।

"पुलिस ? पुलिस किसके मकान में आई है ?"

उनकी पत्नी ने कहा, "जाकर देखो न कि किसके मकान में आई है। तुम्हें दिख नहीं रहा है ?"

"ओह, मैंने क्या यह बात कही थी ? पूछ रहा हू, किस फ्लैट में आई है—हम लोगों के फ्लैट मे या तीनमंजिले में या एकमंजिले मे ?"

लेकिन और देर करना उचित न समझकर दुर्बल छाती का भार लिए उठ खड़े हुए और बोले, "विजय कहां है ?"

जवाब दे तो कौन ? मगर तभी सदर दरवाज़े की ज़ंजीर झनझना उठी।

ज्योंही दरवाज़ा खोला, थाने के ओ० सी० ने पूछा, "जयन्ती चक्रवर्ती नाम की कोई लड़की इस मकान मे रहती है ?"

हिमांशु बाबू ने उत्तर दिया, "नही, साहब। तीसरी मंज़िल में देखिए, ऊपर रहने वाले हरिपद चक्रवर्ती की लड़की है।"

ओ० सी० ऊपर चढ रहा था। हिमांशु बाबू अपनी उत्सुकता को दबाकर रख नहीं सके, "क्या हुआ है ? चोरी वगैरह का मामला है क्या ?"

लेकिन थाने के ओ० सी० के पास उस बात का उत्तर देने का वक्त नहीं था। तब वह पुलिस के साथ टूटी सीढ़ी तय करता हुआ सावधानी से तीनमंज़िले की ओर जाने लगा।

तीनमंजिले के सदर दरवाज़े के पास पहुंचकर ओ० सी० ने ज़ंजीर खट-खटाई।

"अन्दर कौन है ? दरवाज़ा खोलिए।"

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का वह मकान वास्तव में बड़ा ही अजीब है। नीचे के एकमंजिले मे भवदुलाल के घर में जब नये लड़के के जन्म लेने की शुभ घोषणा के स्वरूप शख बजता है, हो सकता है कि तब दोमंजिले में हिमांशु बाबू दिल के दौरे की यंत्रणा से उद्विग्न होने लगें और ठीक उसी तरह हो सकता है, कि तभी तीनमंजिले के हरिपद चक्रवर्ती के सदर दरवाज़े पर पुलिस आकर उपस्थित हो।

एकमंजिले मे शख, दोमंजिले में डाक्टर और तीनमंजिले मे पुलिस।

और उसके बीच सृष्टिधर का आविर्भाव वैसा ही लगता है जैसे हरमोनियम बजाते-बजाते बेसुरे पर्दे पर उंगली पड गई हो। कानों मे चोट पहुंचती है। कलेजे मे धक्का-सा लगता है। सभी ऊब का अहसास करने लगते हैं, लेकिन कोई उसे भगा नही पाता है। "तुम्हे और वक्त नही मिला, सृष्टिधर ? ठीक ऐसे ही वक्त में आए।"

किन्तु मालिक ईश्वरप्रसाद ढनढनिया···?

आनन्द राय ने एक दिन जयन्ती से कहा था, "तुम अपने मकान को पहले बदलो। वहा मैं गाड़ी लेकर जा ही नही पाता। उस बस्ती के आवारे इस तरह कीड़े की तरह घेर लेते हैं कि···"

शुरू मे आनन्द एक या दो दिन जयन्ती की तलाश में आया था।

मुहल्ले के रास्ते के मोड पर खड़ा होकर पटला ने कहा, "क्यों जी विजय, तेरे घर के सामने किसकी गाड़ी खडी है ?"

विजय ने भी देखा। केतो ने भी। भोलादत्त भी देखकर अवाक् रह गया।

देखा, एक युवक गाड़ी से उतरकर उंगली में गाड़ी की चाबी नचाता हुआ घर के अन्दर घुसा। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के सामने गाड़ी का आकर रुकना एक नई ही बात है! बल्कि अपवाद ही कहना चाहिए। वह गाड़ी बालीगंज मे दिखती है, न्यू अलीपुर में दिखती है, जोधपुर पार्क मे दिखती है—यहां तक कि कभी-कभी भवानीपुर मे भी दिखती है। लेकिन नीलमणि हालदार लेन में ?

"मौसीजी !"

उस आवाज को सुनते ही जयन्ती बाहर निकल आई।

जयन्ती को देखकर आनन्द ने कहा, "मौसीजी कहां हैं ?"

"अरे, तुम बेटा ! एकाएक ? क्या हालचाल···?"

"बगीचे के तालाब से मछली आई है, इसलिए एक अदद मछली लेकर आ गया, मौसीजी !"

सचमुच हैरान होने की बात है ! दस सेर की एक मछली आनन्द के हाथ में लटक रही थी। मुंह में रस्सी बांधकर और उसे हाथ में लटकाए वह तीन-मंजिले पर ले आया था।

"सोचा, बाजार में मछली की जो कीमत है, कलकत्ते के आदमी बिना मछली खाये ही जी रहे हैं। इसीलिए मैं मौसाजी के लिए ले आया···"

मछली को देखकर जयन्ती भी हैरत में आ गई। मानो मछली के बदले कोई पात्री देख रही हो। विवाह की कन्या की ओर भी आदमी इस तरह गौर से नहीं देखता है।

"मछली कितनी चमक रही है, देख रही हो न, मां !"

मौसी बोली, "तालाब की ताजा मछली है न, इसीलिए अब तक चमक है।"

इतना कहकर आनन्द के हाथ से जल्दी-जल्दी मछली लेकर रसोईघर के सामने चौखट पर रखी।

"तुम्हारे अपने तालाब की है ?"

आनन्द ने कहा, "अपने कहने का मकसद है खानदानी। मेरे पास पैसा कहा है मौसीजी, कि इतना बड़ा चौदह बीघे का तालाब और बगीचा खरीदू ? पिताजी बड़े आदमी थे, बनवा गए थे, इसी से दो कौर नसीब होता है।"

"बगीचा भी है ?"

"बगीचा भी कह सकती हैं। बगीचा बड़ा नहीं है, सत्रह बीघे का है। तलाशने पर एक सौ हिमसागर आम और पचास कटहल के पेड़ मिल जायेंगे। मैं निहायत कपूत हूं कि सब बर्बाद कर रहा हूं। मेरे यहां कोई और खानेवाला आदमी नहीं है।"

"क्यों, तुम्हारे भाई वगैरह ?"

आनन्द ने एक कहकहा लगाया।

"फिर क्या बात थी, भाई-बहन रहते तो अब तक मामले-मुकदमे के मारे जर्जर हो जाता और तमाम पैतृक संपत्ति वकील-एटर्नी के पेट में समा जाती। पट्ठे कुछ भी क्या रहने देते ?"

और आनन्द ने फिर से कहकहा लगाया।

उसके बाद हसना बंद करके बोला, "बाबूजी मेरी यही एक भलाई कर गए हैं मौसीजी, कि भाई-बहनों की झंझट नही सौंप गए है। अपने लोग ही सबसे अधिक ईर्ष्यालु होते हैं।"

"और तुम्हारी मा ?"

"ऐं, जयन्ती ने आपको कुछ भी नही बताया है ?" आनन्द मानो आसमान से नीचे गिर पड़ा हो।

"वह क्या बताएगी ?"

आनन्द ने जैसे जयन्ती को ही दोषी ठहराया, "तुमने मौसीजी से कुछ भी नही बताया ?"

जयन्ती तब चुपचाप खडी एकाग्र होकर मछली पर आंख फैलाए थी।

"नही मा, इसकी मां जिन्दा नहीं है।" वह बोली।

"अहा-हा···"

अनजाने ही मा के मुह से शोकसूचक 'च्च-च्च' शब्द निकल गया।

मौसीजी की समवेदना पाकर आनन्द ने कहा, "आप 'अहा-हा' मत कहे, मौसीजी ! जिन्दगी-भर आदमी से 'अहा-हा' शब्द सुनते-सुनते मेरी जान निकल गई है। क्यो, कोई क्या हमेशा रहता है ? फिर आप लोग क्यों हैं ? आप लोगों के रहते मुझे किस बात की तकलीफ है ? आप लोग क्या मुझे पराया समझते हैं ?"

"तू खडी क्यो है ? तुझसे कोई काम नही हो सकता है ? आनन्द के लिए एक प्याली चाय तो बना सकती हो ··" मौसीजी ने जयन्ती को डाट सुनाई।

"नही मौसीजी, अभी किसी चीज की जरूरत नही है।"

मौसीजी बोली, "यह हो नही सकता, तुम खाली पेट नहीं जा सकते। तुम्हें चाय पीनी ही है।"

आनन्द हाथ जोडकर दो कदम पीछे हट गया।

"मुझे क्षमा करें, मौसीजी ! अभी-अभी पार्क स्ट्रीट मे एक मित्र ने दो कट-

लेट जबरदस्ती खिला दिए। अभी मेरे पेट में तिल रखने की भी जगह नहीं है। सच कह रहा हूं ..."

उसके बाद बोला, "मौसाजी कहां हैं, मौसीजी ? उन्हें देख नहीं रहा हूं।"

मौसी बोली, "उनकी बात मत पूछो, बेटा ! वह कहां रहते हैं, किस धन्धे में मशगूल रहते हैं...इस मकान के चलते तो भारी परेशानी है। इस मकान की शक्ल देख रहे हो न ! जाने कब धराशाई हो जाए..."

"तो इस मकान को छोड़ दीजिए न ! मैं जयन्ती से यही बात कह रहा था ..."

"मकान छोड़ने पर मकान मिलेगा कहां ?" मौसी ने पूछा।

"यह मकान किसका है बताइए तो ? क्या नाम है ? पता क्या है ?"

मौसी बोली, "मकान-मालिक का पता मालूम रहता तो जी जाती।"

"उसका पता एक बार बताती तो मैं उससे निबट लेता। मेरे मित्र के बाबूजी हाईकोर्ट के जज हैं। मैं ही मकान-मालिक के नाम से मुकदमा दायर कर देता। यह भी कोई बात में बात है कि मकान की मरम्मत नहीं कराएगा। सीढ़ी टूटी हुई है, पलस्तर झड़ गया है..."

"और छत से बारिश का पानी टपकता है। सर पर छाता डाले भीगते हुए रसोई बनानी पड़ती है। मकान-मालिक को क्या योंही कोसती हूं !"

"आप एक बार नाम बता दें, फिर मैं क्या करता हूं, देख लीजिएगा।" आनन्द ने कहा।

मौसी ने कहा, "युधिष्ठिर से सुनने में आया है कि ईश्वरप्रसाद ढनढनियां..."

"ईश्वरप्रसाद ढनढनियां ? मारवाड़ी है क्या ? चश्मखोर कहीं का ! पता बताइए तो। मैं नोटबुक में लिख रखूं। कल ही ढनढनिया के नाम से मुकदमा दायर कर दूंगा।"

और पैंट की जेब से नोटबुक और सामने की जेब से कलम निकालकर लिखने के लिए तैयार हुआ।

मौसी बोली, "उसके पते का इन्तजाम करके रख दूंगी। तुम पहले चाय पी लो, बेटा !"

चाय की प्याली हाथ में लेकर आनन्द बोला, "मौसीजी, लेकिन मेरी एक बात है। आप नाहीं मत कहें। कहिए, मेरी बात रखिएगा न !"

"कहो, क्या बात है बेटा !"

"जयन्ती को अभी मैं न्यू मार्केट ले जाकर उसके लिए एक साड़ी खरीदना चाहता हूं।"

"क्यों भैया ? साड़ी क्यों ? उसके पास बहुत-सी साड़ियां हैं। तुम्हारे मौसाजी ने उसे बहुत-सी साड़ियां खरीद दी हैं। उसे क्या साड़ी का कोई अभाव है ?"

आनन्द ने कहा, "सो ठीक है, मैं आज उसे एक साड़ी दूंगा ही ···"

"मगर एकाएक आज ही क्यों देना चाहते हो ? उसकी आज सालगिरह भी नहीं है।"

आनन्द ने एक बार तिरछी निगाहों से जयन्ती की ओर देखकर कहा, "फिर आपसे खुलासा ही कहूं, मौसीजी ! मार्केट में मैंने बीस हजार के शेयर खरीदे थे। जयन्ती ने शर्त बदी थी कि मैं हार जाऊंगा। उसने शेयर का फाटका खेलने से मना किया था। सो क्या बताऊं, मौसीजी, शेयर की वजह से मुझे बीस हजार का फायदा हुआ···"

मौसीजी को जैसे विश्वास ही नहीं हुआ।

"कितना रुपया बताया ?"

"ज्यादा नहीं, बीस हजार।" आनन्द ने कहा।

"बीस हजार रुपया ! कितने रुपयों का शेयर खरीदा था ?"

आनन्द ने कहा, "पांच हजार का। मैं गरीब आदमी हूं, ज्यादा रुपया कहां से लाऊं, मौसीजी ! सो पांच हजार में पंद्रह हजार प्रॉफिट हुआ। कम तो नहीं है, इसीलिए उसको एक साड़ी···"

मौसी हंस दी, "लगता है, तुम उसे बिना खुश किए नहीं छोड़ोगे। अच्छा, तो फिर जाओ।"

आनन्द ने जल्दी-जल्दी मौसी के चरणों की धूल अपने मस्तक से लगाई। बोला, "आशीर्वाद दीजिए, मौसीजी, जिससे कि गुरुजनों के प्रति मुझमें भक्ति-भावना बनी रहे।"

एकमंजिले की बाशिन्दा होने से क्या होगा, राधा बुआ की पैठ मुहल्ले के हर मकान में है। सभी घरों के महिला-समाज की खबरों का संग्रह करने या खबरों को फैलाने की जिम्मेदारी जैसे एकमात्र उसी पर हो। जब वह पूजा के

फूल लेकर शीतला-मंडप जाती है तो लौटने के वक्त सीधे घर लौटकर नही आती है। एकबारगी शंकरी लेन की फूल भाभी के घर मे उपस्थित होती है। वहां हर घर की हाडी की खबर लेने के लिए फूल भाभी छटपटाती रहती है। कभी फुस-फुसाकर, कभी बुदबुदाकर और कभी जोर-जोर से दोनों बातचीत करती हैं।

"कल तुम लोगो ने मछली कैसे खाई, राधा बुआ?"

राधा बुआ शुरू मे हैरत मे आ गई। "मछली?" वह बोली, "दामाद मछली कहां से लायेगा? मछली के बाजार में अकाल पड गया है। अब घर मे मछली कहा आती है! कल मेरा दामाद छोटी झींगा मछली ले आया था, उसे ही बैंगन के साथ बनाया था।"

फूल वहू बोली, "बाप रे, क्या कहती हो, राधा बुआ! मुहल्ले के सभी आदमियों ने देखा है कि तुम लोगों के घर मे बीस सेर वजन की कतला मछली आई है···"

अब राधा बुआ की समझ में बात आई।

"ओह, यही कहो न!" राधा बुआ बोली।

"तुम लोगों के नीलमणि हालदार लेन में मछली तली गई, हम लोगों को इस रानी शंकरी लेन में बैठे-बैठे उसकी गन्ध महसूस हुई। तुम लोगों को एक-मंजिले मे रहने के बावजूद कोई अता-पता नही चला? यह क्या मुमकिन है?"

राधा बुआ बोली, "देखा, लड़की उस लडके के साथ ही फिर से बाहर निकली।"

"कब वापस आई?"

"पता नहीं भाभी, मेरे दामाद ने बताया कि रात करीब एक बजे गाड़ी की आवाज सुनाई पड़ी थी। इन लोगों का कारोबार कुछ समझ में नही आता। मेरा कहना है कि लड़की अब जवान हो गई है, अब अगर उसका हाथ पीला नही करती हो तो पैदा ही क्यों किया? जच्चाघर में ही नमक चटाकर मार डालती, लज्जा-शर्म का झमेला ही खत्म हो जाता।"

फूल भाभी बोली, "तुम्हारे भैया ने बताया है कि उस लडकी को उन्होंने चौरंगी में बेहया की तरह घूमते देखा है।"

"वह मकान ही वेश्याघर है, बहू! नेड़ी से मैंने यही बात कही थी कि तेरे कारण मेरे जीवन का अन्तिम पहर पापों से भरता जा रहा है। पता नहीं, पिछले

जन्म में कितना पाप किया है कि उस मकान में टिकना पड़ रहा है।"

"अपने मकान-मालिक से कहकर उसे भगवा नहीं सकती हो?"

"हरामजादे मकान-मालिक की बात मत करो, बहू! उसके मुनीम से कब से कहती आ रही हूं कि मकान-मालिक को बुलाओ, मगर वह पाजी कभी आया ही नहीं।"

फूल भाभी बोली, "मगर तुम्हारे मुहल्ले के लोग भी अजीब हैं, बुआ! हर कोई बाल-बच्चा औरत लेकर गृहस्थी चला रहा है। यह बात किसी की आंखों में चुभती नहीं?"

"किसको कहूं और कौन सुनेगा ही, बहू! हमारे दोमंजिले के सरकार को पहचानती हो?"

"वही न, जो छोकरा गांजे का दम लगाता है?"

राधा बुआ बोली, "गांजे का दम लगाता है या चरस-भांग का, पता नहीं बहू! उस लड़के की शक्ल देखी है? उस दिन नेड़ी नलघर में स्नान कर रही थी। नलघर के ऊपर छत नहीं है। एकाएक खयाल आया तो देखा सिर झुकाकर ऊपर से वह छोकरा नेड़ी की ओर ताक रहा है।"

"बाप रे, यह बात! तुम्हारी लड़की की ओर? वह तो सात बच्चों की मां है!"

राधा बुआ बोली, "यह सुनते ही मेरे बदन में आग लग गई। मैं अपने-आपको रोक नहीं पाई, बहू! दोमंजिले पर पहुंची। जाकर लड़के की मां की वो फजीहत की, वो फजीहत की, कि क्या कहूं! कहा: ऐसा लड़का पैदा किया है कि गले के लिए फन्दा नहीं जुटता है?...सुनोगी उस छिनाल का काण्ड? मोइमा लगा हंसिया लेकर मुझे मारने दौड़ी..."

"बाप रे! उस छोकरे का बाप उस वक्त कहां था? बुढ़वा मरद क्या कर रहा था?"

राधा बुआ बोली, "जैसा वह मरद है वैसी ही वह मौगी—दोनों के दोनों शैतान की औलाद! शैतान की औलाद न होते तो ऐसा बेटा जनते?"

"उसके बाद?"

राधा बुआ बोली, "उसके बाद मैंने वो जहर उगला..."

"उस छोकरे ने क्या कहा?"

"छोकरे ने कहा : हमारा मकान है, जहां मर्जी होगी खड़े होंगे; जिधर मर्जी होगी, देखेंगे। ताकत है तो मकान-मालिक को बुलाकर नलघर की छत बनवा लो··"

फूल बहू बोली, "छोकरे ने वाजिब बात ही कही है, बहन! गलती तो तुम्हारे पाजी मकान-मालिक की ही है। उस मरदूद के मुंह में झाड़ू क्यों नहीं लगाती हो? अपने मकान के नलघर में नहाने का भी उपाय न रहे, यह कैसा अन्याय है!"

देर हो रही थी, इसलिए राधा बुआ को उठना पड़ा। सिर्फ रानी शंकरी लेन की फूल भाभी के पास बैठने से काम नहीं चलेगा। दूसरे-दूसरे घरों में भी खबर पहुंचानी है, और-और लोगों को भी तो यह निन्दाजनक घटना सुनानी है। तब न सुख हासिल होगा!

रानी शंकरी लेन से निकलने के बाद नेपाल भट्टाचार्य लेन मिली। यहां भी राधा बुआ की संगी-साथी हैं। किसी घर में नातिन बहू है, किसी में लड़की और किसी में बड़ी बहन। हर घर में राधा बुआ की इज्जत की जाती है। राधा बुआ ज्योंही मिलती है, सभी को लगता है कि आकाश का चांद जैसे हाथ में आ गया हो।

"कहो राधा बुआ, सुनने में आया है कि तुम्हारी फूल बहू के लड़के की औरत को तीन सौ रुपये की नौकरी मिल गई है।"

राधा बुआ कहती, "वाह, क्या कहना! 'क' लिखने में ही जिसका हाथ टेढ़ा हो जाता है, उसे कौन नौकरी देगा, सुनू? उस उल्लू जैसे चेहरे की खूबसूरती देखकर?"

"फिर सुनने में क्यों आया कि फूल बहू के बेटे की औरत सज-धजकर नौ बजे दफ्तर जाती है?"

"चुप कर, यह नौकरी भी कोई नौकरी है! दूध की दुकान में दूध की बोतलें बेचा करती है और कीमत लेने के समय मुसकरा देती है। उसे तू नौकरी कहना चाहती है तो यह सकती है!"

जो लोग सुनते हैं वे खुश होते हैं। पराई निन्दा सुनने से जिनकी तबीयत प्रसन्न होती है, वैसे लोगों के घर में राधा बुआ को भरपूर सम्मान प्राप्त होता है। राधा बुआ एक बार मिल जाए तो वे उसे जाने देना नहीं चाहती हैं। कहती

हैं, "थोड़ी देर और बैठो, राधा बुआ, तुम्हारे घर में लड़की है, नाती हैं, इतनी जल्दबाजी किस बात की ?"

राधा बुआ कहती, "नहीं-नहीं, अब चलूं, नेडी की तबीयत फिर खराब हो गई है।"

ये कहती, "क्यों राधा बुआ, तुम्हारी लड़की को फिर लड़का होनेवाला है ?"

राधा बुआ कहती, "मालूम नहीं, बिटिया, मैं तो दामाद से कहा करती हूं कि तुम दूसरे कमरे में अलग बिस्तर पर सोया करो, भैया, मैं अपनी लड़की के पास सोया करूंगी···"

कुछ देर रुकने के बाद फिर कहती, "यही वजह है कि एक मकान की तलाश में हूं, बेटी ! उस मकान को छोड़ दूंगी। तुम लोगों के मुहल्ले में कोई मकान खाली होनेवाला है ?"

मकान कहीं भी खाली नहीं होता हैं। होता भी है तो चुपचाप खाली होता है और चुपचाप ही भर भी जाता है। दुनिया में खाना मिले या न मिले, सिर घुसेड़ने के लिए सिर के ऊपर एक छत की जरूरत तो है ही। उसी छत के नीचे जन्म-मृत्यु और विवाह का रास रचाने के लिए अनादिकाल से गृहस्थ-धर्म का निर्माण हुआ है। इसी गार्हस्थिक धर्म के लिए ही इस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के इस मकान का निर्माण हुआ है। इस मकान के निर्माण की शुरुआत से ही यहां परंपरागत वंशों मे कलह और कलक का शोर-शराबा मचा रहता है। मृत्यु यहा निश्चित पथ से ही आती है किन्तु जन्म आकर उसकी रिक्तता को अचानक पूर्ण कर जाता है। ये लोग कलह-विवाद करते है लेकिन उस कलह-विवाद को लांघकर किसी दिन फिर से विवाह के गीत मुखर होने लगते हैं, मंगल शंख बजने लगते है। ऊपर के लड़के नीचे की मंजिल के नलघर मे झांकते हैं, दोमंजिले का लड़का तीनमंजिले की लड़की का सड़क पर पीछा करता है, मारपीट होती है, लोगों की भीड़ जमती है और उसके बाद किसी दिन एक खुशनुमा गाड़ी आकर खड़ी होती है और गाड़ीवाला लड़की को अपनी बगल में लिए मुहल्ले के लड़कों के सामने से ही दूसरे मुहल्ले मे गायब हो जाता है। और इसके बाद हो सकता है कि कभी पुलिस आकर सदर दरवाजे की जंजीर खटखटाए और कहे, "घर मे कौन है ? दरवाजा खोलिए···"

यही नियम है। यही दुनिया है! उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में यही हुआ।

सदर दरवाजा खोलते ही हरिपद चक्रवर्ती अवाक् हो गए। हरिपद चक्रवर्ती ने कभी कल्पना तक न की थी कि इस तरह साक्षात् पुलिस आकर हाजिर होगी।

उसने पूछा, "किसको खोज रहे हैं?"

"हरिपद चक्रवर्ती किसका नाम है?"

"क्यों, कहिए, क्या हुआ है? मैं ही हूं हरिपद चक्रवर्ती···"

"जयन्ती चक्रवर्ती आपकी ही लड़की है?"

हरिपद ने कहा, "हां···"

"आप हम लोगों के साथ थाने में चलिए।"

हरिपद चक्रवर्ती का कलेजा धड़कने लगा। पूछा, "जयन्ती को क्या हुआ है?"

"नियम नहीं है कि पुलिसवाले इन बातों का जवाब दें। उन्हें ढेरों काम रहते हैं, बहुत सारी कम्पलेंट रहती हैं। तमाम दुनिया से तमाम लोगों की लड़ाई चल रही है। आपकी मामूली-सी बात के लिए माथापच्ची करने का वक्त हमारे पास नहीं है। चलना है तो चलिए, वरना वारण्ट इश्यू कराकर कॉन्सटेबुल भेजकर आपको एरेस्ट कराऊंगा और ले जाऊंगा।"

हरिपद चक्रवर्ती बोला, "जरा रुक जाइए, मैं कमीज पहनकर आता हूं···"

उधर गाड़ी में बैठी जयन्ती का जूड़ा गाड़ी के हिचकोले से खुल गया। हाथों से उसे सभालती हुई जयन्ती बोली, "इतने जोर से गाड़ी क्यों चला रहे हो?"

"जोर से न चलाऊं तो गाड़ी चलाने से लाभ ही क्या है?" आनन्द ने कहा।

"मगर मेरा जूड़ा जो खुल-खुल जाता है। कहीं कोई दुर्घटना न हो जाए···"

आनन्द ने कहा, "लाइफ इज एक्सिडेंट, यह जो तुम पैदा हुई हो,या मैंने

ही जो जन्म लिया है, यह भी तो एक एक्सिडेंट है···"

जयन्ती की समझ मे यह सब बात नही आई। चुप्पी साधे समझने का बहाना करती रही।

आनन्द ने अपना कथन जारी रखा, "तुमसे अचानक एक दिन मेरी मुलाकात होना भी तो एक एक्सिडेंट ही है। वरना कलकत्ते में साठ लाख आदमी हैं, मगर कब किससे किसकी मुलाकात होती है! हर रोज हम लोग हज़ारों आदमियों के आमने-सामने आते हैं लेकिन किसी से किसी की मुलाकात नही होती है। फिर भी तुम्हे देखते ही क्यो लगा कि तुमसे ही मिलना जैसे सबसे ज़रूरी है? तुम्हें भी क्या ऐसा नही लगा था?"

जयन्ती ने कहा, "मालूम नही, इतनी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं···"

आनन्द ने कहा, "तुम सोचती हो कि मैंने मौसीजी से इतनी झूठी बातें क्यों कही? दरअसल वे सब झूठी बातें नही हैं। झूठी बात उसी को कहते हैं जिसके पीछे बुरा उद्देश्य हो। असल मे मेरा कोई मतलब नही है···"

जयन्ती बोली, "सो तो मालूम है ही।"

आनन्द ने कहा, "तुम सोचती हो, मेरे बारे में तुम्हें पूरी जानकारी नहीं है। फिर तुम मुझसे शादी करोगी ही क्यो? मगर शादी करनी ही होगी—ऐसी कौन-सी बात है?"

जयन्ती ने इस बात का कोई उत्तर नही दिया।

"सच-सच बताओ, तुम किस मकसद से सड़क पर निकली थी?" आनन्द ने पूछा।

जयन्ती बोली, "घर मे रहना अच्छा नही लग रहा था, इसी से सड़क पर निकल आई थी।"

"उसके बाद?"

"उसके बाद देखा कि सड़क पर निकलने के लिए अच्छी-अच्छी साड़ियों की ज़रूरत पड़ती है, गहनो की ज़रूरत पड़ती है और पैसा कमाने के लिए मैं सड़क पर निकलने लगी।"

"आख़िर वही करने के कारण गुण्डों के हाथ मे पड़ गई थी। और मैंने आकर तुम्हारी रक्षा की। लेकिन असल में चाहे जो कहो, तुम-मैं, हम लोग सभी गुण्डे हैं—कोई साफ़-सुथरे कपड़े पहने है और कोई मैले-कुचैले।"

आनन्द कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद बोला, "तुम्हारे मुहल्ले के लड़के भलेमानस नहीं हैं।"

"क्यों ?"

"तुम पूछ रही हो : क्यों ? देखा नहीं, जब गाड़ी लेकर आ रहा था, उन लोगों ने सड़क के नुक्कड़ पर खड़े होकर किस तरह सिसकारी देना शुरू किया ? ये लोग कौन हैं ?"

जयन्ती बोली, "उनमें से एक आदमी हमी लोगों के मकान के दोमंजिले का किरायेदार है।"

"सबके सब बदमाश हैं, लोफर !"

जयन्ती बोली, "उन लोगो के पास रुपया-पैसा जायदाद वगैरह नहीं है..."

बातचीत के दरमियान ही गाड़ी एक मकान के सामने रुकी।

जयन्ती ने कहा, "यह कहा ले आए ? तुम लोगो का मकान है ?"

आनन्द ने कहा, "नही; चलो, अन्दर जाने पर ही समझोगी।"

बाहर से देखने पर कुछ भी समझना मुश्किल है। चारों तरफ भले लोगों का मुहल्ला है। गाडी ज्योही सामने जाकर खडी हुई, एक दरबान ने आकर सलाम किया और दरवाजा खोल दिया। आनन्द जयन्ती के साथ उतरा। उसके बाद सीधे अन्दर जाकर जीने से ऊपर की ओर जाने लगा। संगमरमर की सीढ़ियां थी।

जयन्ती ने पूछा, "मुझे कहा ले आए हो ? यह तुम्हारा मकान है ?"

आनन्द ने कहा, "मान लो, यह एक तरह से मेरा मकान है। यहां तुम्हारे लिए डरने की कोई बात नही है।"

दोमंजिले पर पहुंचते ही जयन्ती ने अपने इर्द-गिर्द दृष्टि दौड़ाई और आश्चर्य में डूबने-उतराने लगी। मानो, सजा-सजाया सिनेमा का कोई सेट हो। सिनेमा में उसने इसी तरह का सजा-सजाया कमरा देखा था।

जयन्ती बोली, "तुम्हारा कारोबार अजीब है। पहले ही बताना चाहिए था। मैं एक अच्छी-सी साडी पहनकर आती।"

"तुम्हारे साथ मैं जो हू, डरने की कौन-सी बात है ?"

बातचीत के दरमियान ही सामने एक अपारदर्शी कांच का दरवाजा खुला और वहां एक सूटधारी सज्जन बैठा हुआ दिख पड़ा। उसने हंसकर अंग्रेजी में

कुछ कहा और आनन्द ने भी हंसकर उसकी बात का उत्तर दिया।

भले आदमी ने जयन्ती की ओर हाथ बढाया और जयन्ती के हाथ को लेकर हैंडशेक किया।

"हाउ डू यू डू, मैडम ?" उसने कहा।

जयन्ती अचकचाकर आनन्द की ओर ताकती रही। आनन्द फर्राटे के साथ अविराम अंग्रेजी बोलता रहा।

इसके बाद अन्दर से काच के दरवाज़े को ठेलकर एक नर्स बाहर आई। जयन्ती को लगा, नर्स मेम साहब है। बिलकुल मेम साहब की तरह ही उसका चेहरा-मोहरा। दोनों गाल सेब की तरह लाल। सिर पर नर्सों की तरह ही रूमाल बधा हुआ।

नर्स ने जयन्ती से कुछ कहा। जयन्ती उसकी बात समझ नही सकी।

आनन्द ने कहा, "तुम्हे अपने साथ अन्दर जाने को कह रही है। जाओ।"

"तुम नहीं आओगे ?"

जयन्ती का चेहरा भय से बुझ गया।

आनन्द ने कहा, "तुम उसके साथ अन्दर जाओ। डरने की कौन-सी बात है ?"

इसके बाद बातचीत का क्रम रुक गया। मेम साहब होने से क्या होगा, है तो असल मे औरत ही। औरत को औरत के निकट जाने मे डरकी कौन-सी बात है ? मर्द रहता तो अलग बात थी।

जयन्ती कुरसी से उठकर नर्स के पीछे-पीछे अन्दर की ओर जाने लगी और उसके बाद दरवाज़े की ओट मे अदृश्य हो गई।

उस दिन भी सृष्टिधर आया। वही निश्छल मुसकराहट। हाथ में छाता लिए एकबारगी भवदुलाल की चौखट के सामने जाकर हाज़िर हुआ। अन्दर से दरवाज़ा बन्द था। पहले दरवाज़े पर दो कड़िया लगी थी, किन्तु हिलाने-डुलाने के कारण बहुत दिन पहले ही खुलकर निकल चुकी थी।

सृष्टिधर आहिस्ता-आहिस्ता खटखटाने लगा।

"कौन ?"

"मैं सृष्टिधर हूं, बुआजी !"

यह बात हरेक के कान में पहुंची। भवदुलाल तब दफ्तर जाने की जल्दबाजी में था। आवाज सुनते ही दौड़ता हुआ आ रहा था। उद्देश्य यही था कि सृष्टिधर को खूब जली-कटी सुनाए। मगर सास ने कहा, "तुम छोड़ दो, भव, मैं देखती हूं।"

उसके बाद दरवाजा खोलते ही राधा बुआ बरस पड़ी, "किराया मांगने में शर्म नहीं लगती है, सृष्टिधर ? तुम मुझे क्या सोचते हो ? हम लोग क्या बैल-बकरी हैं ? या आदमी ?"

"छिः छिः, आप क्या कह रही हैं, बुआजी ! मुझे अब शर्मिन्दा मत करें। कल मेरे मालिक आ रहे हैं।"

"देखो भैया, तुम हम लोगों के साथ तमाशा क्यों कर रहे हो ? हम लोग काम-काज वाले आदमी ठहरे, कल मेरे नाती हुआ है। मैं एक हाथ से जच्चा-घर संभाल रही हूं और दूसरे से गृहस्थी चला रही हूं। तुमसे हंसी-मजाक करने का अभी मेरे पास वक्त नहीं है।"

सृष्टिधर ने कहा, "मालिक न आएं तो मैं क्या करूं ! मैं तो हुक्म का बन्दा हूं।"

"तुम अगर हुक्म के ही बन्दे हो तो हम लोगों को बुआजी, चाचीजी, मेह-मान साहब कहकर मत पुकारा करो। सिर्फ किराया वसूली का ही रिश्ता रहे। इतनी आत्मीयता की कौन-सी जरूरत है ?"

सृष्टिधर ने कहा, "कल मालिक आएंगे या नहीं, यही कहने के लिए मैं आया था।"

"कल आ रहे हैं, कल आ रहे हैं, करते-करते कितने साल गुजर गए, सृष्टि-धर ? तुम्हारे मालिक को क्या काल ने ग्रस लिया ? तुम्हारे मालिक के अत्या-चार से हम लोग क्या इस घर में टिक नहीं पाएंगे ? यही करना है तो तुम्हारा मालिक हमें साफ-साफ कह दे। हमारे पाखाने की सीढ़ी की मरम्मत तो होगी ही नहीं, यह मालूम है। सो चाहे मरम्मत मत कराओ, मगर यह जो लड़की-दामाद, नतिनी लेकर गृहस्थी चला रही हूं, यह भी नहीं करने दोगे ?"

"क्या हुआ, बुआजी ? बात क्या है ?"

"तुमसे बढ़कर फायदा ही क्या होगा, सृष्टिधर ? भले आदमी के मुहल्ले में यह जो लड़की का कारोबार चल रहा है, यह क्या किसी से अनदेखा है ?"

"लड़की का कारोबार ! आप क्या कह रही हैं, बुआजी !"

राधा बुआ बोली, "ठीक ही कह रही हूं ! दिन-दोपहर, सुबह-शाम दूसरे मुहल्ले के लड़के गाड़ी लेकर आते हैं, मछली ले आते हैं, और भी न जाने किस-किस चीज के पैकेट ले आते हैं। इसके अलावा, कपड़ा उतारकर नहाना मुश्किल है, ऊपर से जवान लड़के झांकते हैं। यह सब हम लोगों ने किसी भी जमाने में नहीं सुना था। या तो तुम्हारा मालिक हम लोगों का मकान मरम्मत करा दे और उस किरायेदार को हटा दे या इससे बेहतर है कि हम लोग सड़क पर डेरा-डंडी जमाएं। इससे सरकारी सड़क कहीं अच्छी है ! वहां भी आदमी की इज्जत की रक्षा होती है:..."

कहते-कहते राधा बुआ की आवाज भर्रा गई।

सृष्टिधर जैसे अब सचमुच लंकाकाड मचा देगा, छाते की मूठ को उसी तरह जमीन पर पटकता हुआ बोला, "ठीक है, बुआजी, मैं अभी जाकर चाचाजी से कहता हूं।"

एकमंजिले की शिकायत जिस तरह दोमंजिले के खिलाफ है, दोमंजिले की शिकायत तीनमंजिले के खिलाफ है। एकमंजिले, दोमंजिले और तीनमंजिले में जिस तरह किसी भी दिन मेल-मिलाप नहीं होगा, सृष्टिधर का मालिक भी उसी तरह किसी दिन भी नहीं आयेगा।

दोमंजिले की हिमांशु सरकार की पत्नी भी वैसी ही है। वह कहती, "तुम उन लोगों से क्यों नहीं कहते हो, सृष्टिधर, कि हम उन लोगों की तरह नीच नहीं हैं। जो नीच होती हैं वे ही साल-दर-साल बच्चा जनती रहती हैं।"

सृष्टिधर कहता, "सो तो ठीक ही है, चाचीजी, आप बिलकुल ठीक कह रही हैं।"

"तुम भैया, राधा बुआ से कहो कि उसकी बेटी मेरे घर के जवान लड़के को दिखा-दिखाकर नंगे बदन मत नहाए।"

सृष्टिधर ने कहा, "अबकी मालिक आएं। उनके आने पर नलघर की छत पर टीन का छाजन डलवा देंगे।"

"हमेशा से ही सुनती आ रही हूं, सृष्टिधर, कि तुम्हारे मालिक कल आ रहे हैं ! सचमुच तुम्हारे मालिक को काल ग्रस गया है।" चाची कहती।

"नहीं चाचीजी, अबकी सचमुच कल आ रहे हैं। मुझे दिल्ली से चिट्ठी

भेजी है।"

चाची कहती, "आए तो मेरे जीने की रेलिंग ठीक करा देना, भैया, कहीं किसी दिन तुम्हारे चाचाजी गिरकर मर न जाएं···"

किन्तु इसके बाद जब वह तीनमंजिले पर जाता तो सृष्टिधर को कोई और ही शिकायत सुननी पड़ती थी।

हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी कहती, "एकमंजिले की किरायेदार राधा बुआ से कह देना, हरिपद, कि मेरी लड़की के बारे में अगर मुहल्ले-मुहल्ले में कहानी कहती फिरेगी तो मैं पुलिस को इत्तला कर दूंगी। हां, कहे देती हूं···"

सृष्टिधर कहता, "अब कहानी-वहानी कहना नहीं चलेगा, मौसीजी, मालिक कल आ रहे हैं।"

"सचमुच आ रहा है, सृष्टिधर?" मौसी सुनकर थोड़ा आश्वस्त होती।

सृष्टिधर कहता, "हां मौसीजी, अब कोई गड़बड़ नहीं होगी, मुझे दिल्ली से चिट्ठी आई है। मालिक ने लिखा है: मैं बुधवार को कलकत्ता पहुंच रहा हूं, पहुंचते ही अपने किरायेदारों की तमाम गड़बड़ियों को दूर कर दूंगा।"

"तुम्हारे मालिक खाक दूर करेंगे! अपने पुराने सभी किरायेदारों को इस मकान से हटाने को कहो। सभी पुराने किरायेदार कम किराया देते हैं, इसके चलते तो तुम्हारे मालिक को ही नुकसान हो रहा है।"

"हां, मौसीजी," सृष्टिधर ने कहा, "पुराने किरायेदारों को अब मालिक रहने नहीं देंगे। मुकदमा दायर कर सबको हटा देंगे।"

"जानते हो, सृष्टिधर, वे लोग कितने नीच हैं, मेरी लड़की के नाम से मुहल्ले-मुहल्ले में खबर उड़ा रहे हैं।"

सृष्टिधर ने कहा, "आपकी लड़की के बारे में! आपकी लड़की तो देवी की अवतार है, मौसीजी! आपकी लड़की की लोग निन्दा किए चलते हैं? धिक्कार है···"

"अपने मौसाजी को देखे हो न! किसीके सात-पांच में नहीं रहते हैं। सो तो तुमने अपनी ही आखों देखा है। देखा है न?"

"आपकी लड़की भी तो किसी के सात-पांच में नहीं रहती है, मौसीजी।"

"मेरी लड़की! मेरी लड़की अगर किसी के सात-पांच में रहेगी तो उसे काटकर दो टुकड़े कर दूंगी!"

यह दुनिया भी जैसे अजीब ही है ! यह उनतीस ब
मणि हालदार लेन का मकान ! जैसे हर लमहे कोई न
रहता है । हर लमहे सभी जैसे झगड़े के बीच वास कर

मुहल्ले के नुक्कड पर विजय खडा होकर दोस्तों से हं
है । दोस्तो की जमात उसके इर्द-गिर्द इकट्ठी होकर ताल-

भोलादत्त कहता, "तेरे घर मे रहती है, और तेरे
उडती फिरती रहती है ?"

केतो कहता, "उस छोकरे को कहा से जुटा लाई

विजय कहता, "उस खुशनुमा गाडी को देखा है न

पटला कहता, "साला दूसरे के मुहल्ले मे आकर गार्ड
है । मुचिपाडा के थाने का ओ० सी० मेरे मौसाजी का
दिन खत्म कर देंगे !"

विजय ने कहा, "जानते हो, कल तालाब से एक म

"कितनी बडी मछली थी ?" भोलादत्त ने पूछा ।

"बीसेक सेर ।"

"तुझे कैसे पता चला ? तुम लोगों को खाने पर

विजय बोला, "साला ! मछली की चोइया देखकर
दान मे तीनेक सेर मछली की चोइया थी—रुपये-भर
के हर आदमी ने देखा है ।"

शुरू-शुरू मे इसी तरह चल रहा था । किसी दिन
गुल्ले की हांडी और किसी दिन रवडी ।

युवक गाडी लेकर मकान के सामने खडा होता था
चारों तरफ के खिडकी-दरवाजे पटापट बन्द हो जाते थे
सूराख से हर कोई झाककर देखता रहता था । जब म
था तब वह युवक दिखाई नही पडता था । लेकिन कभी
ही, तब उस पर नजर पड़ेगी ।

और सचमुच तब यह दिख जाता था ।

हरिपद चक्रवर्ती की लड़की को अपने साथ लिए घु
और धुआं उड़ाता हुआ आखों से ओझल हो जाया करता

रत था, इसका पता किसी को भी नहीं चलता था।

भोलादत्त कहता, "बताओ तो, वे लोग कहां जाते हैं?"

केतो कहता, "साला! एक दिन फ़ॉलो करूंगा..."

विजय कहता, "मैं मौके की तलाश में हूं, एक दिन पता लगाकर छोड़ूंगा। साला जाएगा कहां?"

मिस्टर पराशर चतुर व्यक्ति हैं। उसका यह कारोबार आज का नहीं है। कारोबार की शुरुआत लड़ाई खत्म होने के बाद से ही हुई। बंगाल में १९४३ ईस्वी में अकाल पड़ा और मिस्टर पराशर सुदूर पंजाब से गिद्ध की तरह उड़कर आया और कलकत्ते के पार्क स्ट्रीट में जमकर बैठ गया।

तब ऐसी हालत थी कि कूड़ेदान में एक रुपया फेंक देने से वह अशरफी होकर हाथ में लौट आता था। उसी युग की बात है।

मिस्टर पराशर कहता, "तब समय कुछ और ही था, मिस्टर राय! तब आप आते तो आपको मैं फ़िफ़्टी-सिक्स्टी कमीशन दे सकता था। तब अंग्रेज़ों का राज्य था। वे लोग हमारी भलाई करेंगे या अपनी? तब इनकम टैक्स का भी इतना झमेला नहीं था। दोनों हाथों से रुपया कमाया था और तमाम इंडिया में चोरी-छुपके फैला दिया था। तब आप क्यों नहीं आए?"

आनन्द राय हंसता और कहता, "तब मेरा जन्म ही कहां हुआ था, सर! था इन सबों की समझ ही मुझमें कहां थी?"

मिस्टर पराशर कहता, "फिर जब कांग्रेस का राज्य आया, उस समय भी मुनाफ़े में कोई कमी नहीं आई। मगर अब मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है।"

आनन्द राय कहता, "मगर आजकल मुवक्किल का कोई अभाव तो है नहीं। आजकल तो और भी वृद्धि हो गई है।"

"हुं, कहां वह ज़माना और कहां आज का ज़माना! उस तरह की पार्टी कहां है? कैपिटलिस्ट तो अब 'बाई' हो गए हैं। सारा पैसा ज़मीन के अन्दर समा गया है। पहले उसमें से कुछ पैसा फ़िल्म-इंडस्ट्री में लगाया जाता था, कुछ ज़मीन-जायदाद-मकान में और कुछ इस तरह की मौज मनाने में..."

"अब भी तो सिनेमा, फ़्लैट बनाने और मौज-मस्ती में कोई कमी नहीं आई

है, सर !"

मिस्टर पराशर भिज्ञ व्यक्ति की तरह मुसकरा देता था।

सिगरेट का कश लेकर और धुआं उड़ाता हुआ कहता, "कमी आई है; आई है मिस्टर राय, मैं नब्ज टटोल सकता हूं। अब वैसे कितने कैप्टेन क्लाइंट हैं ?"

"फिर वे कहां चले गए ?"

"सब ठंडे पड़ गए है।"

आनन्द राय ने कहा, "मुझे कुछ रुपयों की जरूरत है, सर !"

"उसी दिन तो आप तीन सौ रुपये ले गए थे!"

आनन्द राय ने कहा, "वह तो खर्च के मद में था। आपके आर्टिस्टों के पीछे खर्च करने में ही सारे रुपये खत्म हो गए।"

"क्यों, इतने रुपये क्यों खर्च हो गए ?"

"वाह, मैंने तो आपको इसका एकाउंट दिया है।"

"क्या हिसाब दिया है ?"

आनन्द राय ने कहा, "एकाउंट बुक देखिएगा तो आप समझ जाइएगा।"

"कौन-सी आर्टिस्ट है ?"

"आर्टिस्ट नंबर फिफ्टी सेवेन—सत्तावन !"

मिस्टर पराशर ने खाता बाहर निकाला। मोटी जिल्द मढ़ा खाता! जल्दी-जल्दी नम्बर मिलाकर पन्ना निकाला और नाम और पते को देखा।

"क्या नाम है ?"

"जयन्ती चक्रवर्ती! उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन। एक दिन ड्रेक्रॉन की एक साड़ी खरीद दी थी। उसी की कीमत तीस रुपया थी। उसके बाद डेढ़ सौ रुपये की सोने की कान की बाली। होटल में जो खिलाया है उसका बिल हुआ सत्तर रुपया। यह देखिए न, सब कुछ लिखा हुआ है। उसके बाद यह देखिए, गड़ियाहाट के मार्केट से बीस सेर वजन की एक कतला मछली खरीदकर उसकी मां को दे आया हूं। उनसे बताया था : यह मेरे तालाब की मछली है। मछली की कीमत ही एक सौ चालीस रुपये लिया है।"

"एक सौ चालीस रुपये की मछली ! कौन-सी मछली है, साहब—सोने की ?"

आनन्द ने कहा, "सोने की मछली क्यों होगी ? वैसी ही मछली, जैसी

कि हुआ करती है।"

मिस्टर पराशर ने कहा, "मछली देने से आर्टिस्ट को क्या फायदा हुआ ? इससे तो अच्छा रहता कि सोने का कोई गहना खरीद देते जो उसके काम में आता।"

आनन्द राय मुस्कराकर बोला, "आप क्या कहते हैं, सर ! आप बंगाली होते तो मछली की कद्र आपकी समझ में आती। बंगालियों को मछली खाने को मिल जाए तो आपके पैरों पर मस्तक टेक सकते हैं। साड़ी-गहना देने से जो काम नहीं हो सकता है, वह मछली देने से हो जाता है।"

मिस्टर पराशर ने कहा, "अच्छा, यह बात है !"

आनन्द राय ने कहा, "आर्टिस्ट नम्बर फिफ्टी सेवेन का आप मकान देखते तो हैरान हो जाते। वहां हर रोज़ आपकी यह खुशनुमा गाड़ी लेकर जाने पर सभी झांक-झांककर देखते हैं..."

"झांकने का मतलब ?"

"झांकेंगे नहीं ? उस गाड़ी की शक्ल देखकर लोगों के मन में सन्देह होता था। सोचते थे, लड़की फुसलाने वाली गाड़ी है। अबकी कोई दूसरी गाड़ी दीजिए जिससे कि भले मुहल्ले में आ-जा सकूं।"

मिस्टर पराशर ने कहा, "भला आदमी बहुत देख चुका हूं, मिस्टर राय, पार्क स्ट्रीट में बिजनेस करने के बाद कलकत्ते के भले आदमियों को बखूबी देख चुका हूं !"

"लेकिन यह कहने से तो नहीं होगा, मिस्टर पराशर ! मुझे ही भले आदमी के मुहल्ले में जाना पड़ता है, अगर लोग बेइज्जत करेंगे तो मुझे ही करेंगे।"

उसके बाद अचानक प्रसंग बदलकर कहा, "मुझे इस महीने का कमीशन दीजिए।"

मिस्टर पराशर हंस दिया।

"अभी तो महीने की पहली तारीख है, और आप कमीशन मांग रहे हैं ! अभी एकाउंट तैयार नहीं हुआ है।"

"सो आप समझिएगा, यह आपका निजी काम है। अभी कम से कम पार्ट-पेमेंट तो कीजिएगा। मैंने एक नया सूट बनवाया है, उसके बिल का अभी तक भुगतान नहीं किया है।"

"फिर अभी डेढ़ सौ रुपये ले जाइए।"

आनन्द राय को गुस्सा आ गया। बोला, "डेढ़ सौ रुपये ? आप कह क्या रहे हैं ? डेढ़ सौ रुपये में कहीं सूट बनता है ? कम से कम चार सौ रुपये मुझे देना ही पड़ेगा।"

मिस्टर पराशर ने दराज से चेक की बही निकाली। उसकी मुद्रा इस प्रकार दिख रही थी जैसे निकालने में बड़ी तकलीफ का अहसास हुआ हो।

बोला, "आज तीन सौ दे रहा हूं, बाकी कल दूंगा।"

"नहीं-नहीं, तीन सौ मे मेरा काम नहीं चलेगा, मिस्टर पराशर, कम से कम साढ़े तीन सौ दीजिए। कल आपको फिर से तीन सौ देना होगा, वरना मेरी तो जान ही निकल जाएगी। अभी तो मछली की कीमत बाकी ही है।"

अंततः साढ़े तीन सौ रुपये का चेक जेब में डालकर आनन्द बाहर निकला। तब एक गाड़ी आकर पोर्टिको में खड़ी हुई। गाड़ी से एक भला आदमी उतरा जिसके साथ जयन्ती जैसी एक लड़की थी।

जाना-पहचाना ही आदमी था। आनन्द राय ने हाथ उठाकर शुभकामना व्यक्त की।

उसके बाद वह सीधे सड़क पर आया। एक सिगरेट जलाई फिर सड़क पार करके दूसरी तरफ के फुटपाथ पर पहुंचा और विपरीत दिशा की गली के अन्दर चला गया। वहां एक होटल था। उस होटल में कवाब मिलता था। होटल में कई गन्दी मेज-कुर्सियां थी और उन पर कई तहमद पहने व्यक्ति बैठे थे।

आनन्द एक कुरसी पर जाकर बैठ गया।

"गोश्त-रोटी है ?" उसने पूछा।

यह पहले दिन की बात है।

पहले दिन जयन्ती थोड़ा-बहुत सहम गई थी। सुबह घर से निकली थी, दोपहर हो गई, फिर भी वापस नहीं आई। दोपहर बीतने के बाद तीसरा पहर आया, फिर भी वापस नहीं आई। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान में हरिपद चक्रवर्ती दफ्तर से वापस आया।

पुष्प बोली, "अब तुम्हे कुछ कहना न होगा, आनन्द ने कहा है कि वही सब कर देगा।"

"कर देगा का मानी ?"

पुष्प बोली, "वह कोई दूसरा मकान ठीक करा देगा।"

हरिपद चक्रवर्ती बोला, "बस, तुम भी जैसी हो ! आजकल घर का इन्तजाम करना क्या आसान है ! अगर कोई भगवान की कामना करे और भगवान को ला दे, ऐसा कौन माहिर लड़का है, सुनू तो जरा !"

पुष्प गुस्सा हो गई, "अपने आप तो तुम किसी भी काम के नही हो ! जयन्ती ने फिर भी एक मित्र बनाया है, उसी पर भरोसा है। तुमने कभी इतनी बड़ी मछली हमें खिलाई है ?"

मछली वास्तव मे अच्छी थी। हरिपद चक्रवर्ती ने बहुत दिनों से इतनी बडी मछली नही खाई थी। क्या ही स्वाद था ! कितना मीठा ! जैसे एक-एक टुकड़ा राजभोग हो।

पुष्प बोली, "आनन्द के अपने तालाब की मछली है।"

हरिपद बोला, "तालाब की मछली ? उसके अपने तालाब की ? कितना बड़ा तालाब है ?"

"मैंने देखा थोड़े ही है !"

रात में सोने के वक्त हरिपद ने दुबारा पूछा, "जयन्ती तो अब तक लौटकर नही आई।"

पुष्प भी लेटी हुई थी। बोली, "अभी आएगी, तुम इतनी फिक्र काहे करते हो ?"

"वाह जी, लड़की जवान हो गई है ! भला सोचू क्यों नहीं ?"

पुष्प बोली, "नही, सोचो मत, आनन्द के साथ निकली है, जरा घूम-फिर रही है, सो घूमे। मोटर पर चढ़ाकर सैर कराओ, तुम्हारी ऐसी औकात नहीं है।"

"लेकिन तुम्हारी लड़की क्या गाड़ी पर चढने से ही रानी हो जाएगी ?"

"क्यों नही होगी ? तुम मुझे कभी मोटर पर लेकर सैर-सपाटा करने निकले हो ? तुम्हारे हाथ मे पड़कर मैं सारी जिन्दगी तड़प-तड़पकर मरती रही। तुम्हारी लड़की भी तड़प-तड़पकर मरती रहे, तुम क्या यही चाहते हो ?"

हरिपद चक्रवर्ती ने अब एक भी शब्द नहीं कहा। करवट बदलकर सोने की जी-जान से कोशिश करता हुआ आंखें मूंदे पड़ा रहा।

वह पहला दिन था। आनन्द बाहर काउंटर पर बैठा एक विलायती पत्रिका के पन्नों को उलट-पुलट रहा था। मिस्टर पराशर काम-काजी आदमी है। काम-काजी कहने का मतलब है जिम्मेदार। इतने एजेंटों को संभालने से लेकर इतनी-इतनी लड़कियों की व्यवस्था करनी पड़ती है। उसके बाद आर्थिक व्यवस्था। आर्थिक व्यवस्था ही मिस्टर पराशर के लिए सबसे कठिन काम है। हर कोई रुपया ऐंठना चाहता है। सभी को मालूम है कि इस कारोबार में पैसा है, इसलिए सभी रुपया ऐंठना चाहते हैं।

विशाल फ्लैट! इस फ्लैट में दिन के वक्त वैसी कोई घटना घटित नहीं होती है। निस्तब्धता तैरती रहती है। तब सिर्फ अजनबियों का आना-जाना लगा रहता है। जो पहले-पहल इस क्षेत्र में आती हैं, उन्हें शुरू में दोपहर के वक्त लाया जाता है। उस वक्त वे यहां के हाव-भाव से अभ्यस्त होती हैं, उनका संकोच दूर होता है। खाने के लिए उम्दा खाना दिया जाता है, मालिश किया जाता है, हाथ-पैर दबाए जाते हैं।

आनन्द पत्रिका पढ़ रहा था और बार-बार अन्दर के कांच के दरवाजे की ओर ताक रहा था।

"मिस्टर पराशर, मेरी आर्टिस्ट तो अब तक लौटकर नहीं आई…?"

मिस्टर पराशर ने कहा, "आज पहला दिन है न, अब आ ही चली।"

"देखिएगा, मिस्टर पराशर, किसी दिन यह बड़ी ही अच्छी आर्टिस्ट साबित होगी। किसी दिन मेरी आर्टिस्ट बहुत नाम पैदा करेगी। तब मेरा कमीशन आपको बढ़ाना होगा।"

तभी जयन्ती आती हुई दिख पड़ी।

आनन्द ने उसकी ओर वेधक दृष्टि डाली। नर्स जयन्ती को काउंटर तक ले आई।

आनन्द जयन्ती की मुख-मुद्रा को भलीभांति परीक्षा करने लगा: खुश है या नाखुश, क्रोध में है या ऊब में? उसका पूरा चेहरा जैसे आग की तरह लाल हो। मानो, देह का तमाम रक्त चेहरे पर आकर ठहर गया हो।

सीधे आकर आनन्द से सटकर खड़ी हो गई। उस वक्त उसकी देह से मीठी-मीठी इत्र की खुशबू निकल रही थी।

आनन्द ने चाहा कि वह खड़ा होकर जयन्ती के कंधों को झकझोर दे। जैसे हिलाने-डुलाने से उसके मुंह से सारी बातें बाहर निकल आएंगी।

"क्या हुआ ? चेहरा इतना लाल क्यों दिख रहा है ? लाज लग रही है ?"

जयन्ती के मुह से कोई शब्द नहीं निकला। उसके बाद आनन्द के साथ जाती हुई बोली, "सचमुच मुझे बड़ी शर्म लग रही थी।"

"शर्म क्यो लग रही थी ?"

"शर्म नहीं लगेगी ? मेरी साड़ी-ब्लाउज सब उतारकर मेरे पूरे जिस्म को सहलाने लगी।"

आनन्द हंस पड़ा, "उससे क्या हुआ, मैंने तो सहलाया नहीं है। वह तो नर्स है—औरत !"

"औरत होने से क्या होगा ? लेकिन वैसा क्यों कर रही थी ?"

"तुम्हें अच्छा नहीं लगा ?"

"हां, बड़ा ही अच्छा लग रहा था।"

"फिर ? उसे मॉसाजिंग कहा जाता है।"

तब वे दोनो उतरकर पोर्टिको मे आ चुके थे। गाड़ी वहीं खड़ी थी। दोनो गाड़ी के अन्दर जाकर बैठ गए। आनन्द ने गाड़ी को स्टार्ट किया। गाड़ी सड़क पर तीव्र गति से भागने लगी।

जयन्ती ने कहा, "अच्छा, इसके लिए तुम्हें पैसा खर्च करना पड़ा ?"

"वाह, पैसा खर्च नही होगा ? बेवजह कोई आराम पहुंचाता है ?"

"लेकिन, बगल के कमरे में भी मेरी ही जैसी एक लड़की की आवाज़ सुनाई पड़ी। तब समझ में आया कि और भी बहुत-सी लड़किया यहां आती हैं। क्या करने आती हैं वे ? मॉसाज कराने ?"

आनन्द एकाएक पूछ बैठा, "तुमने खाना खा लिया है ?"

जयन्ती ने कहा, "हां; मगर वह कौन-सी चीज दी ? शरबत ?"

आनन्द ने पूछा, "कौन-सी चीज ?"

जयन्ती बोली, "वही जो बड़ी ही मीठी और तीखी जैसी लग रही थी।"

आनन्द ने पूछा, "पीने में अच्छी नही लगी ?"

जयन्ती ने कहा, "हां, पीने में बड़ी अच्छी लगी।"

"शरबत था। अभी जो तुम इतनी खूबसूरत दिखती हो, इसका कारण उसका पीना ही है।"

"लेकिन पीने से बड़ी नीद आती है।"

"नीद तो लगेगी ही। अच्छी चीज पीने से नीद आती ही है। हां, तो अब घर लौटोगी या कही और जाओगी ?"

जयन्ती बोली, "तुम खाना नही खाओगे ?"

आनन्द ने कहा, "मैंने वही खाना खा लिया है। मेरे लिए चिन्ता करने की कोई जरूरत नही। बताओ, कहां चलोगी ?"

जयन्ती ने कहा, "तुम्हारा घर मैंने अब तक नही देखा है, अपने घर पर ले चलो।"

"गरीब के घर पर चलकर क्या करोगी ? वह बिल्कुल मरुभूमि है।"

"मरुभूमि का मानी ?"

"यानी वहां कोई नही है, कुछ भी नही। एक खाट है। जरूरत पड़ने पर वहां जाकर सो रहता हूं। इसके सिवा मेरा अपना कोई नही है।"

"बाप रे, तुम्हारे पास इतने पैसे हैं और परिवार मे कोई नहीं ? फिर तुम्हारे इतने पैसों को कौन भोगेगा ?"

आनन्द बोला, "और कौन भोगेगा, भोगेगी मेरी पत्नी···"

"तुम्हारी पत्नी ? तुम्हारी पत्नी कहां है ?"

"आज नही है, मगर कभी न कभी होगी ही।"

"तो यही कहो न !"

आनन्द की बातें सुनकर जयन्ती को जैसे निश्चिन्तता का बोध हुआ।

"तुमने तो यों बातचीत की जैसे तुम्हारी शादी हो चुकी हो। सच-सच बताओ, तुम कभी न कभी शादी करोगे तो ?"

आनन्द ने कहा, "क्या बात है ? शादी क्यों नही करूंगा ? हमेशा कुआरा ही रहूंगा ? फिर बीमार पड़ने पर मेरी देख-भाल कौन करेगा ? मेरी सेवा कौन करेगा ?"

जयन्ती ने कहा, "आदमी सेवा पाने के लिए ही शादी करता है ?"

आनन्द ने कहा, "सेवा नहीं तो और क्या ? पत्नी से कोई प्रेम नहीं

है। चाहे प्रेम कहो, चाहे मौज—यह सब शादी के पहले ही होता है। जिस तरह अभी मैं तुमसे प्रेम करता हूं···"

जयन्ती सिहर उठी।

"जानते हो, तुमसे मुलाकात होने से पहले मैं किसी के प्रेम के चक्कर में नहीं फंसी थी ?"

आनन्द ने कहा, "प्रेम तुमने नहीं किया है, लेकिन रास्तों में क्या चक्कर नहीं लगाया है ?"

"घर मे रहना अच्छा नहीं लगता है। तुम मेरा मकान देख ही चुके हो—उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन ! वहां आदमी-कहीं वास कर सकता है ? जानते हो, निचले मंजिले पर एक किरायेदार रहता है, उसकी औरत को साल-दर-साल बच्चा होता रहता है ? मुझे बुरा लगता है···"

"लगता है, वह आदमी अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता है।"

"खाक प्यार करता है ! ऐसे प्यार के मुंह मे आग लगे। शर्म भी नहीं लगती है। मर्द औरत का पेट कभी खाली नहीं रहने देता है। कभी-कभी जी में होता है कि उस मर्द की हत्या कर डालूं···"

आनन्द हंसने लगा।

"तुम्हारी भी शादी होगी तो तुम्हें साल-दर-साल बच्चा होगा।" आनन्द ने कहा।

'कभी नहीं ! हमारे दोमंजिले पर हिमायु बाबू नाम का एक आदमी रहता है। उसके ज्यादा बाल-बच्चे नहीं हैं। सिर्फ एक ही लड़का है।"

"जो लड़का तुम्हारा पीछा करता रहता है, वही न ?"

"हां; तंग मोहरी की लंबी काली पैंट पहनकर चक्कर काटता रहता है। सड़क के नुक्कड़ पर खड़ा होकर लड़कियों की ओर ताकता है और सिसकारी देता है।" जयन्ती ने कहा।

"तुम्हारा मकान एक अजीब चीज है ! चाहे जो कहो।"

जयन्ती ने एकाएक कहा, "चलो, सिनेमा चलें।"

"सिनेमा ? इससे तो अच्छा है कि कहीं दूसरी जगह चलो। गाड़ी है ही। चलो, जहां दो आंखें ले जाएं—चाहे बारासात, या बशीरहाट, या इटिण्डा घाट। और अगर यह अच्छा न लगे तो ग्रैंड ट्रंक रोड पकड़कर नलेरहाट, तोपचांची,

हजारीबाग चलो…"

पहला दिन ! पहले दिन ही जयन्ती को बड़ा अच्छा लगा। पहला दिन सभी को बहुत अच्छा लगता है। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन से बाहर निकलकर यह जैसे स्वर्ग के सिंहद्वार पर पहुंचना है। एकमंजिले के जीने पर जाकर फटी कथरी और मैली तोशक से साक्षात्कार करना नहीं है और न तीनमंजिले पर जाकर अपने घर की लज्जाहीन दरिद्रता से साक्षात्कार करना ही। एक पैसा कहीं अधिक खर्च न हो जाए, मां की यह दुश्चिन्ता यहां नहीं है। यहां है गाड़ी पर चढ़कर सैर-सपाटा करना. बदन में फरहरी हवा लगाना। मस्तक के ऊपर नीला आकाश और आनन्द की जेब में अपार पैसा है। खर्च करना है, करो; चाय पीनी है, पियो; घूमना है, घूमो। जैसे जयन्ती इसी आस्वाद की बहुत दिनों से कामना कर रही थी। चलो, जितनी दूर तक चलने की इच्छा है, चलो; आगे बढ़ते जाओ।

हिमांशु बाबू का लड़का रात दस बजे अड्डेबाजी करने के बाद उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान में वापस आ रहा था। एकमंजिले के किरायेदार के मकान से तब गली में रोशनी आकर तैर रही थी। आज मजलिस ठीक से जम नहीं पाई थी। भोलादत्त की जेब में चार आने पैसे थे।

केतो को गुस्सा हो आया था और उसने कहा था, "तुझे शर्म नहीं आती, है, भोला ! माल भरपूर गटकोगे और जेब में लेकर आते हो चार आने पैसे ! हर रोज मुझे गांठ से पैसा निकालकर माल नहीं पिला सकूंगा, कहे देता हूं…"

पटला यों मस्त आदमी है। झगड़े की भनक पाकर बोला, "चुप रह केतो, शाम होते न होते दिमाग गरम मत कर।"

पटला इस तरह की बातें बहुत सुन चुका है। शुरू-शुरू में आपस में चंदा करके शराब पीने का नियम था। हर कोई बराबर चंदा देता था। कुल तीन रुपये ही में नशा आने लायक माल मिल जाता था। इसका मानी यह कि हर व्यक्ति को बारह-बारह आना पैसा देना पड़ता था। उसके साथ थोड़ा-बहुत चना-चूर और चाट की जरूरत पड़ती थी। बारह आने में ही इस तरह सस्ते में नशा

आ जाए, ऐसी चीज कलकत्ता शहर में क्या है ? मयूरभंज के अंधेरे रास्ते में फुटपाथ पर खड़ा होकर गिलास से गटागट पीने के बाद तुम्हें अलादीन के अजीब चिराग का पता चल सकता है। मान ले सकते हो कि तुम बहुत बड़े आदमी हो गए हो। तुम्हारे पास एक अच्छा-सा मकान है, तुम दो हज़ार रुपये तनख्वाह की नौकरी करते हो, तुम गाडी हांकते हुए कलकत्ता पार करके बहुत दूर जा रहे हो—या तो जसोर रोड, या बारासात, या बशीरहाट, या इटिण्डाघाट। या ग्रैंड ट्रंक रोड पकड़कर सीधे नेतरहाट, तोपचाची, हजारीबाग···

दस बजे के बाद नशा अपना रंग दिखाने लगा। विजय उस वक्त उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की ओर वापस जा रहा था।

"कौन ?"

एकाएक गाड़ी की आवाज सुनकर उसकी हालत ऐसी हो गई जैसे नशा दूर हो गया हो। लगा, जैसे गाड़ी उसे अब कि तब धक्का लगा देगी। विजय तत्काल रास्ते से हटकर फुटपाथ की ओर जाने लगा। लेकिन तब जो घटित होना था, घट चुका था। गाड़ी लड़खड़ाती हुई विजय की गरदन पर चढ़ गई।

गाड़ी का ब्रेक ठीक वक्त पर ही लगाया गया था, लेकिन संभवतः कुछ देर हो चुकी थी। धक्का लगते ही विजय जमीन पर लुढ़क पड़ा।

जयन्ती के मुंह से 'रोको-रोको' शब्द निकला।

आनन्द गाड़ी के दरवाजे को खोलकर ज्योंही विजय को उठाने आया, विजय मारने के लिए दौड़ा, "गाड़ी चला रहे हैं और आंख से दिख नहीं रहा है ! सूअर का बच्चा कहीं का !"

उसके बाद जयन्ती पर ज्योंही उसकी दृष्टि गई, उसका दिमाग गरम हो गया।

"लड़की लेकर मौज मनाने निकले हैं इसलिए सड़क की तरफ ध्यान नहीं देते हैं ? अगर मैं दबकर मर जाता ?"

आनन्द ने कहा, "इतना चिल्ला क्यों रहे हैं ? आपको क्या हुआ ?"

"आप आंखें दिखा रहे हैं ? गाड़ी से दबाकर आंखें दिखा रहे हैं ? मालूम है, मैं आपके नाम से पुलिस केस कर सकता हूं।"

"जाइए, जाइए···"

आनन्द भी बदमाशी में उन्नीस नहीं पड़ता था। बोला, "जाइए, जाइए,

ज्यादा शान मत दिखाइए। आनन्द राय को पुलिस का भय मत दिखाइए।"

विजय तनकर खड़ा हो गया और आनन्द के सामने जाकर बोला, "मौज मनाने चले हैं और उस पर पराये मुहल्ले में आकर आंख दिखाते हैं? खबरदार, जबान संभालकर बातचीत कीजिए!"

आनन्द राय ने जब देखा कि उसे कोई खास चोट नहीं लगी है तो जयन्ती से कहा, "चली आओ, ठर्रा पीने के कारण साले का दिमाग बिगड़ गया है।"

"क्या कहा, मैं पियक्कड़ हूं?"

"हां-हां; पियक्कड़ को पियक्कड़ नहीं कहूं तो क्या भला आदमी कहूं? नशे में धुत होकर घर लौटने में शर्म नहीं आती? विलायती शराब पीने का पैसा नहीं है तो ठर्रा क्यों पीता है? चली आओ जयन्ती!"

विजय का खून खौल उठा। ठर्रे के साथ बाईस साल का खून मिलकर दिमाग पर चढ़ गया।

बोला, "साले, ठर्रा पिया है, तो ठीक किया है। तेरे बाप के पैसे से ठर्रा पिया है?"

"साले!"

आनन्द अब खुद को संयत नहीं रख सका। बात करते-करते विजय के गाल पर कसकर थप्पड़ जमा दिया और विजय उसी क्षण जमीन पर गिर पड़ा।

"साला फिर बाप के नाम से गाली दे रहा है!..."

तभी नीलमणि हालदार लेन की सड़क पर एक-एक कर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। नीलमणि हालदार लेन की सड़क पर काफी रात तक लोगों का आना-जाना लगा रहता है। कोई तमाम दिन की झंझटों के बाद घर लौटता है और कोई सिनेमा देखकर वापस आता है। इस तरफ के लोगों के लौटने का एकमात्र रास्ता यही है।

शोर-शराबे से आस-पास के मकानों की खिड़कियां फटाफट खुल गईं और लोग अंधेरे घरों से झांक-झांककर रास्ते की तरफ देखने लगे।

राधा बुआ तब जगी हुई थी। नेड़ी को खाना खिलाने और नाती-नातिनियों को सुला लेने के बाद ही उसे राहत मिलती थी। उसके बाद वह दूसरे दिन के लिए गोबर लीपकर, दो-चार जो बरतन रहते थे, मल लेती थी। फिर रसोई घर को धोकर एक किनारे उपले और कोयला सजाकर रख देती थी। ठीक उसी

वक्त रास्ते में शोरगुल मचने लगा।

"ओ भव, भव, शोरगुल क्यों हो रहा है ? लगता है, हमीं लोगों की गली के सामने मारपीट हो रही है।"

भव तब तहमत उतारकर बिछावन के एक कोने मे लेटा-लेटा बीड़ी का आखिरी कश खींच रहा था। मारपीट की आवाज़ उसके कानों मे भी पहुंची थी।

"रास्ते मे कौन किसको मार रहा है, इसके लिए आप मायापच्ची मत करें।" उसने कहा।

राधा बुआ बोली, "हम लोगों के मकान के सामने हो रहा है, आवाज़ पहचानी जैसी लगती है।"

उसके बाद भव उत्सुकता दबाकर रह नहीं सका और सदर दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आया।

न केवल उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के एकमंज़िले से ही आदमी बाहर आया बल्कि दोमंज़िले के हिमांशु बाबू के मकान में भी तब हलचल मच गई थी। हिमांशु बाबू की पत्नी जागकर पुकारने लगी, "अजी ओ, उठो, उठो, लगता है जैसे हमारे विजय की आवाज़ हो..."

हिमांशु बाबू को दिल की बीमारी है। डॉक्टर ने शाम होने से पहले ही खा लेने को कहा है। डॉक्टर ने बार-बार हिदायत की थी, 'कभी घबराइएगा मत, घबराने से परेशानी उठानी पड़ेगी...'

हिमांशु बाबू की पत्नी ने कहा था, 'आप इन्हें अच्छी तरह समझा जाएं, मेरी बात पर कान नहीं देंगे।'

डॉक्टर ने कहा था, 'वे वयस्क आदमी हैं, बचपना करने से काम नहीं चलेगा। खुद भला-बुरा समझ सकते हैं।'

'सो होने से क्या होगा ! वे हर बात में मायापच्ची करते हैं, जैसे हर चीज़ मे उन्हें दखलन्दाज़ी करनी चाहिए। मैं रसोईघर में क्या बना रही हूं, यह भी उनसे अनदेखा नहीं रहना चाहिए।'

'क्यों, रसोईघर मे जाकर देखने से उन्हें क्या लाभ होता है ? खाने बैठेंगे तो नज़र पड़ेगी ही।'

पत्नी ने कहा था, 'सो कहने से कौन सुनता है ! रसोईघर में मेरे पीछे-पीछे

चक्कर काटे बिना उन्हें चैन नहीं मिलता है।'

डाक्टर ने झिड़कियां सुनाई थी, 'नहीं; वहां उन्हें जाने मत दें। आपका लड़का तो है ही, वह तो काम-काज कर ही सकता है। लड़का जब बड़ा हो जाता है तो हर काम में बाप की जरूरत नहीं पड़ती है। अब लड़के को ही गृहस्थी की देख-भाल करनी चाहिए।'

'लेकिन उसे भी तो कॉलेज जाना पड़ता है, काम-काज करना पड़ता है!'

'कॉलेज रहे, काम-काज भी रहे; काम-काज रहने से गृहस्थी की देखरेख नहीं करनी चाहिए? उस पर ही सारी जिम्मेदारी थोपकर आप इनकी थोड़ी-बहुत देख-भाल करें। लड़के की शादी हो ही चुकी है, उसकी पत्नी अब रसोई-पानी का इन्तजाम करे।'

'तब तो हो चुका! वह सिनेमा देखेगी, साज-सिंगार करेगी या मेरी रसोई की देखभाल करेगी? हम लोग बूढ़ा-बूढ़ी जब तक हैं, तब तक हमें मुक्ति नहीं मिलने जा रही है।'

मुहल्ले का डॉक्टर है, इस घर के बारे में उसे एक-एक जानकारी है। उसने अधिक बातचीत नहीं की। बैग को हाथ में संभालकर और फीस के पैसे जेब के हवाले कर चला गया था। लेकिन फिर भी पत्नी ने हिमांशु बाबू को बड़ी सावधानी के साथ रखा था। दिन-भर जोर-जबर्दस्ती लिटाकर रखती थी।

लेकिन उस दिन शोरगुल सुनकर पत्नी की नींद टूट गई।

वह फिर से पुकारने लगी, "अजी, उठो, उठो···अजी ओ, सुन रहे हो?"

हिमांशु बाबू की इतनी तकलीफ में आई नींद आकस्मिक पुकार से टूट गई। बोले, "कौन?"

"सुन रहे हो! आंख मलो, सुन रहे हो! बाहर शोरगुल हो रहा है? लगता है, हम लोगों के विजय के गले की आवाज है!"

हिमांशु बाबू ने कहा, "नीचे उतरू?"

"नीचे उतरने को तुमसे कौन कहता है? मैं तो सिर्फ यही कह रही हूं कि एक बार खिड़की से झांककर देखो।"

हिमांशु बाबू कमजोर आदमी ठहरे, फिर भी कराहते हुए हिलने-डुलने की कोशिश की।

बहू तब अपने कमरे में सोई हुई थी। उस कमरे के सामने भी जाकर सास

ने पुकारा, "गोपा, ओ बहू, सोई हुई हो क्या ?"

जब उत्तर न मिला, दरवाजे की जंजीर खटखटाने लगी। "बाप रे, बहू कितनी नींद मे है ! विजय के आने के पहले ही बेखबर सो चुकी है ··"

खट् से सिटकनी खोलने की आवाज सुनते ही सास ने मुह घुमा लिया।

बोली, "तुम तो नींद मे बेखबर पडी हो, उधर नीचे शोरगुल सुन रही हो ? विजय की आवाज सुनाई नही पड रही है ?"

इतना कहकर सास वहां रुकी नहीं। फिर से बरामदे को पारकर अपने कमरे में चली आई।

हिमांशु बाबू खिडकी से झांक रहे थे।

"एक मोटरगाडी खडी दिख रही है। किस चीज की गाडी है ?" उन्होंने पूछा।

उधर हरिपद चक्रवर्ती तीनमंजिले से ही पुकारने लगा, "ओ जयन्ती··· जयन्ती···"

उसमें नीचे उतरने का साहस न था। जयन्ती की मा ने भी कहा, "जयन्ती को पुकारो न, ऊपर चली आए ! वहां भीड़ में मुहजली क्या कर रही है ?"

हरिपद बोला, "वह गाडी किसकी है ?"

पुष्प बोली, "वह बड़ी-बड़ी कतला मछली जिसने दी थी, उसी की है। आनन्द को सबने घेर लिया है जी, तुम जरा उन लोगों को ऊपर बुला लो।"

"इतनी रात तक वे दोनों कहां थे ?"

पुष्प गुस्साकर बोली, "गाड़ी है इसलिए दिन-भर घूमते रहे। वे लोग घूमते-फिरते हैं तो तुम्हें क्रोध क्यों आता है ? बाद में जो कहना होगा, उनसे कहना, अभी ऊपर बुला लो। कहो कि ऊपर चले आएं।"

नीचे रास्ते में अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

नीलमणि हालदार लेन ने जैसे रातों-रात हाट का रूप ले लिया हो। तभी सिनेमा का आखिरी शो खत्म हुआ। औरतों और मर्दों की जमातें उनतीस बटे तीन बटे छह नंबर मकान के सामने आकर खड़ी होने लगीं।

"साला दूसरे मुहल्ले का लडका मुझे पियक्कड़ कहेगा ?"

एकाएक कोई उधर से दौड़ता हुआ आया। भोलादत्त था। पता नहीं कौन उसके घर मे जाकर खबर पहुंचा आया कि पराये मुहल्ले के एक लड़के ने विजय सरकार को मार-मारकर धराशायी कर दिया है। वह वहीं से चिल्लाता

हुआ आया, "कौन साला विजय को मार रहा है, देख लूंगा···"

सिर्फ भोलादत्त ही नहीं, पटला है, केवो है। जो लोग मयूरभंज में एक साथ माल पीने जाते हैं, सभी आ गए। तमाशा शुरू हो गया। मुहल्ले में हो-हल्ला मच गया।

"विजय सरकार को पराये मुहल्ले का लड़का मार रहा है, यह हम बरदाश्त नहीं करेंगे।"

विजय तब देह की धूल झाड़कर खड़ा हो चुका था।

"आ साले, तुझे देख लूंगा; देख लूं तुझमें कितनी हिम्मत है। आ मुझसे लड़···"

आनन्द राय कमीज की बांह मोड़कर मुकाबले के लिए खड़ा हो गया।

"अच्छी बात कही और उस पर गाली-गलौज करेगा?"

"गाली-गलौज पहले तूने किया है या मैंने?"

"मैंने कब पहले गाली दी? जयन्ती, तुम गवाह हो···"

कोई एक आदमी बोल उठा,"आपने उसे एकाएक धक्का क्यों दिया, साहब? गाड़ी चलाते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि हमें आदमी में गिनें ही नहीं। हमें आप गाय-बकरी-भेड़ समझते हैं?"

जयन्ती ने कहा, "चलो आनन्द दा, यहां से चलो, तुम्हें अकेले में पाकर ये लोग तुम्हें अपमानित करेंगे···"

आनन्द भी हटने वाला जवान न था।

उसने कहा, "अकेले पाकर अपमानित करेगा—इसका मानी? मैं इन लोगों से डरनेवाला जीव नहीं हूं। देखना है कि किसके बदन में कितनी ताकत है!"

"देख नहीं रहे हो कि यह ठर्रे के नशे में है, उसका दिमाग काबू में नहीं है।"

ऊपर से हरिपद चक्रवर्ती के गले की आवाज तैरती हुई आई, "ओ जयन्ती, वहां क्या कर रही है, ऊपर चली आ···"

हिमांशु बाबू ने खिड़की से झांककर देखा। लेकिन चिल्लाने की ताकत उनके कलेजे में न थी। डाक्टर ने उन्हें घबराने से मना किया है। फिर भी उन्होंने चिल्लाकर पुकारा, "अरे विजय, वहां क्या हुआ?"

राधा बुआ बाहर निकलकर सब देख-सुन रही थी। सीधे आकर बोलीं,

"तुम लोगो को शोरगुल करने की कोई और जगह नही मिली ? मेरी गर्भवती लडकी बगल के कमरे में लेटी हुई है, तुम लोग जरा उधर हटकर गाली-गलौज करो···"

भवदुलाल रास्ते पर खडा था।

उसने अपनी सास से कहा, "आप चुप रहिए, मां ! आप चुप रहिए, आप उन लोगो के झगड़े के बीच मत कूदिए।"

तभी भोलादत्त मैदान में कूद पडा।

आते ही उसने दोनो व्यक्तियों को अलग कर दिया। बोला, "क्या हुआ है ? इतना शोर-शराबा क्यो ?"

आनन्द राय ने भोलादत्त की ओर ताककर कहा, "आप कौन हैं ?"

भोलादत्त बोला, "मैं चाहे कोई होऊं, आप किसे गाली-गलौज कर रहे हैं ?"

"मैं आपको कैफियत देना नही चाहता।" आनन्द राय ने कहा, "जहां तक गाली-गलौज की बात है, मैंने पहले शुरू नही किया है, उसी ने शुरू मे मुझे गाली दी है···"

जयन्ती आनन्द का पक्षपात करती हुई बोली, "हां, मैं गवाह हूं, जहां तक गाली-गलौज की बात है, हिमांशु बाबू के लडके ने ही उसकी शुरुआत की है।"

केतो ने जयन्ती को फटकारा, "आप इन दोनों के बीच क्यों टपकती है ? भोला ने आपसे थोड़े ही पूछताछ की है ? जिससे सवाल किया गया है, वही जवाब देगा।"

आनन्द ने कहा, "मैंने तो बताया ही कि पहले उसने गाली-गलौज की शुरुआत की है। मैं गाड़ी चलाते हुए आया और यहां मैंने अपनी गाड़ी खड़ी की। ठर्रा पीकर आया और लडखडाकर गिर पड़ा···"

भोलादत्त ने आनन्द की नेकटाई पकडकर झकझोर दिया, "खबरदार, मुह से गाली मत निकालो ···"

"मैंने कब गाली दी ? मैंने तो सिर्फ यही कहा कि शराब के नशे में रहने के कारण लड़खडाकर गिर पडा···"

"फिर ?"

भोलादत्त ने आनन्द राय को दुबारा बुरी तरह झकझोर दिया।

जयन्ती फूट-फूटकर रोने लगी, "अजी, ये लोग मेरे आनन्द को मार रहे हैं…"

केतो ने कहा, "चुप रहिए, आप क्यों रो रही हैं ? उस्ताद ने आपसे तो कुछ कहा नहीं है।"

भोलादत्त तब आनन्द की ओर मुखातिब होकर कह रहा था, "अपनी खुशी से उसने शराब पी है, अपने पैसे से शराब पी है, कोई आपके बाप के पैसे से तो शराब नहीं पी है न ! हम लोगों का देश आजाद है, अपनी इच्छा के अनुसार काम करने के लिए हर कोई स्वतन्त्र है। आपकी गांठ में पैसा है तो आप भी शराब पीजिए, किसी साले को कुछ कहने का अधिकार नहीं है। शराब कौन नहीं पीता है ? जिसके पास पैसा नहीं है, सिर्फ वे ही लोग नहीं पीते हैं।"

आनन्द ने कहा, "मैंने तो यह नहीं कहा, मैं तो यही कह रहा था…"

"फिर वही बात। आपने उसे पियक्कड़ कहा है न !"

"तो शराब पीकर लड़खड़ाकर गिर पड़े तो पियक्कड़ कहना भी अपराध है ? आप यहां के सभी से पूछ लें, हर कोई गवाह है, वे ही बतायें कि मैंने अन्याय किया है या इन्होंने ?"

जयन्ती रो दी, "आप लोग इन्हें छोड़ दें, क्यों पकड़े हुए हैं ?"

भोलादत्त ने जयन्ती की ओर मुड़कर कहा, "क्यों छोड़ दूं ?"

विजय बगल से बोला, "नहीं उस्ताद; छोड़ना ही होगा तो बेइज्जत करके छोड़ेंगे।"

राधा बुआ को मन ही मन बड़ा मजा मिल रहा था। अच्छा हुआ कि छोकरा पिट गया। ऊपर से नखरा में लेडी की ओर ताकना अब दूर करती हूं।

मौसी मिलते ही फिर बोली, "तुम लोग थोड़ी दूर जाकर चिल्लाओ। कहा न, कि मेरी गर्भवती लड़की बगल के कमरे में सोई हुई है…"

"आप फिर क्यों बातें कर रही हैं, मां ?"

मधुलाल ने अपनी सास को खामोश रहने को कहा, "आप उनसे कुछ भी मत कहें," वह फुसफुसाया, "देख नहीं रही कि वे शराब के नशे में हैं !"

"बाप रे, यह बात है ! छि: छि:, किस तरह के मकान में रह रहे हैं हम ! तभी न तुमसे कहा था : यह मकान अच्छा नहीं है। मृष्टिपर का घाट भी

अजीब है ! हरामजादे मकान-मालिक के मुंह पर झाड़ू लगाऊं—एक बार हरामजादे मकान-मालिक पर निगाह पड़ जाए तो उसकी नाक नोच लूं…"

एकाएक केतो ने सवाल किया, "आप किस मुहल्ले में रहते हैं ?"

"मैं चाहे जहा कही रहूं," आनन्द ने कहा, "आपको इसकी जरूरत ?"

"साले, तुम दूसरे मुहल्ले से आकर हमारे मुहल्ले की लड़की के साथ मौज मनाओगे ? और कोई दूसरा मुहल्ला नही मिला ?"

वृद्ध मुखिया किस्म का एक आदमी इस बीच आकर खड़ा हुआ और बोला, "क्यों भाई बेकार का झमेला बढा रहे हो ? अपने-अपने घर जाओ, काफी रात हो चुकी है।"

पटला मयूरभंज से शराब पीकर आया था। उसने कहा, "अरे साले, गाड़ी मे आग लगा दे। यह माला खुशनुमा गाडी लेकर कारनामे दिखाने आया है।"

अब ऊपर से हिमाशु बाबू की पत्नी ने पुकारा, "अरे विजय, तू वहा क्यों है ? गुण्डो से बातचीत मत कर…"

पास ही गोपा खडी थी। नयी-नयी शादी हुई है। एक साल भी नहीं हुआ है, लेकिन शादी के बाद से ही यह मकान उसे अजीब किस्म का लग रहा है। न केवल मकान, बल्कि विजय भी अजीब जैसा लग रहा है। दिन-भर कालेज मे पढकर लोग घर आते हैं, लेकिन उसके साथ यह बात नहीं है। पता नही, कहा जाता है, क्या करता है और जब रात गहराने पर घर लौटता है तो उसके मुह से तेज शराब की बू निकलती है। गोपा डर से एक किनारे सिकुड़ जाती है, बातचीत करने का अपने अन्दर साहस नही बटोर पाती है। उसके बाद जब विजय गहरी नींद मे डूब जाता है, तब कही गोपा का भय दूर होता है।

उसके बाद जब सवेरा होता है तो विजय जैसे कोई और ही व्यक्ति होता है।

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के इस मकान में इस तरह की छोटी-मोटी गड़बड़ी हमेशा मौजूद रहती है। प्रारम्भ से ही यह सिलसिला चल रहा है। यहा के बाशिन्दे जब यहा नही रहते थे उस समय भी यही सिलसिला था। बाशिन्दों के बदलाव से आबोहवा मे कोई परिवर्तन नही आया है। युग बदल जाता है लेकिन मन मे किसी तरह का बदलाव नही

आता है। वही ईर्ष्या-द्वेष, गाली-गलौज, संघटन-विघटन, पारस्परिक अस्तित्व-संहार का षड्यंत्र, यातना-दंशित जीवन जीने के निर्लज्ज प्रदर्शन का सिलसिला चलता रहता है। कौन किसके घर में झांककर किसका सतीत्व कलंकित कर रहा है, कौन किस चीज के साथ भात खा रहा है, कौन अपनी लड़की को किराये पर रखकर गृहस्थी चलाने के सहज उपाय की तलाश कर रहा है—यह मानसिकता जैसे इस मकान की रक्त-मज्जा में समाहित हो गई है।

कब किस विस्मृत व्यक्ति ने एकांत में वास करने के लिए इस मकान का निर्माण कराया था, पता नहीं। उसका नाम-धाम, उसकी जन्मपत्री आज इतिहास के सिरिश्तेदार के रेकार्ड से मिट गया है। काल के महफूजखाने में ढूंढने से हो सकता है, उसका फटा हुआ दस्तावेज मिल जाए। लेकिन महफूजखाने के मुहर्रिर अब उसकी जानकारी रखने की जरूरत महसूस नहीं करते। खोज करने पर हो सकता है, इस अनादि-अनन्त सृष्टि के रहस्यों का कोई सूत्र मिल जाए, लेकिन जरूरत ही क्या है? इसके बनिस्बत यही अच्छा है। हां, यही कि साल-दर-साल बच्चा पैदाकर उसकी सेवा-शुश्रूषा करना, दिल की बीमारी को पालना, उपहार में दी गई मछली खाना तथा कलह-कुत्सा का उच्छ्वास व्यक्तकर परम उत्साह से जीवन जीना ही तो जीना है! यही तो निर्वाण की प्राप्ति है!

सृष्टिधर मौके-बेमौके पहुंच ही जाता है। नियमपूर्वक घंटा-घड़ियाल बजा जाता है, शंख फूका जाता है और मंत्र का उच्चारण कर जाता है। और चेहरे पर मुस्कराहट लाकर कहता है, "अबकी मेरे मालिक आ रहे हैं। मौसाजी, हर चीज ठीक हो जायेगी···" यानी ठीक हो जायेगी किसी के पाखाने की सीढ़ी, किसी के रसोईघर की छत का सूराख, किसी के जीने की रेलिंग और किसी के मकान की दीवार की बालू की आयरू। एक बार ईश्वरप्रसाद दनदनिया को किसी तरह इस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के इस मकान में अगर सशरीर ले आए···आने से ही सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। मधुसूदन, के आंगन में नये सिरे से सिमेंट लगाया जाएगा, टूटी सीढ़ी को जोड़ दिया जायेगा, खप्पर पर टीन की छत लगाई जाएगी; हिमांशु बाबू के जीने की टूटी रेलिंग को फिर से मजबूत बना दिया जाएगा, दीवार में मरेडी की जाएगी और तीन-मंजिले के हरिपद सरकार का रसोईघर जहां बारिश की बूंदें टपकती हैं, उसे

ठीक कर दिया जाएगा।

इतना ही नहीं।

ईश्वरप्रसाद ढनढनियां जैसे उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के इस मकान का ईश्वर है! परम मंगलमय, परम सृष्टिकर्ता। एक बार अगर आकाश के अदृश्य लोक से इस यथार्थ धरती पर उसका अवतरण हो जाए तो जैसे हरेक की तमाम समस्याओं का हल निकल आए। उस मेंड़ी को साल-दर-साल बच्चा नहीं होगा, राधा बुआ और मवदुलाल की पालित-पोषित संतानों के वंशधरों का भविष्य अपनी महिमा से निष्कंटक कर देगा। गोपा का पति तब मयूरभंज की भट्ठी में ठर्रा पीकर नशे में नहीं झूमेगा, हिमांशु बाबू की दिल की बीमारी दूर हो जायेगी और वे फिर से स्वस्थ हो जायेंगे; हरिपद चक्रवर्ती को घटिया काम करके रोज़ी-रोटी कमानी नहीं पड़ेगी और जयन्ती की शादी हो जाएगी। वह स्वस्थ, बलवान और शिक्षित पात्र के हाथ में अपनी पुत्री को समर्पित कर सकेगा। एक रेशमी साड़ी या मामूली स्नो, क्रीम, पाउडर के खर्च के लिए तब उसकी लड़की को मिस्टर पराशर के चेम्बर में किराये पर खटना नहीं पड़ेगा।

ईश्वरप्रसाद ढनढनिया सारी चीज़ों का एक रास्ता निकाल सकता है—इस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का अदृश्य मालिक ईश्वरप्रसाद ढनढनिया।

मालिक अदृश्य है लेकिन उसका दलाल? दलाल सृष्टिधर? वह पहुंच के परे नहीं है। यही वजह है कि हर कोई सृष्टिधर को ही पकड़ता है, "एक बार अपने मालिक को ला दो, सृष्टिधर, अपने मालिक को लाकर हमारी हालत दिखा दो..."

लेकिन मालिक कहां है? वह तो अदृश्य है! विशाल ब्रह्माण्ड के उस मालिक ईश्वर की तरह ही उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान का मालिक ईश्वरप्रसाद ढनढनियां दृष्टि के परे है, अप्राप्य, अवाङ्मनसगोचर (वाणी और मन की पहुंच से परे)...

वह मालिक कभी नहीं आया।

आया नहीं, पर मालिक का दलाल सृष्टिधर हर महीने आकर किराया ले जाता है। विधाता-पुरुष अपना टैक्स नियमपूर्वक वसूल करके ले जाता है।

और क्योंकि आया नहीं इसीलिए हो सकता है, इस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के बाशिन्दों की किसी समस्या का कोई निदान नहीं हुआ।

राधा बुआ उसी मकान-मालिक के खिलाफ तब जहर उगलती है, जब उसका दलाल सामने पड़ जाता है। हिमांशु बाबू उसी मकान-मालिक के प्रति तब शिकायत करते हैं जब उनकी छाती का दर्द बढ़ जाता है। भवदुलाल साल-दर-साल बच्चा पैदा होने का बदला मुष्टिधर को खरी-खोटी सुनाकर लेना चाहता है। और हरिपद चक्रवर्ती के मन में जब अपनी घटिया कमाई के प्रति वैराग्य जन्म लेता है, वह मुष्टिधर को पकड़कर इस सुयोग से अपना आक्रोश शान्त करना चाहता है। जयन्ती जब चौरंगी में एकाकी चक्कर काटती हुई मन की बेचैनी दूर नहीं कर पाती है तब उसका सारा आक्रोश मकान-मालिक के दलाल मुष्टिधर पर केन्द्रित हो जाता है।

मिस्टर पराशर ने उस दिन कहा, "क्या हुआ मिस्टर राय, आपकी वह आर्टिस्ट कहां है? अब वह दिख ही नहीं रही है···"

आनन्द राय पैसा मांगने आया था। पैसा का मतलब उधार। कमीशन वगैरह ले चुका था। कुछ पेशगी की जरूरत है। धोबी की दुकान में पैसे के अभाव में सूट नहीं ला पा रहा है।

उसने कहा, "नहीं सर, वैसे घटिया लोगों के मुहल्ले में अब नहीं जाऊंगा।"

"घटिया लोगों का मतलब?"

'नीलमणि हालदार लेन।"

मिस्टर पराशर ने कहा, "लेकिन आर्टिस्ट तो घटिया लोगों के मुहल्ले में ही रहती हैं। हम लोगों को वहीं से तो आर्टिस्टों को लाना है। भले आदमी के मुहल्ले से आएगी ही कौन और आए भी तो क्यों?"

आनन्द ने कहा, "हमारी भी पहले यही धारणा थी सर, लेकिन वह बड़ी ही खतरनाक जगह है, वहां उस दिन मार खाते-खाते बच गया।"

"क्यों?" मिस्टर पराशर को आश्चर्य हुआ, "पुलिस की मदद की जरूरत है तो कहिए। पुलिस कमिश्नर से कह दूंगा।"

"नहीं; मिस्टर पराशर, पुलिस कमिश्नर के द्वारा नहीं होगा। वह तो एकबारगी पुलिस कमिश्नर का बाप है, सर !"

"सो कैसे ?"

"मेरी गाडी में ही आग लगाना चाहता है। मुहल्ले के छोकरे ठर्रा पीना सीख गए हैं। अपनी आर्टिस्ट को पहुंचाने जा रहा था कि यह कांड हो गया।"

"सो हो, आर्टिस्ट तो कहीं बिगड़ नहीं गई ?"

आनन्द ने कहा, "बिगडेगी क्यों सर ? और बिगडेगी तो आर्टिस्ट का चलेगा कैसे ? उसको भी तो साड़ी-ब्लाउज का खर्च है, सिनेमा-गहना वगैरह की जरूरत है। उसके बाप के पास इतना पैसा भी नहीं है कि जवान लडकी की सारी जरूरतों को पूरा करे। मैं चूंकि था इसीलिए अच्छा या बुरा—जो हो, उन लोगों को खाना नसीब होता था, सर ! अच्छी साड़ी दी ब्लाउज दिया, फिर नकद कुछ पैसे भी दिए। उधर बीस सेर की एक मछली खरीदकर दी थी। एक दिन हिलसा मछली भी खरीदकर दी थी। हिलसा मछली मिलने से मुझ पर बड़ी ही खुश हुई थी !"

"इतना पैसा दे रहे हो, आखिर तक वसूल कर पाओगे या नहीं ?"

आनन्द बोला, "वसूली तो हो चुकी है, सर !"

"कैसे ?"

मिस्टर पराशर को थोड़ा आश्चर्य हुआ।

आनन्द बोला, "आपके चेम्बर में लाने के बाद से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ ही गई है। आपका चेम्बर बड़ा ही शुभदायक है। जिसको भी यहां लेकर आया हूं, उसकी तकदीर जग गई है। यही तो। उस दिन हैदराबाद से काजीभाई देसाई कलकत्ता आए थे। खबर मिलते ही मैं उनसे मिला। मुझसे ज्यों ही कलकत्ते का हालचाल पूछा, मैंने कहा : मिस्टर पराशर के चेम्बर में एक्सक्लुसिव आर्टिस्ट है, चाहिए तो बताइए।

" उसके बाद एक दिन एंगेजमेंट हुआ। आर्टिस्ट को देखते ही काजीभाई देसाई की जीभ से लार टपकने लगी।

" काजीभाई देसाई बोला : रेट क्या है ?

" मैंने पूछा : एक्सक्लुसिव या पार्ट टाइम ?

" एक्सक्लुसिव !—देसाई बोला।

बकाया किराये की बाबत मुकदमा चल रहा है। पांच सालों से आपसे जो कमीशन मिलता आ रहा है और इधर-उधर से जो ऊपरी आय हो जाती है, सबका सब डाक्टर-दवा, वकील-एटर्नी के पेट में चला जाता है ...''

इस कारोबार मे काम चाहे कम हो या अधिक, परन्तु बात बढ़ा-चढ़ाकर कहनी पडती है। एकाध हज़ार शब्दों को व्यय करने के बाद एकाध मुवक्किल पकड़ में आता है। इसके बाद आर्टिस्ट का इन्तजाम करना पड़ता है। आजकल मन के लायक आर्टिस्ट पाना मुश्किल हो गया है। कलकत्ता शहर में जिस रफ्तार से आर्टिस्टों की संख्या में वृद्धि हो रही है उसी अनुपात से इस क्षेत्र में कमीशन-एजेण्टों की भी वृद्धि हो रही है।

यह जयन्ती ही क्या आनन्द के हाथ आती? यह प्राप्ति सौभाग्य ही है जैसे।

जयन्ती तब उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान में छटपटाती रहती थी। तब वह युवावस्था में पहुंच चुकी थी। सिनेमा की पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने के कारण सिनेमा में उतरने का जुनून सवार हो चुका था। अकेली सिनेमा देखने जाती थी और सिनेमा से वापस आने के वक्त सीधे घर की ओर नहीं आती थी।

मां पूछती, "सिनेमा देखकर लौटने में इतनी देर क्यों हुई? सिनेमा तो कब का छूट चुका है!"

जयन्ती कहती, "एक सहेली से मुलाकात हो गई, मां, उसने छोड़ा ही नहीं, खींचकर अपने घर पर ले गई।"

"तेरी वह कौन-सी सहेली है?"

"तुम उसे पहचानती नहीं हो। उसका नाम है वासन्ती। मुझसे एक दर्जे पीछे थी। अब उसकी शादी हो चुकी है। राममय रोड में ससुराल है।"

अन्ततः ऐसा हुआ कि बिना कहे-सुने जयन्ती वासन्ती की राममय रोड की ससुराल में हर रोज आने-जाने लगी। किसी दिन जब वासन्ती के लड़के का अन्नप्राशन मनाया जाता, उस दिन रात ग्यारह बजने पर घर लौटती। निमंत्रण में जाने के बाद उठने ही नहीं दिया। किसी दिन वासन्ती की शादी की सालगिरह मनाई जाती और वहां खान-पान चलता। हर रोज आने में रात

होने लगी ।

उसी समय आनन्द राय से एकाएक मुलाकात हुई ।

आनन्द राय ने देखा कि एक लड़की सिनेमाघर से निकलकर अकेली ही फुटपाथ से जा रही है । इस तरह अकेली बहुत-सी लड़कियां जाती हैं । मगर जो जौहरी होते हैं, पहचान लेते हैं । पहचान लेते हैं कि किस किस्म का जाना निरुद्देश्य हुआ करता है । पीछे-पीछे कदम बढ़ाता हुआ आनन्द ध्यान से देखने लगा । लड़की एक सड़क में घुसी और दूसरी से बाहर निकली । उसके बाद दूसरी सड़क पकड़कर एक साड़ी की दुकान के सामने पहुंची और शो-केस के सामने बेवजह ठिठककर खड़ी हो गई और बीच-बीच में इधर-उधर आंखें दौड़ाने लगी ।

जैसे सीधे जाकर साड़ी देख रहा हो, आनन्द भी ठीक उसी मुद्रा में अपलक शो-केस की ओर देखने लगा ।

उसके बाद ऐसा वक्त आया कि वे आमने-सामने खड़े हो गए ।

"मेरे लिए एक साड़ी पसन्द कर दीजिएगा ?"

जयन्ती शुरू में चौंक पड़ी, फिर पूछा, "किसके लिए ?"

"किसीके लिए भी ।"

"वाह जी, वाह, जिसके लिए आप साड़ी खरीद रहे हैं उसका नाम नहीं है ?"

आनन्द ने कहा, "नाम मालूम रहे तब न बताऊं । नाम नहीं बताया है ।"

सभी बात जयन्ती की समझ में आ गई । वह मुसकराती हुई बोली, "नाम मालूम नहीं है लेकिन उसके लिए साड़ी खरीद रहे हैं ?"

"आपका नाम ?" आनन्द ने पूछा ।

इच्छा न रहने के बावजूद जयन्ती ने बताया, "जयन्ती चक्रवर्ती ।"

"मैं जयन्ती चक्रवर्ती के लिए ही साड़ी खरीद रहा हूं ।" आनन्द ने कहा ।

तत्काल दोनों एकसाथ हंस पड़े ।

दुकानदार झांककर देख रहा था । अब बाहर आकर बोला, "आइए न, अन्दर चले आइए, कौन-सी साड़ी लेनी है, देखिए···"

उसके बाद आनन्द ने दुकान के अन्दर जाकर साड़ी खरीदी । खरीदकर जयन्ती के हाथ में पैकेट थमा दिया और कहा, "लीजिए···"

बकाया किराये की बाबत मुकदमा चल रहा है। पांच सालों से आपसे जो कमीशन मिलता आ रहा है और इधर-उधर से जो ऊपरी आय हो जाती है, सबका सब डाक्टर-दवा, वकील-एटर्नी के पेट में चला जाता है···"

इस कारोबार में काम चाहे कम हो या अधिक, परन्तु बात बढ़ा-चढ़ाकर कहनी पड़ती है। एकाध हजार शब्दों को व्यय करने के बाद एकाध मुवक्किल पकड़ में आता है। इसके बाद आर्टिस्ट का इन्तजाम करना पड़ता है। आजकल मन के लायक आर्टिस्ट पाना मुश्किल हो गया है। कलकत्ता शहर में जिस रफ्तार से आर्टिस्टों की संख्या में वृद्धि हो रही है उसी अनुपात से इस क्षेत्र में कमीशन-एजेण्टों की भी वृद्धि हो रही है।

यह जयन्ती ही क्या आनन्द के हाथ आती ? यह प्राप्ति सौभाग्य ही है जैसे।

जयन्ती तब उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान में छटपटाती रहती थी। तब वह युवावस्था में पहुंच चुकी थी। सिनेमा की पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने के कारण सिनेमा में उतरने का जुनून सवार हो चुका था। अकेली सिनेमा देखने जाती थी और सिनेमा से वापस आने के वक्त सीधे घर की ओर नहीं आती थी।

मां पूछती, "सिनेमा देखकर लौटने में इतनी देर क्यों हुई ? सिनेमा तो कब का छूट चुका है !"

जयन्ती कहती, "एक सहेली से मुलाकात हो गई, मां, उसने छोड़ा ही नहीं, खींचकर अपने घर पर ले गई।"

"तेरी वह कौन-सी सहेली है ?"

"तुम उसे पहचानती नहीं हो। उसका नाम है वासन्ती। मुझसे एक दर्जे पीछे थी। अब उसकी शादी हो चुकी है। राममय रोड में ससुराल है।"

अन्ततः ऐसा हुआ कि बिना कहे-सुने जयन्ती वासन्ती की राममय रोड की ससुराल में हर रोज आने-जाने लगी। किसी दिन जब वासन्ती के लड़के का अन्नप्राशन मनाया जाता, उस दिन रात ग्यारह बजने पर घर लौटती। निमंत्रण में जाने के बाद उठने ही नहीं दिया। किसी दिन वासन्ती की शादी की सालगिरह मनाई जाती और वहां खान-पान चलता। हर रोज आने में रात

होने लगी।

उसी समय आनन्द राय से एकाएक मुलाकात हुई।

आनन्द राय ने देखा कि एक लड़की सिनेमाघर से निकलकर अकेली ही फुटपाथ से जा रही है। इस तरह अकेली बहुत-सी लड़कियां जाती हैं। मगर जो जौहरी होते हैं, पहचान लेते हैं। पहचान लेते हैं कि किस किस्म का जाना निरुद्देश्य हुआ करता है। पीछे-पीछे कदम बढ़ाता हुआ आनन्द ध्यान से देखने लगा। लड़की एक सड़क में घुसी और दूसरी से बाहर निकली। उसके बाद दूसरी सड़क पकड़कर एक साड़ी की दुकान के सामने पहुंची और शो-केस के सामने बेवजह ठिठककर खड़ी हो गई और बीच-बीच में इधर-उधर आंखें दौड़ाने लगी।

जैसे सीधे जाकर साड़ी देख रहा हो, आनन्द भी ठीक उसी मुद्रा में अपलक शो-केस की ओर देखने लगा।

उसके बाद ऐसा वक्त आया कि वे आमने-सामने खड़े हो गए।

"मेरे लिए एक साड़ी पसन्द कर दीजिएगा ?"

जयन्ती शुरू मे चौंक पड़ी, फिर पूछा, "किसके लिए ?"

"किसीके लिए भी।"

"वाह जी, वाह, जिसके लिए आप साड़ी खरीद रहे हैं उसका नाम नहीं है ?"

आनन्द ने कहा, "नाम मालूम रहे तब न बताऊं। नाम नहीं बताया है।"

तभी बात जयन्ती की समझ में आ गई। वह मुसकराती हुई बोली, "नाम मालूम नहीं है लेकिन उसके लिए साड़ी खरीद रहे हैं ?"

"आपका नाम ?" आनन्द ने पूछा।

इच्छा न रहने के बावजूद जयन्ती ने बताया, "जयन्ती चक्रवर्ती।"

"मैं जयन्ती चक्रवर्ती के लिए ही साड़ी खरीद रहा हूं।" आनन्द ने कहा।

तत्काल दोनों एकसाथ हंस पड़े।

दुकानदार झांककर देख रहा था। अब बाहर-आकर बोला, "आइए न, अन्दर चले आइए, कौन-सी साड़ी लेनी है, देखिए…"

उसके बाद आनन्द ने दुकान के अन्दर जाकर साड़ी खरीदी। खरीदकर जयन्ती के हाथ में पैकेट थमा दिया और कहा, "लीजिए…"

जयन्ती बोली, "आपकी साड़ी बेमतलब क्यों लूं ?"

"अगर लेना नही चाहती हैं तो साड़ी की कीमत मुझे दे दें।"

"अभी मेरे पास उतना पैसा नही है।"

आनन्द ने कहा, "बाद में दे दीजिएगा, हड़बड़ी नहीं है।"

"आपको कैसे दूगी ?" जयन्ती बोली, "आपका पता मुझे मालूम नहीं है। रहता तो मनीआर्डर करके आपको भेज देती।"

"नहीं-नहीं, मनीआर्डर करके भेजने की कोई जरूरत नही। इससे तो अच्छा यही रहेगा कि आपके घर पर चलकर इसकी कीमत ले लू···"

"यही अच्छा रहेगा।" जयन्ती ने कहा, "मेरा पता है : उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हाल्दार लेन।"

•

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान से आनन्द उसी समय पहले-पहल परिचित हुआ। मिस्टर पराशर के चेम्बर में आकर आनन्द उससे एक गाडी मांगकर ले गया।

मिस्टर पराशर ने पूछा, "बढ़िया आर्टिस्ट है न, मिस्टर राय ?"

आनन्द ने कहा, "हां सर, फर्स्टक्लास आर्टिस्ट !"

"उम्र क्या है ?"

"अठारह साल—एट्टीन ! स्वीट सिक्सटीन नहीं, बल्कि टाइट एट्टीन।"

"एडवांस कितना चाहिए ?"

"दो सौ रुपये !"

"सो क्यों ? दो सौ एडवांस लोगे और बाद में अगर माल भूसा साबित हो ?"

आनन्द ने कहा, "मैं तीस रुपये लगाकर एक साड़ी खरीदकर दे चुका हूं। मैं माल का जौहरी हूं, मिस्टर पराशर। अगर माल भूसा साबित हो जाए तो कीमत वापस कर दूगा। मैं आपको गारन्टी दे रहा हूं।"

बस, वहीं से शुरुआत हुई। उसी दिन से घर के सभी व्यक्तियों को पता चला कि जयन्ती भवानीपुर के राममय रोड में अपनी सहेली की ससुराल मे घूमने-फिरने जाती है।

हरिपद चक्रवर्ती पूछता, "जयन्ती कहा है जी ? वह नजर नही आ रही है !"

पुष्प कहती, "वह अपनी सहेली के घर गई है।"

"सहेली ! कौन उसकी सहेली है ? कैसी सहेली ?"

पुष्प बोली, "स्कूल की सहेली। बचपन में एक साथ पढ़ती थीं।"

"मगर हर रोज उसके घर पर क्यों जाती है ?"

पुष्प को गुस्सा आ गया, "उसके घर नहीं, बल्कि ससुराल जाती है।"

"ससुराल ? क्यों ? सहेली के घर पर रोज़-रोज़ जाना क्या अच्छा दिखता है ?"

"इससे तुम्हारा क्या बिगड़ता है ? तुम लड़की की शादी करोगे नहीं, फिर वह क्या चुपचाप घर मे नजरबन्द होकर पड़ी रहे ? उसे क्या गपशप करने की इच्छा नहीं होती ? उसमें इच्छा-आनन्द नाम की चीज़ नहीं होनी चाहिए ?"

इसके बाद हरिपद चुप हो गया। इसके अतिरिक्त हरिपद के पास इतना वक्त भी नहीं है कि इन बातों पर सोचे-विचारे। दफ्तर का मुलाज़िम होता तो लड़की की शादी की बाबत सोचने का उसे वक्त मिलता। यह तो घटिया किस्म का काम है : दसियों जगह आर्डर सप्लाई करने का काम। सवेरे से शुरू करके रात नौ बजे तक बहुत-सी फर्मों मे चक्कर काटकर जूते का तल्ला घिसना। इसी को तो घटिया किस्म की जीविका कहा जाता है।

ठीक ऐसे ही समय यह काड घटित हुआ।

फुटबाल का खेल देखकर हिमांशु बाबू का लड़का विजय चौरंगी के रास्ते के अंधेरे से पैदल आ रहा था और वहां जयन्ती को देखकर चौंक पड़ा था।

भोलादत्त ने पूछा, "वह लड़का कौन है ?"

विजय ने कहा, "मालूम नहीं उस्ताद, कहीं से एक खुशनुमा गाड़ी लेकर आया और देखते न देखते उस लड़की को लेकर चंपत हो गया।"

केतो ने कहा, "मैंने भी देखा है, चौरंगी की सड़क पर वह लड़की मंडराती रहती है।"

"तब तो श्योर शाट है। ट्राई करूं ?"

लेकिन अन्ततः कोशिश नहीं हो पाई। भोलादत्त ने दल-बल के साथ कई दिनों तक चौरंगी मुहल्ले में चक्कर लगाए, लेकिन हरिपद चक्रवर्ती की लड़की से

मुलाकात नहीं हुई।

विजय ने कहा, "लेकिन वह लड़की अब भी घर से ठीक शाम के वक्त बाहर निकलती है।"

"कहा जाती है ?" भोलादत्त ने पूछा।

"सो मैंने कहा देखा है ? गोपा ने बताया कि शाम होने के कुछ देर पहले ही साज-सिंगार करके निकलती है।"

"कहां जाती है, अपनी बेगम से क्यों नहीं पूछा ? फिर हम पीछे-पीछे जाकर पता लगा लेते ··"

विजय ने कहा, "पूछा था। तीनमंजिले की उस लड़की की मां ने बताया है कि उसकी एक सहेली भवानीपुर के राममय रोड पर रहती है। वहीं जाती है। वहां छोकरी की एक सहेली की ससुराल है।"

"धोखा है, बिल्कुल धोखा दिया है।"

"फिर कहां जाती है ? कहां जा सकती है ?"

"पता लगाना होगा। जैसे ही घर से निकलेगी, पीछा करना पड़ेगा। साली दाई से कोख छिपाने चली है। मजाल है कि कलकत्ता शहर में कोई लड़की भोलादत्त की आंख में धूल झोंककर गायब हो जाए ?"

उसी दिन से भोलादत्त की जमात ताक में रहने लगी : लड़की हर रोज उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान से कहां जाती है ?

एक दिन तीनों व्यक्तियों ने पीछे-पीछे चलना शुरू किया। लड़की आगे-आगे जा रही थी। इत्र लगाए, चोटी हिलाती-डुलाती, पीठ और कंधे को उघाड़कर जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा रही थी।

नीलमणि हालदार लेन पार करने के बाद जयन्ती एक रिक्शे पर बैठी। भोलादत्त वगैरह भी दो रिक्शे लेकर पीछे-पीछे चलने लगे।

जहां रासबिहारी एवेन्यू का मोड़ है, ठीक उसी जगह चमचमाती कार खड़ी थी। उसके निकट, बाल पीछे की ओर सवारे हुए, एक युवक खड़ा था। जयन्ती के पहुंचते ही उसने गाड़ी के दरवाजे को खोला और उसे स्टीयरिंग के पास बिठाकर धुआं उड़ाता हुआ आंखों से ओझल हो गया।

भोलादत्त की जमात बेवकूफ की तरह मुंह बाये उस ओर ताकती रह गई।

लेकिन बात थोड़ी-बहुत समझ में आ गई।

गोपा उस दिन बोली, "वह लड़की चाहे जहां जाए, इससे तुम लोगों का क्या आता-जाता है ? उसके बारे में तुम लोग क्यों इतनी फिक्र करते हो ?"

विजय तब कुछ क्षण पहले मयूरभंज से लौटा था। उसकी आंखें चढ़ी हुई थीं। किसी तरह खा-पीकर सो रहे तो आराम मिले।

"सोचूंगा नहीं ?" उसने कहा, "गृहस्थ-घर की औरत जिसके-तिसके साथ बाहर निकलेगी ?"

"गृहस्थ-घर की लड़कियां कलकत्ते में कितनी ही हैं, उन लोगों के लिए कोई माथापच्ची क्यों नहीं करता ?"

विजय बोला, "तुम भले घर की बहू हो, तुम समझोगी कैसे ? तुम चुप रहो···"

"तुम भले घरकी औरत के बारे में माथापच्ची करोगे और मैं चुप रहूं ?···"

"अरे, तुम भी तो उजबक हो ! इस घर में पत्नी, मां और बाप के साथ रहता हूं। इसी मकान को वेश्यालय बना देगी और हम कुछ भी नहीं कहें ?"

"तुम यह क्यों कह रहे हो ? वह लड़की क्या वेश्या है ?"

"वेश्या नहीं तो और क्या है ? जिसके-तिसके साथ इधर-उधर जाती है। ऐसियों को ही तो वेश्या कहा जाता है।"

"वह वेश्या है या नहीं—इसके लिए उसके मां-बाप हैं। समझना होगा तो वे लोग समझेंगे ? तुम्हें इतना सोचने की कौन-सी जरूरत है ?"

तब नींद से विजय की पलकें झपक रही थीं। वह बोला, "इसीलिए तो 'औरत' कहते हैं। ऐसी अक्ल न होती तो औरत बनकर पैदा होती ? पुरुष-योनि में जन्म लेकर हमारी तरह तुम कॉलिज में पढ़ती···"

"और तुम्हारी तरह शराब पीती !"

"क्या कहा ? फिर से कहो ?"

लेकिन गोपा तब तक कमरे से निकलकर बाहर चली गई। वह ज्योंही बाहर निकली उसकी सास उसके निकट आई।

"क्या हुआ बहू, फिर झगड़ा हो गया ?"

"नहीं-नहीं ; झगड़ा नहीं हुआ है।"

"फिर कह रही हो कि झगड़ा नहीं हुआ ? तुमसे कहा है न, कि उससे

कुछ मत कहा करो। वह शराब पिये, पीकर नशे में धुत हो जाए, उससे कुछ मत कहो। गनीमत तो यह है कि अभी घर आता है, तब तो आयेगा ही नहीं···"

बगल के कमरे में हिमांशु बाबू बोले, "क्या हुआ जी ? विजय चिल्ला क्यों रहा है ? क्या हुआ ? फिर शराब पीकर आया है क्या ?"

पत्नी कमरे के अन्दर आई। बोली, "तुम झाव-झाव क्यों करते हो ? तुम्हें क्या हुआ ?"

हिमांशु बाबू ने कहा, "बगल के कमरे में विजय क्या शराब के नशे में जो-सो बक रहा है ?"

"तुम चुप रहो, बाबा ! परेशान मत करो। विजय शराब क्यों पियेगा ?"

"फिर वह क्यों ऐसा कह रही थी ?"

पत्नी को अब का अहसास हुआ। बोली, "जैसी वह है, वैसे तुम हो। मेरी मौत हो तो जान बचे ! और वैसा ही मिला है हरामजादा मकान-मालिक !"

दरअसल अन्त में सारी अशान्ति के मूल का शिकार होता है मकान-मालिक। मानो मकान-मालिक हरामजादा न होता तो विजय भी शराब के नशे में धुत होकर घर नहीं लौटता। कि मकान-मालिक का अपराध न होता तो हिमांशु बाबू की दिल की बीमारी भी नहीं बढ़ती। कि मकान-मालिक बुरा न होता तो तीनमंजिले के हरिपद चक्रवर्ती को सुबह से शाम तक घटिया किस्म की जीविका नहीं कमानी पड़ती, न हरिपद चक्रवर्ती की लड़की को ही लुक-छिपकर इस तरह वेश्यावृत्ति अपनानी पड़ती। और अगर मकान-मालिक हरामजादा नहीं है तो एक बार आता क्यों नहीं है ? मकान-मालिक एक बार आ जाए तो सारी गड़बड़ दूर हो जाए। सभी को हर समस्या का कोई न कोई रास्ता अवश्य निकल आए।

लेकिन नहीं, सृष्टिधर चाहे लाख कहे मगर उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान का मालिक अदृश्य है, अलभ्य, अवाङ्मनसोगोचर···

उस दिन अचानक कांजीभाई देसाई ने सारा रुपया चुका दिया। ढाई

हजार रुपया। आनन्द राय मामूली कमीशन एजेन्ट है। उसका बाप कैंसर का मरीज है, हर महीने उसके लिए पांच सौ रुपये डाक्टर और दवा मे खर्च करना पड़ता है। सोलह साल की विवाह योग्य बहन को पोलियो है। उसके पीछे भी मोटी रकम खर्च करनी पड़ती है। मकान-मालिक से भी बकाया किराये की बाबत पिछले चार सालो से मुकदमा चल रहा है। वकील-एटर्नी मोटी रकम हड़प जाते हैं।

जयन्ती को हिस्से में दो सौ रुपये मिले।

कारोबारी होने से क्या होगा, कांजीभाई देसाई मे दया-ममता-प्रेम है। मिस्टर पराशर के चेम्बर में जो लोग आते हैं वे और ही किस्म के होते है। बढ़ई की तरह वे केवल तख्ता पकड़ते हैं और काटी ठोंकते है। लेकिन देसाई जी ने जयन्ती को साड़ी खरीद दी, गहना भी खरीदकर दिया। साथ में लेकर सिनेमा गए। अच्छी बंगला न बोल पाने के बावजूद बंगला में बातचीत करने की कोशिश की।

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

जयन्ती बोली, "जयन्ती चक्रवर्ती।"

"तुम इस कारोबार में क्यो उतरी ? यह लाइन क्या अच्छी है ?"

जयन्ती ने इस बात का उत्तर नही दिया। दे तो क्या दे ? तीन दिन और तीन रातें एकसाथ एक ही होटल मे एक ही कमरे में गुजारीं। बढ़िया ब्रेक-फास्ट, लंच और डिनर खिलाया। चाहे जो हो, लेकिन खातिर भरपूर की। उस पर दो सौ रुपये दिए।

इसकी जैसे कल्पना भी नही की जा सकती है। जीवन में इतना सुख है—इसके बारे में अब तक उसे कुछ मालूम ही नहीं था। इतने दिनों तक सड़कों की ही धूल छानती आई है। किसी ने अगर एक प्याली चाय पिलाई है तो उसे कृतार्थता का बोध हुआ है। रुपया तो दूर की बात है। जयन्ती को लगा, कांजी-भाई देसाई जैसा आदमी होता ही नहीं है। कांजीभाई देसाई उसके लिए जैसे देवतास्वरूप है।

हाथ मे रुपया थामकर जयन्ती विस्मित हो उठी। बोली, "सब मेरा है ?"

देसाई जी ने कहा, "सब तुम्हारे लिए···"

जयन्ती की आंखो में पानी भर आया। मानो, वह विश्वास ही नहीं कर

पा रही है। हाथ से छूकर रुपये का अहसास करने लगी। इतने रुपये ! ज़िन्दगी में कहीं उसने एक साथ इतने रुपये नहीं देखे थे।

एकाएक जयन्ती ने कहा, "जानते हैं, इतना रुपया एक साथ मुझे किसी ने नहीं दिया था।"

देसाई जी ने कहा, "तुम अच्छी लड़की हो। तुम इस लाइन में क्यों आई···?"

जयन्ती ने कहा, "मेरे पिताजी ने मेरी शादी नहीं की। उनके पास शादी कराने के लिए पैसा नहीं है।"

पता नहीं क्या हुआ कि देसाई जी ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हारी शादी का पैसा दूंगा। कितने रुपये लगेंगे ?"

जयन्ती कुछ पलों तक चुप्पी साधे रही, फिर सिर झुकाकर बोली, "कौन मुझसे शादी करेगा ?"

"क्यों, शादी क्यों नहीं करेगा ? रुपया मिलने से शादी करने के लिए सभी तैयार हो जायेंगे।" देसाई जी ने कहा।

जयन्ती बोली, "मैं किसी की ज़िन्दगी बरबाद करना नहीं चाहती···"

"इसमें कोई दोष नहीं है," देसाई जी ने कहा, "सभी देशों की औरतें ऐसा करती हैं। मैंने जापान जाकर देखा है, वहां लड़कियां विवाह के पहले इसी तरह पैसा कमाती हैं।"

जयन्ती को जैसे उम्मीद की रोशनी दिख पड़ी। "आप ठीक कह रहे हैं ?" उसने पूछा।

देसाई जी जयन्ती का हाथ अपने हाथ में लेकर सहलाने लगे। "रो रही हो ?" उन्होंने पूछा।

जयन्ती अब अपने-आपको संयत नहीं रख सकी। देसाई जी के सीने पर अपना सिर टिकाकर अनवरत आंसू बहाने लगी।

पहले दिन फिर उसी तरह हुआ। सुबह से शाम तक जी-तोड़ परिश्रम करने के बाद हरिपद चक्रवर्ती जब वापस आया तो पूछा "जयन्ती दिख नहीं रही है। कहां है ?"

पुष्प ने शुरू में जाहिर करना नहीं चाहा। बोली, "घूमने निकली है।"

"ओह, अपनी उसी स्कूल की सहेली की ससुराल गई है ?"

पुष्प ने उस बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

हरिपद ने इतना ही कहा, "सहेली की ससुराल गई है तो जाए, उसके लिए मैं कुछ भी नहीं कह रहा हूं। मगर इतनी रात होने पर क्यों लौटती है ? यह मुहल्ला अच्छा नहीं है…"

लेकिन दूसरे दिन हरिपद ने फिर पूछा, "क्यों क्या हुआ, जयन्ती कल लौटकर नहीं आई ?"

पत्नी बोली, "नहीं।"

"नहीं कहने का मतलब ? रात में भी वापस नहीं आई ?"

पुष्प ने इस बार भी कहा, "नहीं…"

"नहीं का मानी ? लड़की रात में वापस नहीं लौटी और तुम चुपचाप बैठी हो ? गई कहां है ?"

"वह परसों आयेगी।" पुष्प ने इतना ही कहा।

"परसों आयेगी ? तुमसे कहकर गई है ?"

"हां !" पत्नी ने कहा।

"कहां गई है ? किसके साथ गई है ?"

पुष्प बोली, "और रोटी लोगे ?"

हरिपद को गुस्सा हो आया। "रोटी की बात रहे," उसने कहा, "खाना मेरे लिए हराम हो गया है। वह कहां गई है, यही बताओ।"

पत्नी अब झुंझला उठी। बोली, "अब लड़की के बारे में बहुत पूछताछ कर रहे हो, मगर लड़की जो बड़ी हो गई है इस तरफ ध्यान है ? कभी उसे एक अच्छी साड़ी खरीदकर दी है ? उसे अपने साथ लिए कभी कहीं घूमने-फिरने निकले हो ? कितनी ही लड़कियों के बाप बाल-बच्चों को लेकर कितनी ही जगहों का भ्रमण करते हैं। बाप के नाते तुमने कभी यह कर्तव्य निभाया है ? कभी इसकी खबर ली है, कि वह क्या सोचती है क्या करती है, क्या चाहती है ? तुम तो जिन्दगी-भर हम लोगों को इस कैदखाने में डालकर कलकत्ता शहर को जोतते रहते हो, रुपये की तलाश में चक्कर काटते रहते हो। हम जिन्दा है या मर गए—यह तुमने कभी जानना चाहा है ?"

पत्नी की बातों को सुनकर हरिपद को लगा जैसे वह आकाश से गिर पड़ा हो।

खाना बन्द कर पत्नी के चेहरे पर आंखें टिका दीं।

पुष्प बोली, "मेरे चेहरे की ओर मुंह बाये क्या देख रहे हो? खाकर उठो, बिस्तर बिछा दिया है, सो रहो···"

हरिपद ने टूटी आवाज़ में कहा, "मैं जो दिन-भर चक्कर काटता रहता हूं, वह क्या आराम करने के लिए?"

"हां, आराम के लिए ही। आराम नहीं तो और क्या? वहां पंखे के नीचे बैठकर तुम रुपये-पैसों की बात सोचते हो। तुम क्या हम लोगों के बारे में सोचते हो? जितना पैसा तुम गृहस्थी चलाने के लिए देते हो, उससे गृहस्थी चलती है या नहीं, उस पर कभी सोचा है? यह जो तुम रोटी खा रहे हो, इसे कितनी तकलीफ से जिसकी-तिसकी खुशामद करके मंगाना पड़ता है, पता है? जानने की तुमने कभी इच्छा जाहिर की है? तुम तो होटल में वास करते हो। इससे तो अच्छा यही था कि बिना शादी किए तुम होटल में वास करते!"

अचानक पत्नी की बातें सुनकर हरिपद अचकचा गया। पत्नी को कभी ऐसा क्रोध नहीं आया था। कभी अपने स्वर में इतनी तिक्तता लाकर उसने झगड़ा नहीं किया था।

"एकाएक तुम्हें क्या हो गया है?" उसने कहा।

"अब बात मत बढ़ाओ। तुम्हारा काम खाना खाना है, खाकर उठो। इसके बाद मुझे खाना है, बरतन मांजना है, रसोईघर धोना है। तुम्हारी तरह शरीर में हवा लगाए घूमती रहूं तो मेरा चलने वाला नहीं है···"

हरिपद बोला, "क्या हुआ है, यही बताओ न!"

'तुम्हें कहने से खाक होगा! तुमसे कहना या रास्ते के पत्थर से कहना एक जैसा है। उठो, मैं जूठा बरतन ले जाऊं···"

पत्नी का तेवर तब सचमुच चढ़ा हुआ था। उसके बाद जब खाना-पीना समाप्त हो गया, हरिपद ने पूछा, "अब बताओगी, जयन्ती कहां गई है?"

पुष्प बोली, "लड़की जवान हो चुकी है, आनन्द के साथ घूमने-फिरने निकली है···"

"आनन्द? कौन है वह? कभी नाम नहीं सुना···।"

"नहीं सुना तो सुनने की जरूरत भी नहीं है···"

हरिपद बोला, "गुस्सा क्यों रही हो ? मैं उसका बाप हूं, मुझे भी तो सुनने की इच्छा होती है।"

पुष्प बोली, "आनन्द तो 'मौसाजी' का उच्चारण करते ही गद्‌गद् हो जाता है। पूछता रहता है : मौसाजी कहां हैं ? मौसाजी पर तो एक दिन भी नजर नहीं पड़ी।"

"मैं उसका मौसा लगता हूं ?" सुनकर हरिपद चक्रवर्ती हैरान हो गया। बोला, "मैं अगर उसका मौसा लगता हूं तो उसकी मा तुम्हारी बहन हुई।"

"हां बहन है, तुम चुप रहो। ऐसा बहन-बेटा मिले तो आदमी कृतार्थ हो जाए ! वह पुरी जा रहा था। मुझसे कहा : मौसीजी, मेरी बड़ी इच्छा है कि जयन्ती मेरे साथ जाए। ले जाऊं ?"

"पुरी गई है ?"

"हां; आदमी अपनी तकदीर अपने साथ लिए पैदा होता है। सोचा, खर्च-वर्च तो लग नहीं रहा है, जरा घूम-फिर आए। जाएगी और लौट आएगी···"

हरिपद क्या कहे, उसकी समझ में नहीं आया।

"फिर परसों वापस आ रही है ? परसों जरूर आ जायेगी न ? और अगर परसों न आई तो ?"

"तुम अशुभ बातें मत किया करो। परसों नहीं आयेगी तो तरसों आयेगी। जिस-तिसके साथ नहीं गई है, गई है आनन्द के साथ। डरने की कौन-सी बात है !"

हरिपद बोला, "मैं इसके लिए चिन्ता नहीं कर रहा हूं। मुहल्ले के लोगों के बारे में सोच रहा हूं। इस मकान के किरायेदार अच्छे आदमी नहीं हैं।"

"किरायेदारों से हम क्यों डरें ? हम उनका दिया हुआ खाते हैं ?"

"नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है, फिर भी एकमंजिले की राधा बुआ है—भवदुलाल की सास—वह औरत इस मुहल्ले की गजट है। कहीं इसके बारे में चर्चा न करती फिरे।"

पुष्प बोली, "चर्चा करने दो, मैं किसी की परवाह नहीं करती। जैसा यह मकान है वैसा ही मकान-मालिक ! कितने दिनों से रसोईघर की छत की मरम्मत करने को कह रही हूं। सो तो नहीं···"

"अबकी मकान-मालिक आ रहा है।" हरिपद ने कहा।

"किसने तुमसे कहा कि आ रहा है?"

"सृष्टिधर से उस दिन सड़क पर एकाएक मुलाकात हो गई, उसी ने बताया···"

पुष्प बोली, "हरामजादा मकान-मालिक आए तो सही, एक बार उससे निबटना है! बेटा नम्बरी हरामी है, हर महीने नकद फरफराता नोट किराये में भरती हूं, उसके बारे में कोई हिसाब ही नही। सोचता भी नहीं है कि एक बार देख आऊं कि किरायेदार जिन्दा है या मर गए···"

और उसके बाद फिर से दैनन्दिन गाली-गलौज की शुरुआत हो जाती है। गाली का लक्ष्य होता है वह मकान-मालिक जो हर रोज विराजमान रहने के बावजूद अदृश्य है। जो मकान-मालिक हर दिन वायदा करता है कि आयेगा लेकिन वायदे का पालन नही करता है। जिस मकान-मालिक को सभी अपनी-अपनी समस्या के निदान के लिए पुकारते हैं, परन्तु पुकारने पर जिसका उत्तर नही मिलता है। जो मकान-मालिक आकर समस्त समस्याओं का समाधान ढूंढ सकता है, पर जो आता ही नही है। जो मकान-मालिक अनादि-अनन्तकाल से अदृश्य है, अलभ्य और अवाङमनसोगोचर···

हर पल इन लोगों को मकान-मालिक की याद आती हो, ऐसी बात नहीं है। हर पल मकान-मालिक को गाली-गलौज करें, यही भी नहीं है। इसका भी कोई खास वक्त रहता है।

जब इस मकान के लोग आनन्द में तल्लीन रहते हैं तब कोई भी मकान-मालिक की चर्चा नही करता। जिस दिन वह आदमी अपने तालाब की बहुत बड़ी एक मछली दे गया, जिस दिन राधा बुआ के नाती का अन्नप्राशन था और दो सौ आदमी घर के सामने मंडप के तले आकंठ भोजन कर गए उस दिन हंसी-मजाक, आनन्द-उत्सव में किसी को भी मकान-मालिक की याद नहीं आई।

मछली खाते-खाते हरिपद चक्रवर्ती मकान-मालिक को गाली-गलौज करना भूल गया।

राधा बुआ नाती को गोद में लिए ज्यों ही सामने आकर खड़ी हुई, फूल भाभी ने एक अशरफी निकालकर बच्चे को आशीर्वाद दिया।

एक अदद अशरफी !

"बड़ा ही प्यारा बच्चा है बुआजी !"

आनन्द के आवेग में पाखाने की टूटी सीढी की भी याद नही आई। नल-घर की टूटी छत की भी याद नही आई। तब मकान-मालिक को अभिशाप देना भी भूल गई।

विजय जब मयूरभंज से नशे में चूर होकर आता है और बिस्तर पर निढाल पड़ जाता है, उस वक्त उसे भी उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की बातें याद नही रहती हैं।

और जयन्ती ?

जब तेज इत्र बदन में छिडककर, चोटी हिलाती, पीठ उघाडे, जयन्ती आनन्द की चमचमाती गाडी पर सवार होती है तब उसे उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की देह-गंध का अहसास नही होता है। तब पीछे की बातों पर कोई भी सोच-विचार नहीं करता है, बल्कि सामने की प्रतियोगिता के सागर में छलांग लगाकर गोते लगाता है। तब लगता है, जीवन जीना सुख से भरा-पुरा है, सास लेना और छोड़ना आनन्ददायक है। तब ऐसा महसूस होता है जैसे सामने की ओर दौड लगाना ही जीवन है।

लेकिन कांजीलाल भाई यों ही छोडने वाला व्यक्ति नही था। नकद ढाई हजार रुपये खर्च किया है, इसके अतिरिक्त उपहार वगैरह देने में अलग से पाच सौ रुपये। अतः कारोबारी आदमी होने के नाते मूल और ब्याज की बाबत मौज का ब्याज और लगान का लाभांश वसूल करना जानता है।

कमीशन-एजेंट ने जो कहा था, अक्षरशः सत्य साबित हुआ। सचमुच टाइट एट्टीन है।

जाने के समय कहा, "मैं फिर सरदी के मौसम में आऊंगा।"

"मुझे पहले ही सूचित कर दीजिएगा तो ?" जयन्ती ने कहा।

"श्योर···" कांजीभाई देसाई ने कहा।

जयन्ती ने कहा, "तब तक मैं दूसरे पते पर रहूंगी।"

"दूसरे पते पर ? मतलब ?" देसाई की समझ मे बात नही आई।

"शादी की बात चल रही है क्या ?" देसाई ने पूछा, "ससुराल चली जाओगी ?"

जयन्ती के चेहरे पर बड़ी ही दयनीय मुसकराहट तिर आई।

"हम लोग मकान बदलने वाले हैं।" वह बोली।

"मकान ?"

"हां, हम जिस मकान में रहते हैं, वह बड़ा ही खराब है···"

"क्यों, खराब क्यों है ? तुम्हारा मकान कहां है ?"

जयन्ती ने उत्तर दिया, "उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन। वह इस तरह का मकान नहीं है। उस मकान के रसोईघर की छत से पानी चूता है, जीने की रेलिंग टूट गई है। मकान-मालिक मरम्मत नहीं कराता है।"

"कितना किराया देती हो ?"

"साठ रुपये।"

काजीभाई देसाई के चेहरे पर तिरस्कार की वक्र रेखा खिंच गई।

"कलकत्ते में साठ रुपये में मकान मिल जाता है ? हमारे बंबई शहर में पचास रुपये में पाखाना तक नहीं मिलता है।"

"मगर क्या करें, हम गरीब हैं। मकान-मालिक भी मकान की मरम्मत नहीं कराता है। हमारे पास पैसा भी नहीं है कि उस पर मुकदमा करें।"

उसके बाद जयन्ती अपने दुःख की कहानी बेरोक-टोक कह गई।

"जानते हैं, रुपये के लिए ही आप जैसे आदमियों की दया पर हम निर्भर करते हैं। मेरे बाबूजी गरीब हैं, एजेंसी का कारोबार करते हैं। उससे मकान का किराया और गृहस्थी का खर्च आजकल चल नहीं सकता है। लेकिन यह जो मैं आपके साथ तीन दिनों से यहां हूं—कलकत्ते के एक होटल में—इसका पता किसी को भी नहीं है।"

काजीभाई देसाई बोला, "उन लोगों से कहकर नहीं आई हो ?"

"यह सब क्या कहने लायक बातें हैं ? वह जो मिस्टर राय हैं—कमीशन एजेंट—वह आदमी भला है। शुरू में उसने मुझे एक साड़ी खरीदकर दी थी, उसके बाद से ही उससे घनिष्ठता हो गई।"

"वह तुम्हारा कोई लगता है ?"

"नहीं; यों ही रास्ते में जान-पहचान हो गई। रास्ते में ही जान-पहचान होने के बाद काफी हेल-मेल हो गया। वही मुझे मिस्टर पराशर के चेम्बर में ले गया। वहां जाने के बाद से हम लोगों की हालत थोड़ी-बहुत अच्छी हो गई

है···मगर अब उस मकान में रहना मुझे अच्छा नहीं लगता है। सभी पीछा करते रहते हैं।"

"कौन-कौन पीछा करते है ?"

जयन्ती बोली; "मुहल्ले के लड़के···"

"वे लोग पीछा क्यों करते हैं ? उन लोगों की कौन-सी हानि हो रही है ?"

जयन्ती बोली, "क्योंकि मिस्टर राय मेरे घर पर जाता है, इसीलिए। मिस्टर राय की गाडी मे मैं चढती हूं, यह बात उन्हें बरदाश्त नहीं होती। वे लोग रश्क करते हैं···आप हम लोगो के लिए कहीं किसी मकान का इन्तजाम कर दे सकते हैं ?"

"मैं ? मैं कलकत्ते मे मकान की तलाश करूं ?"

जयन्ती बोली, "आप बहुत बड़े व्यवसायी हैं, यहा बहुत बडे-बड़े आदमियों से आपकी जान-पहचान है, आप कोशिश करें तो हो जाए···"

कांजीभाई देसाई बड़े सज्जन हैं। जयन्ती मिस्टर पराशर के चेम्बर मे जितने व्यक्तियो से हिल-मिल चुकी है, देसाई जी उन लोगों की तरह नही है। उन लोगों के साथ महज पैसे का रिश्ता रहा है, लेकिन देसाई जी का व्यवहार काफी अच्छा रहा। इनके मन में दया-ममता नाम की चीज है। तीन दिन और तीन रात तक जयन्ती को कितना प्यार किया है ! सोने दिया है। उसके चलते काफी पैसे खर्च किए हैं। जयन्ती को यह पता था ही नही कि इस लाइन मे भी इतने अच्छे लोग रहा करते है। जब पैसा चुकाया है तो कीमत वसूल कर लेना ही इस लाइन का रिवाज है। हर कोई तो अब तक यही करता आया है। लेकिन यह कांजीलाल देसाई जैसे अलग ही तरह का व्यक्ति है।

देसाई जी ने हंसकर कहा, "बंबई होता तो कोशिश करता, यहां किराये के मकान का बन्दोबस्त नही कर पाऊंगा। यहां मेरी किसी से जान-पहचान नही है। इससे तो बेहतर यही रहेगा कि मिस्टर राय से कहो। वह तो लोकल आदमी है।"

"आनन्द ? आप आनन्द के बारे मे कह रहे हैं। वह तो कोशिश कर ही रहा है। लेकिन मिल नही रहा है। मकान-मालिक जिसको-तिसको मकान देने के लिए राजी नही हैं।"

"सलामी देने से भी नहीं देगा ? यानी जिसको बंबई में पगड़ी कहते हैं ?"

"सलामी कहां से दू ? मेरे बाबूजी के पास पैसा है ही कहां ? मैंने अपना कुछ पैसा इकट्ठा किया है। आपने मुझे जो पैसा दिया है, वह है। इसके अलावा थोड़ा-बहुत जमा किया है। मेरे पास सात-आठ सौ रुपये हैं। उससे क्या सलामी देना हो सकता है। हर कोई दो हजार, तीन हजार एडवांस मांगता है।"

काजीभाई देसाई ने एक उपाय सुझाया, "इससे अच्छा है कि तुम एक काम करो। न हो तो उसी पैसे से घर की मरम्मत करा लो। रसोईघर की छत से पानी टपकता है न, उसे मिस्त्री बुलाकर मरम्मत करा लो। रेलिंग टूट गई है, उसे भी ठीक करा लो। दीवार में पलस्तर, ह्वाइट-हाउसिंग वगैरह करा लो।"

जयन्ती बोली, "घर मकान-मालिक का है, मैं क्यों मरम्मत कराऊं ?"

"इसलिए कि मकान-मालिक मरम्मत नहीं कराता है। वह कोई इस मकान में रहने के लिए नहीं आ रहा है। रहोगी तो तुम्हीं लोग। और अगर उन रुपयों से पूरा न हो तो और कुछ रुपये दे रहा हूं। लो···"

और उसने बैग से नोटों का एक पूरा बंडल निकालकर उसमें से दस-दस रुपये के बीस नोट बाहर निकाले। उसके बाद नोटों को जयन्ती के हाथ में ठूंस दिया।

"मैं इस ट्रिप में ज्यादा नहीं दे पा रहा हूं," देसाई बोला, "बाद में जब अगली सरदियों में कलकत्ता आऊंगा तब तुम्हें अलग से ज्यादा पैसा दूंगा। लो···"

जयन्ती ने नोटों को अच्छी तरह मोड़कर ब्लाउज के अन्दर ठूंसकर रख लिया।

उसके बाद बोली, "असल में मेरी समस्या क्या है, जानते हैं ? मकान के बनिस्बत सारे किरायेदार ही बुरे हैं। मैं उन लोगों के आसपास अब रहना नहीं चाहती हूं। दोमंजिले पर एक लड़का रहता है, वह शराब पीकर रात में लौटता है···"

"वह चाहे शराब पिये, गांजा पिये, इससे तुम्हारा क्या आता-जाता है ?"

जयन्ती बोली, "एकमंजिले में एक दूसरा किरायेदार रहता है, उसके घर में एक विधवा बुढ़िया रहती है। वह मुहल्ले की गजट है। मिस्टर राय अपने

तालाब से एक मछली लाकर हमें प्रजेंट कर गया था। हमें प्रजेंट किया तो इसमें उन लोगों का क्या बिगड़ता है ? मगर उस बुढिया के लड़की-दामाद हैं। उसे साल-दर-साल बच्चा पैदा होता है, साल में एक बच्चा होना ही चाहिए···"

देसाई हंसता हुआ बोला, "उन लोगों को चाहे साल-दर-साल बच्चा हो, इससे तुम लोगों का क्या आता-जाता है ?"

जयन्ती के चेहरे पर दयनीयता रेंगने लगी—"मुझे यह सब गन्दगी अच्छी नहीं लगती है। इच्छा होती है, चारों तरफ साफ-सुथरा रहे—जिस तरह कि आपका होटल है। चारों तरफ कितना सजा-संवरा है ! सब कुछ चमक रहा है ! और आप अगर मेरे घर जाएं तो आपको अन्दर आने की इच्छा नहीं होगी। जगह तो गन्दी है ही, लोग भी गन्दे हैं। वहां हरेक का मन गन्दा हो गया है। हम लोगों का मुहल्ला ही गन्दगी का पड़ाव है···"

कांजीभाई देसाई और क्या कहे ! तीन दिनों के लिए कलकत्ता आया था। इस तरह की बहुत सारी जगहों में कांजीभाई को चक्कर लगाना पड़ता है। इस तरह की कितनी ही अजनबी लड़कियों के साथ रात बितानी पड़ती है। हांगकांग, बेरुत, पेरिस, लन्दन, घाना, नाइरोबी, लेबनान—कारोबार के सिलसिले में सारी दुनिया का चक्कर काटना पड़ता है। मगर कलकत्ते की इस लड़की जैसी किसी भी लड़की से उसका साक्षात्कार नहीं हुआ है। तीन दिनों से इस लड़की को देखता आ रहा है। यह किसी चीज की मांग नहीं करती है। पैसे के लिए भी इसमें अधिक लोभ नहीं है। और-और बार दूसरी-दूसरी लड़कियों ने दूकान चलकर गहना खरीदने को कहा है, साड़ी खरीदनी चाही है, होटल जाकर बढ़िया खाना खाना चाहा है। लेकिन इस तरह किसी भी लड़की ने घर की मांग नहीं की।

तब अच्छी तरह सुबह भी नहीं हुई थी। नींद टूट चुकी थी और दोनों नरम बिछावन पर गपशप कर रहे थे। और कुछ घंटे बीतते ही कांजीभाई देसाई हवाई जहाज से अपने देस के लिए रवाना हो जाएगा।

इस बात की याद आते ही जयन्ती की आंखों में पानी भर आया। अब फिर वही उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन लौटना है। अब वही, वही तीनमंजिला मकान। अब फिर वही टूटे जीने की रेलिंग। बाबूजी हर रोज टाट की एक थैली थामे घटिया किस्म की जीविका के लिए बाहर

निकलेंगे। उसके बाद दोमंजिले का बुड्ढा खांसना शुरू कर देगा, एकमंजिले की राधा बुआ अपना दैनिक शोर-चीत्कार शुरू कर देगी। अब न उसके बारे में सोचने मे ही जयन्ती को अच्छा लगता है और न उस परिवेश को ही वह देखना चाहती है।

"तुम फिक्र मत करो, मैं फिर सर्दियों मे आऊंगा।"

आहिस्ता-आहिस्ता नीद की जड़ता को परे ठेल कांजीभाई देसाई बगल से उठकर बैठ गया।

जयन्ती को बड़ा ही आश्चर्यजनक लगा। मानो, वर-कन्या हो। बड़े आदमी सुबह के वक्त जिस तरह सोकर उठते हैं, ठीक वैसे ही। बड़े आदमी हूबहू इसी तरह के बिस्तर पर, इसी तरह के कमरे मे नीद की बांहो में खोये रहते हैं। इसके बाद कांजीभाई देसाई ने रूम-सर्विस मे टेलीफोन किया। तुरन्त चाय आ जायेगी, टोस्ट और अंडे, कॉर्नफ्लेक्स मार्मलेड—जो भी मरजी हो, ऑर्डर दो। सब कुछ आकर तुम्हारे बिस्तर के सामने हाजिर हो जाएगा, बिलकुल तुम्हारे होठों के पास। कहां से आ रहा है, कौन ला रहा है, चूल्हे मे आग है या नही, बाजार मे मछली की दर क्या है—यह सब कुछ तुम्हें जानने की आवश्यकता नही है। इन कई दिनो के दरमियान सब कुछ उसके हाथो की पहुंच के दायरे मे आ गया है।

"सलाम सा'ब !"

बड़े-बड़े तमगे जड़ी युनिफॉर्म मे दो खानसामे हर रोज की तरह आकर खड़े हो गए। दोनों के हाथ मे ब्रेकफास्ट था। गन्ध फैल रही थी, मीठी गन्ध। और वहां उस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में अभी कौओं का उपद्रव शुरू हो गया होगा। बाबूजी थैली लेकर बाजार की ओर निकल गए होंगे, मा चूल्हे मे आग जलाने मे व्यस्त होगी। तीनो मंजिलो के धुएं के बगूले से सारा मकान भर गया होगा। सांस घुट रही होगी। ठीक इसी समय जयन्ती को उठकर रसोईघर मे घुसना पड़ता है। एकमंजिले से बाल्टी मे पानी भर-भरकर रसोई के लिए लाना पड़ता है, क्योंकि तीनमंजिले मे पानी नही आता है। थोड़ी देर के बाद पानी ढोने वाला आता है। एक खेप पानी लाने का पचीस पैसा लेता है। उसी पानी से बाबूजी और मा नहाते हैं, जयन्ती भी उसी पानी से नहाती है।

उसके बाद कपड़े फींचने के लिए पानी की जरूरत पड़ती है।

उस मकान में हर रोज पांच रुपये के पानी का खर्च है। उससे भी मन के लायक नहीं हो पाता है। जब दिन का दस बजता है तो जीना पानी से तर-बतर हो जाता है। बाबूजी एक बार उसी पानी से फिसलकर गिर पड़े थे और दो महीने तक खाट पर पड़े रहे थे। डाक्टर आया था, दवा मंगाई गई थी और अस्पताल में एक्स-रे कराया गया था। उसके बाद चार महीने तक घर में पड़े रहने के बाद काम-काज करने लायक हुए थे।

सृष्टिधर देखने के लिए आया था। 'कैसे हैं चाचा जी ?' उसने पूछा था।

मां ने गुस्से में आकर कहा था, 'तुम अब बात मत करो सृष्टिधर, तुम्हारे चलते ही यह कांड हुआ। तुम्हारे मालिक नल नहीं बनवा दे सकते हैं ? तुम लोगों के चलते किसी दिन जान गंवानी पड़ेगी।'

उस बार भी सृष्टिधर ने कहा था, 'मैंने मालिक को चिट्ठी लिख दी है मौसीजी, अबकी बाबू आ जाएं तो नल अवश्य बनवा दूंगा।'

'तुम बनवा चुके नल ! एक दिन हम लोग सभी जान से हाथ धो बैठेंगे। देखना है···' मां ने कहा था।

यहां वह सब नहीं है। तीन दिनों से कहां से बाथरूम में पानी आ रहा है, कौन आकर खाना परोस गया है, इसे जानने की किसी को जरूरत नहीं पड़ी है। सिर्फ हुक्म करना है, सब हुक्म पर ही निर्भर करता है। कांजीभाई देसाई को क्या चाहिए, रूम-सर्विस को इसका सिर्फ आदेश दिया है और तत्काल वह चीज आकर आंखों के सामने उपस्थित हो गई है।

एकाएक बाहर खट-खट आवाज हुई।

बिस्तर पर लेटे-लेटे ही जयन्ती ने रानी की तरह कहा, "कौन ?"

"मैं !"

आनन्द ने निरीह स्वर में बाहर से उत्तर दिया। आनन्द राय इसी तरह सुबह-शाम कमरे में आता है और हाल-चाल पूछ जाता है।

"आओ, अन्दर चले आओ।"

इस कई दिनों के दरमियान बढ़िया भोजन खाकर और लाड़-प्यार पाकर जयन्ती आलसी बन गई है। बिस्तर पर उसी तरह लेटी हुई बोली, "आओ, अन्दर चले आओ···"

आनन्द ने कहा, "कैसी हो ?"

"अच्छी तरह ।" जयन्ती बोली ।

"रात में नींद आई थी न ?"

जयन्ती बोली, "उसने सोने नहीं दिया..."

"बहुत अच्छा, वेरी गुड !"

जयन्ती परितृप्ति की हंसी हस दी । हंसकर पहले की तरह ही लेटी रही ।

"देसाई जी कहा हैं ?" आनन्द ने पूछा ।

"वहा ।" जयन्ती ने उंगली से बाथरूम की ओर इशारा किया ।

आनन्द यह सुनकर मजे से सोफे पर बैठ गया । उसके बाद बोला, "आज साढे ग्यारह बजे देसाई जी का प्लेन..."

"हां ।"

उसके बाद आनन्द ने आख मटकाते हुए धीमी आवाज मे कहा, "क्या हाल-चाल है ?"

"अच्छा !" जयन्ती ने छोटा-सा जवाब दिया ।

आनन्द ने कहा, "सिर्फ अच्छा ही क्यों, कहो बहुत अच्छा ।"

"हां, बहुत अच्छा ।"

"फिर यह तो बताओ, मेरा मुवक्किल कैसा है..." आनन्द ने फुसफुसाते हुए कहा ।

जयन्ती बोली, "हां, सचमुच बड़ा ही अच्छा मुवक्किल दिया है ।" कुछ देर तक खामोश रहने के बाद फिर बोली, "सर्दियों मे देसाई जी फिर कलकत्ता आयेंगे ।"

"सच ? फिर यह क्यों नही कहती हो कि खूब पटा लिया है । और कुछ माल-पानी दिया ?"

जयन्ती बोली, "मैंने और कुछ मागा ही नही । मैंने सिर्फ इतना ही कहा कि एक मकान का इन्तजाम कर दें ।"

"मकान ? पूरे मकान का ?"

जयन्ती बोली, "नहीं-नहीं; मकान नहीं बल्कि किराये का मकान । मैंने कहा : 'हम लोगों का मकान अच्छा नहीं है, रसोईघर की छत से पानी टपकता है, नल नही है ।' इसीलिए किसी अच्छे मुहल्ले मे मकान का बन्दोबस्त करने के

लिए कहा।"

आनन्द अफसोस प्रकट करने लगा, "अरे, इससे तो अच्छा था कुछ नकद ही हथिया लेती ···"

"नकद रुपये से तो मकान ही अच्छा होगा।" जयन्ती ने उत्तर दिया।

आनन्द बोला, "दुत, मकान क्या उसके हाथ में है ? मौज करने के लिए काफी ब्लैकमनी पाकेट में लेकर आया है। काला धन उड़ाने ही तो ये लोग कलकत्ता आया करते हैं। ऐसा मौका भी कोई हाथ से जाने देता है ?"

उसके बाद कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद बोला, "ख़ैर, जो होना था, हो गया है। अभी काफी वक्त है। साढ़े ग्यारह बजे प्लेन है, पट्ठा दस बजे तक रहेगा, इसके पहले ही कुछ माल-पानी सहेज लो। मैं चला···मेरे रहने से सहूलियत नहीं होगी···"

और वह दरवाज़े की तरफ बढ़ा। दरवाज़े के पास पहुंचने के बाद पीछे की ओर मुड़ा और बोला, "मैं यहां आया था, यह बात मत कहना। एकाध घंटे में मैं फिर आ रहा हूं।"

इतना कहकर बाहर निकला, निकलकर तिरछी निगाहों से देखा और फिर चुपचाप दरवाज़े को भेड़ दिया।

लेकिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का इतिहास इतने आराम के रास्ते से चलना नहीं जानता है। उस इतिहास का पथ बड़ा ही घुमावदार है। पृथ्वी के राजाओं की उन्नति-अवनति की तरह ही टेढ़ा-मेढ़ा है। इतिहास की सुआरानी जिस तरह एक दिन पटरानी के आसन पर बैठ गई, फिर जिस तरह किसी अदृश्य शक्ति के निर्देश से दुआरानी के रूप में रूपान्तरित हो गई, इस मकान का इतिहास भी वैसा ही है—इस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान का इतिहास।

अचानक किसी दिन एकमंज़िले के भवदुलाल की पत्नी एक बच्चे को जन्म देती है। एक झुण्ड बाल-बच्चों की भीड़ में फिर से एक अनिच्छित नवजात शिशु का आगमन होता है। उस दिन एकमंज़िले के गन्दे आंगन की टूटी सीढ़ी

की महफिल में राधा बुआ शंख बजाकर नवजात शिशु का स्वागत-सत्कार करती है। तब उस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान की आकृति कुछ और ही हो जाती है। जो आता है वह जान भी नहीं पाता है कि वह कहां किस नरक में आया है। शंख बजता है, षष्ठीपूजा होती है और मेड़ी के चेहरे पर हंसी उभर आती है। भवदुलाल उस दिन तहमत पहने जल्दी-जल्दी बाजार जाता है। अच्छी मछली ले आता है, उस दिन गलती से भवदुलाल दो-चार अधिक पान खा लेता है। उस दिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का वह मकान कुछ देर के लिए खुशियों से झूमने लगता है।

उधर दोमंजिले पर संभवतः ठीक उसी वक्त हिमांशु बाबू का दिल का दर्द बढ़ जाता है। खबर मिलते ही पत्नी रसोईघर से दौड़ती हुई आती है। विजय पिछली रात मयूरभंज से ठर्रा पीकर आया है और गहरी नींद के कारण उसकी नाक से आवाज हो रही है। एकाएक उसका नशा दूर हो जाता है। तब वह जैसे-तैसे मुहल्ले के डाक्टर के पास दौड़ा-दौड़ा जाता है। एक ही पल में उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान का वातावरण खंडित हो जाता है। एक ओर शंख की आवाज और दूसरी ओर हिमांशु बाबू के कलेजे की धड़कन में तीव्रता। उसी के बीच उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के परिप्रेक्ष्य में जन्म और मृत्यु का द्वन्द्व छिड़ जाता है।

और तीनमंजिले पर ?

तीनमंजिले पर शायद तब हरिपद चक्रवर्ती के रसोईघर में उत्सव की शुरुआत हो चुकी है। तीन दिन और तीन रात कहीं गुजारकर लड़की उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान में लौट आई है। लड़की के चेहरे पर हंसी तैर रही है। देह में चिकनाई आ गई है।

मां कहती है, "ये कई दिन किस तरह गुजरे ?"

जयन्ती कहती है, "बड़े मजे में मां, आनन्द दा के देस के मकान में खूब मछली खाने को मिली।"

"मछली ?"

जयन्ती कहती है, "हां मां, इतनी बड़ी-बड़ी मछलियां थीं कि क्या कहूं !"

मछली का नाम सुनते ही मां के मुंह में पानी भर आता है। "कौन-सी

मछली थी ?"

जयन्ती कहती है, "बड़ी-बड़ी रोहू और सिंघी मछलियां···"

मां उसे और बोलने नहीं देती है। "खैर, कहीं अब तक तुम जा नही पाई थी, आनन्द के कारण कम से कम उसके घर तो हो आई। मैंने तो उसी दिन कहा था कि वह अच्छा आदमी है।"

उसके बाद कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद बोली, "कितना बड़ा मकान है?"

जयन्ती बोली, "मकान बहुत बड़ा है मां, विशाल मकान! कितने ही कमरे, बरामदे! इस मकान से दस गुना बड़ा!"

"कौन-कौन आदमी रहता है?"

"कोई नहीं।"

"क्या कहा, कोई नही? चाचा, मामा, ताऊ, भाई, बहन कोई नही?"

जयन्ती बोली, "इतने रुपये की जायदाद है, इतने-इतने बगीचे तालाब हैं, लेकिन खानेवाला कोई आदमी नहीं है। हैं तो सिर्फ नौकर-चाकर और दरबान। वे ही लोग लूट-खसोटकर खा रहे हैं।"

मां बोली, "आनन्द ने बताया था कि उसका एक बगीचा और मकान बेहाला में है।"

जयन्ती बोली, "बेहाला में भी है और देस मे भी। असल मे कहा कितनी संपत्ति है उसे खुद भी पता नहीं। बहुत बड़े खानदान का लड़का है, खाने-पीने की कमी नही है, सिर्फ खर्च कर रहा है और दोनों हाथो से रुपया उडा रहा है···"

"बाप रे, ऐसा? रुपया उड़ा रहा है?"

"क्या करेगा, देखनेवाला तो कोई है नही। जो भी आकर हाथ फैलाता है, भरपूर दे देता है।"

"बाप रे, इतना पैसा?"

जयन्ती बोली, "इतना पैसा है मां, कि तुम उसके बारे में कल्पना भी नही कर सकती हो।"

उसके बाद बोली, "यह देखो मां, आनन्द दा ने मुझे यह साड़ी दी है।"

और उसने नये सूटकेस से काजीभाई देसाई की दी हुई साड़ी बाहर

निकालकर दिखाई।

हाथ में साड़ी लेकर मां ने उसे उलट-पुलटकर देखा।

"कितनी अच्छी साड़ी है! कितनी कीमत लगी?"

"सत्तर रुपये।"

"बाप रे, सत्तर रुपये की साड़ी तुझे यों ही दे दी। तूने मांगी थी?"

"वाह, मैं क्यों मांगने लगी? जोर-जबर्दस्ती मेरे हाथ में थमा दी। मैंने कहा: मुझे साड़ी मत दो, मां बिगड़ेगी। फिर भी वह नहीं माना। कहा: मौसीजी बिगड़ेगी तो मैं भी उनपर बिगड़ूंगा…"

"बड़ा अच्छा लड़का है!"

जयन्ती बोली, "और क्या दिया है, देखो…"

"क्या दिया है?"

जयन्ती ने बैग के अन्दर हाथ डालकर कान की बालियां बाहर निकाली। जिन्हें जयन्ती ने कांजीभाई देसाई पर दबाव डालकर खरीदवाया था। लाचार होकर कांजीभाई देसाई ने नामी ज्वेलर की दुकान से खरीद दी थी। कालेधन के मालिक ने कुछ रुपये मौज-मस्ती में खर्च कर मन के बोझ को थोड़ा हलका करना चाहा था। सो उतनी ही छोटी चीज की कीमत डेढ़ सौ रुपये दी थी।

"बाप रे! हीरे की है क्या? बड़ी ही चमक रही है!"

जयन्ती उतना बतियाकर ही चुप न हुई बल्कि उसके बाद कहा, "और ये रुपये लो मां, अपने पास रख लो…"

"रुपया!"

मां नोटों के बंडल की ओर एक क्षण लोलुप दृष्टि से ताकती रही। उसके बाद बंडल को हाथ बढ़ाकर ले लिया और बोली, "कितने रुपये हैं?"

जयन्ती बोली, "मालूम नहीं मां, न मैंने गिने हैं और न आनन्द दा ने ही गिनकर दिए हैं!"

"क्या कहती है! तुझे रुपया क्यों दिया? या तूने रुपया लिया ही क्यों?"

और मां मनोयोगपूर्वक रुपया गिनने लगी। जयन्ती कितनी ही बातें कहे जा रही थी। कितनी ही सुख, खुशियों और आराम की बातें, स्वागत-सत्कार के संदर्भ में ढेर सारी बातें…लेकिन मां के कानों में एक भी शब्द नहीं पहुंच रहा था। मां तब तल्लीन होकर रुपया गिन रही थी। इतने रुपये एक साथ जयन्ती

की मां ने नहीं देखे थे। अहा, जयन्ती की आयु लंबी हो, आनन्द दीर्घजीवी हो! कहां किस मां-बाप का लड़का है और कहां किस घटनाचक्र के कारण किसके घर में आया है! इसे भाग्यदेवता की शुभाशंसा ही कहना चाहिए।

"मां, उसमें कितने रुपये है?"

"ठहर बेटा, पहले गिन लेने दे···"

एक सौ दस, एक सौ बीस, एक सौ तीस···

एकाएक हरिपद चक्रवर्ती ने आकर कुंडी खटखटाई!

"बाबूजी आ गए मां!" जयन्ती ने कहा।

जयन्ती हड़बड़ाकर दरवाजा खोलने जा रही थी, मां ने गिनना रोककर कहा, "उनसे रुपये की बात मत कहना और न साडी-गहने की बात ही···"

"क्यो मा, कहने में क्या दोष है?"

मां, बोली "नहीं रहे, बाद में बतायेंगे।"

और वह रुपया, गहना, साड़ी सब कुछ लेकर बगल के कमरे में जाकर छिप गई। कहां छिपाये, कोई ठीक नहीं। वह हर चीज में हाथ लगाते हैं। अगर आलमारी उलटते-पलटते नजर पड़ जायेगी तो रुपया ले लेंगे।

बाहर फिर जंजीर खटखटाने की आवाज हुई।

जयन्ती ने अन्दर से पूछा, "कौन···बाबूजी?"

मनुष्य के जीवन में ऐसा-ऐसा नाटक मंचित होता है कि असली नाटक में भी वैसा देखने को नहीं मिलता। अन्यथा किसी को कैसे मालूम होता कि होटल के बन्द दरवाजे के पीछे जो रहस्य छिपा हुआ है, एक दिन बाहर निकलकर लोगों के सामने प्रत्यक्ष हो जाएगा?

लेकिन जो घटित होना ही है, उसे रोकने की सामर्थ्य शायद किसी मे नहीं है।

सचमुच, ठीक वक्त पर ही पुलिस आई थी। पुलिस की क्षमता सचमुच प्रशंसा करने लायक है। शुरू में खबर मिलने में थोड़ी देर हो गई थी। जब होटल में पहुंची तो चिड़िया उड़ चुकी थी।

होटल के लाउंज में इनफारमर बैठा हुआ था।

वह बोला, "आप लोग देर करके आए सर, वह भाग गया?"

"कहां गया ?"

इनफारमर ने बताया, "सीधे एयरपोर्ट···"

सोना बड़ी कीमती वस्तु है। हांगकांग से आया था। कस्टम-आफिस की आंखों में धूल झोंककर किस तरह इतना सोना हिन्दुस्तान आता है, यह बात देवताओं तक को मालूम नहीं। पुलिस का स्पेशल डिपार्टमेंट है, खास-खास इनफारमर हैं, उसकी बाबत लाखों रुपये खर्च होते हैं। लेकिन कांजीभाई देसाई अलग-अलग नामों से विभिन्न बन्दरगाहों में बिना किसी बाधा-विघ्न के सैर करता रहता है। उसके जैसे लोगों को पकड़ ले, ऐसा एक भी जाल किसी कारखाने में तैयार नहीं हुआ है।

इसलिए अब हवाई अड्डे पर चलो।

लेकिन पुलिस का दल जब तक पहुंचा, हवाई जहाज हवाई अड्डे से जा चुका था। केवल पीछे की लाल बत्ती टिमटिमा रही थी।

पुलिस फिर से होटल लौट आई। कलकत्ते का बड़ा होटल है। यहां रात-दिन अलग-अलग किस्म के लोगों का आना-जाना लगा रहता है। यहां पौंड, डॉलर, येन, फ्रैंक, रूबल सब आकर एक ही क्षण में एकाकार हो जाते हैं। दुनिया की अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा यहां आकर औरतों की टकसाल में छपती है और सोना-अशरफी बनकर निकल जाती है। यह कलकत्ता है!

एकाएक खाता उलटते-उलटते नाम पर नज़र पड़ी।

"यह कौन है—यह लड़की ?"

मैनेजर बोला, "इस लड़की ने मिस्टर देसाई के साथ इस होटल में तीन दिनों तक रातें गुज़ारी हैं।"

"चेहरा कैसा है ?"

"गोरा, भरा हुआ, स्लिम एंड सॉफ्ट···"

"एंड स्वीट आलसो! उम्र कितनी है ?"

"एट्टीन।"

इनफारमर ने कहा, "मैं इस लड़की को पहचानता हूं सर! मिस्टर पराशर के चेम्बर में आया करती थी। जहां तक याद है, उसका नाम है जयन्ती। जयन्ती चक्रवर्ती!"

"कहां रहती है ? घर कहां है, मालूम है ?"

इनफारमर ने कहा "मुझे मालूम है सर ! नीलमणि हालदार लेन में रहती है—उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में···"

"ठीक है, वहीं चलो।"

पुलिस वाले दल-बल के साथ उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन की ओर रवाना हुए। गाडी तीर की गति से आगे बढने लगी।

उसके बाद सीधे यहीं आकर खडी हुई। एकमंजिले की राधा बुआ देख रही थी। उस वक्त वह मुहल्ले की परिक्रमा कर वापस आ रही थी। पुलिस पर दृष्टि पड़ते ही अचकचा गई।

'माताजी, इस मकान में जयन्ती चक्रवर्ती नाम की कोई लडकी रहती है?"

राधा बुआ बोली, 'हम लोगो के ऊपर रहती है।"

"दोमंजिले पर ?"

राधा बुआ बोली, "दोमंजिले पर हिमांशु बाबू सपरिवार रहते हैं और तीन-मंजिले के हरिपद चक्रवर्ती की लडकी का नाम है जयन्ती। वो पूरब की तरफ सीढ़ी है। एकदम सीधे तीनमंजिले पर चले जाइए।"

पुलिस जब ऊपर चली गई, राधा बुआ वहा खड़ी नही रही। सीधे अपने मकान के अन्दर चली गई।

बोली, "ओ नेड़ी, पुलिस आई है···"

नेड़ी तब लेटी-लेटी हांफ रही थी। बात सुनकर एक बार आख उठाकर देखा। उसके बाद पूछा, "क्या हुआ है ?"

"पता नही बेटा, क्या हुआ है, इतना देखने का मेरे पास वक्त कहां है! मेरी गृहस्थी तो देखनेवाला कोई है ही नही, और मैं उन लोगो को देखने जाऊं !"

लेकिन तब तक पूरे मुहल्ले को इसका पता चल चुका था। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में पुलिस आई है, इसकी जानकारी प्राप्त करने में एक मिनट का भी विलंब न हुआ। आसपास के आदमी, इस-उस मुहल्ले के आदमी सभी यहां दौडे-दौड़े आए।

"यहां क्या हुआ है, साहब ?"

पुलिस की जाल लगी वैन उस वक्त भी मकान के सामने खडी थी।

एक आदमी बोला, "सुनने मे आया है कि चोरी का मामला है।"

"किस चीज की चोरी हुई है ?"

"सोने की।"

"सोने की चोरी ? अयं, क्या कह रहे हैं ! किसने सोने की चोरी की है ? कहा से सोने की चोरी की है ?"

आहिस्ता-आहिस्ता नीचे जमघट बढ़ने लगा। सभी मुंह वाये ऊपर की ओर ताकने लगे।

दोमंजिले के हिमांशु बाबू ने कहा, "अजी, सुनती हो ? वहां क्या हुआ है ?"

पत्नी रसोईघर मे थी। बोली, "तुम चुप रहो, हर चीज में दखल देना क्यो चाहते हो ?"

हिमाशु बाबू बोले, "इतने लोगों का जमघट क्यों है ? शोरगुल क्यों मचा है ?"

गोपा बोली, "आप चुप रहिए बाबूजी, डॉक्टर ने आपको चुप रहने को कहा है।"

पत्नी बोली, "बूढ़े आदमी का स्वभाव यही होता है ! बाहर कौन शोरगुल कर रहा है, इससे इनका क्या आता-जाता है ? हम लोगों के घर में तो कुछ हुआ नही है···"

"इस मकान के सामने पुलिस की गाड़ी क्यों खडी है ?" हिमाशु बाबू ने पूछा।

पत्नी बोली, "इससे तुम्हारा क्या बिगड़ता है ? पुलिस तुम्हारे मकान में नही आई है। तुम हर बात मे आंव-आंव क्यो करते हो ? डॉक्टर ने तुम्हें चिल्लाने से बार-बार मना किया है। बूढे आदमी के चलते कही मैं ही न पागल हो जाऊं···"

परन्तु यह सब कहने से ही आदमी कहीं चुप रह सकता है ? तब नीचे की भीड का आकार बढ चुका था, शोरगुल भी उसी अनुपात में बढ रहा था। पुलिस कब तीनमंजिले से उतरे और सारी बातों की जानकारी प्राप्त हो, इसी इन्तजार में लोग मुह बाये ऊपर की ओर ताक रहे थे।

दरवाजा खोलते ही जयन्ती चक्रवर्ती आवाक् हो गई।

"आपका ही नाम जयन्ती चक्रवर्ती है ?"

पुलिस पर दृष्टि पड़ते ही जयन्ती का चेहरा बुझ गया। प्रश्न सुनते ही

और भी अधिक घबरा गई।

"हां···"

"आप पिछले तीन दिन, तीन रात कहां थीं ?"

अब तक उसने जो बातें अपनी मां से कही थीं, वे बातें भी अटकी पड़ी रह गईं।

"बताइए, आप स्ट्रैंड होटल मे थी या नही ? होटल के खाते में आपका नाम लिखा हुआ है। मिस्टर काजीभाई देसाई के साथ आपने वहां कितने दिन गुज़ारे हैं ?"

जयन्ती गूंगे की तरह खड़ी रही।

"मिस्टर काजीभाई देसाई को आप कितने दिनों से पहचानती हैं ?"

जयन्ती बोली, "इसके पहले कोई जान-पहचान नही थी, यह पहली मुलाकात थी···"

"आप उसके साथ क्यो थीं ? वह आपका कौन होता है ?"

"कोई नही···" जयन्ती ने कहा।

"फिर क्या आप रात में उसके साथ सोया करती थी ?"

जयन्ती क्या कहे, यह समझ न पाने के कारण उसके मुंह से 'हां' निकल गया।

"इसके लिए आपने पैसा लिया था ?"

"हां।"

"कितना ?"

"मैंने गिनकर नही देखा है।"

"अभी आपके घर में कौन-कौन है ?"

जयन्ती बोली, "सिर्फ मां, और कोई नहीं···"

"चलिए, आपकी मां से हमें बतियाना है।"

मां तब पीछे ओट में खड़ी सब सुन रही थी। पुलिस ज्यों ही अन्दर जाने लगी, उसने वहां से हटना चाहा, लेकिन पुलिस की आंखें उस पर पड़ चुकी थीं।

"माताजी, सुनिए, आपके घर में सोना है या नही, हम यही देखने आए हैं। इस मकान की हमे तलाशी लेनी है।"

मां रोती-रोती बोली, "सोना हमें कहां से मिलेगा बेटा, गृहस्वामी घर में

नही हैं, वह आ जाएं…"

पुलिस वाले हंसने लगे।

"ऐसा नहीं होता है माताजी, हमें आपके मकान की तलाशी लेनी ही है, हम लोगों के पास वारंट है। आप चाहे राजी हों या नहीं, मगर हम तलाशी लेंगे ही।"

मां फूट-फूटकर रोने लगी, "हम लोग औरतें हैं, घर में गृहस्वामी नहीं हैं, आप लोग बाद मे नही आ सकते हैं ?"

पुलिस के आदमियो ने कहा, " 'औरत' कहने से काम नहीं चलेगा माताजी। आपकी लड़की इतने दिनों तक एक मर्द के साथ रात गुजार आई है, यह आपको पता है ?"

"होटल मे क्यों कह रहे हो बेटा ? मेरी लड़की होटल में पराये मर्द के साथ रात गुजारेगी ? आप लोग क्या कह रहे हैं !"

"हां माताजी, होटल के खाते मे आपकी लड़की का नाम लिखा हुआ है। हम लोगों की बात पर यकीन न हो तो आप जाकर होटल के खाते में देख सकती हैं।"

मा चिहुंक उठी, "पराये मर्द के साथ क्यों कह रहे हैं ? वह आनन्द के साथ उसके देस पर थी। आनन्द मेरे लिए क्या पराया है ? आनन्द मेरे लिए लड़के की तरह है…"

"ठीक है, आपके घर की तलाशी लेकर हम देखना चाहते हैं कि सोना है या नहीं।"

अंततः उन लोगों ने तलाशी लेना शुरू किया। एक गवाह की जरूरत है—थर्ड पार्टी का होना चाहिए। गवाह कौन बनेगा ?

पुलिस का आदमी ही बाहर से गवाह लाने गया। मां ने थोड़ी आपत्ति की, "हम लोगों के घर में बाहर का कोई आदमी क्यों घुसेगा ? हम उसे घुसने ही क्यों देंगे ?"

"सो तो करना ही होगा माताजी। अगर कोई चीज खो जाए तो गवाह कौन रहेगा ?"

गवाह कौन होगा ? सड़क पर तब लोगों की भीड़ उमड़ी हुई थी। ज्यादातर आदमी झमेला-झंझट में फंसना नही चाहते थे।

भोलादत्त, पटला, केतो—सभी उपस्थित थे। उन्होंने गवाह बनने की स्वीकृति दी। एक ही गवाह काफी था। भोलादत्त ने आगे बढ़कर कहा, "मैं गवाह बनने को तैयार हूं।"

टूटे ज़ीने से भोलादत्त पहली बार तीनमंजिले पर पहुंचा। वह विजय वगैरह का उस्ताद था। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का वह मकान तीनमंजिला है। उसने हरिपद चक्रवर्ती की लड़की को अनेक बार इस घर से सज-संवरकर निकलते देखा है। उस दिन वह उसी हरिपद चक्रवर्ती के घर के अन्दर पहुंचा।

भोलादत्त ने एक-एक चीज़ को गौर से देखा। पालिश झड़ी हुई लकड़ी की एक आलमारी और एक पलंग। मैला बिछावन और सिमेंट उखड़ा हुआ फर्श।

हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी ने आलमारी खोलकर एक-एक सामान दिखाया। कुछ साड़ियां, साये, धोतियां, कुरते, ब्लाउज़ दो-एक छोटे-मोटे गहने। इससे अधिक किसी के घर में कोई सामान नहीं रहता है—खास तौर से उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के जैसे मकानों में।

अन्ततः पुलिस पार्टी हताश हो गई।

"कुछ अन्यथा मत लें, आप लोगों को व्यर्थ ही हैरान किया···" पुलिस के आदमी ने कहा।

जयन्ती की मां बोली, "मैंने तो आप लोगों से पहले ही कह दिया था कि मेरी लड़की वैसी नहीं है। वह घूमने के लिए आनन्द के घर पर गई थी।"

पुलिस के अफसर ने कहा, "नहीं माताजी, आप गलती में हैं, आपकी लड़की कहीं नहीं गई थी, बल्कि कलकत्ता शहर ही में थी। तीन दिन तीन रात इसने स्ट्रैण्ड होटल में ही गुज़ारे हैं।"

उसके बाद जैसा कि अमूमन होता है पुलिस पार्टी जिस तरह आई थी उसी तरह वापस चली गई।

भोलादत्त ज्यों ही नीचे उतरा, दल के लोगों ने उसे घेर लिया।

"क्या हुआ था गुरू? सालों को कुछ मिला?"

भोलादत्त बोला, "नहीं भाई, साले बेवकूफ बन गए। कुछ भी हाथ नहीं आया।"

"फिर साले खेल खेलने आए थे?"

भोलादत्त बोला, "लड़की उस साले के साथ तीन रात होटल में रह चुकी है। वही साला सोने की तस्करी करता है। सोना है या नहीं, यही जानने के लिए पुलिस मकान की तलाशी करने आई थी।"

"वही साला न, जो चमचमाती गाडी में आया करता था?"

"हा; इतने दिनों तक साले के पीछे-पीछे चक्कर काटा, मगर एक दिन भी पकड़ मे नही आया। अबकी साला उस छोकरी को लेकर होटल में ठहरा था।"

बात यही समाप्त न हुई। पुलिस जिस तरह आई थी, उसी तरह वापस चली गई। लेकिन उसकी चर्चा बहुत दिनों तक चलती रही। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन की घटना को केंद्र बनाकर मुहल्ले-मुहल्ले में मजलिस जमने लगी। घर, रसोईघर, सड़क, मोड, बाजार हर जगह एक ही चर्चा।

दफ्तर से लौटने के वक्त ही हरिपद को सूचना मिली।

सब कुछ जानने के बावजूद वृद्ध पडोसियो ने पूछा, "चक्रवर्ती साहब आपके मकान में क्या हुआ था?"

"मेरे मकान मे?"

"हा साहब आपके मकान में! उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान के तीनमंजिले पर पुलिस पहुंची थी। आपको अब तक खबर नही मिली?"

"नही तो।"

इतना कहकर उसने जल्दी-जल्दी अपने मकान की ओर कदम बढाए। पुलिस! पुलिस तो उसके घर में कई बार आ चुकी है। मुहल्ले के लडको के अत्याचार के कारण कहीं भी पुलिस की अनुपस्थिति नही रहती है।

"देखिए जाकर क्या हुआ था।"

"आपको कुछ सुनने में आया है?"

उस आदमी ने कहा, 'मैं उस वक्त घर पर नही था। सुनने में आया कि पुलिस सोने की तलाश कर रही थी।"

"सोने की ?"

"हां साहब, सोने की। सोना यानी गोल्ड। आजकल गोल्ड-स्मगलर तो हर जगह हैं। सन्देह में पुलिस आपके घर पर आई थी।"

हरिपद चक्रवर्ती बोला, "मेरे घर तीनमंज़िले पर ? मैंने देखा है कि दो मंज़िले के हिमांशु बाबू का लड़का शराब पीकर घर लौटता है···"

"नहीं साहब, सुनने में आया है कि तीनमंज़िले पर आपके मकान में आई थी।"

हरिपद चक्रवर्ती तेज़ कदमों से अपने मकान की ओर बढ़ा। यह कैसे हुआ ! जयन्ती तो घर में नहीं है। फिर वही क्या कुछ कांड कर बैठी ?

कौन जाने ! घटिया किस्म की जीविका जीते-जीते आज जीवन के इस अन्तिम पड़ाव में हरिपद चक्रवर्ती को इस स्थिति में पहुंचना पड़ा। कभी इस तरह की कलंकजनित बदनामी उसे ओढ़नी नहीं पड़ी थी। फिर यह उसके साथ क्या घटित हो गया ?

रास्ता चलते-चलते उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे बहुत-से लोग उसकी ओर उंगली से इशारा कर रहे हैं। उसकी ओर उंगली से इशारा करके कुछ दिखा रहे हैं, कुछ कह रहे हैं।

जब उसने नीलमणि हालदार लेन में पैर रखा, सड़क के मोड़ पर वे ही आवारा लड़के खड़े थे—वही भोलादत्त, पटला, केतो और दोमंज़िले का वह हिमांशु बाबू का बदमाश लड़का।

हरिपद चक्रवर्ती मुंह घुमाकर जा रहा था लेकिन भोलादत्त उसके सामने बढ़ आया।

"चाचाजी···"

चाचाजी ! क्या कह रहा है यह ! हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "क्या ?"

भोलादत्त बोला, "देखिए हम लोग मुहल्ले के लड़के हैं, आप भी हमारे मुहल्ले के आदमी हैं। हम लोगों में आपके प्रति वैसी ही भक्ति है, जैसी गुरुजनों के प्रति होनी चाहिए। कुछ अन्यथा मत लें, हम आपकी भलाई के लिए ही कह रहे हैं।"

हरिपद चक्रवर्ती को गुस्सा हो आया, "इतनी बहानेबाजी की क्या ज़रूरत है, जो कहना है खुलासा कहो।"

"आपकी लड़की के बारे में कह रहा हूं। आज पुलिस आपके घर पर आई थी। मुहल्ले के हर आदमी ने देखा है। आपकी लड़की उस लंपट लड़के के साथ अक्सर सैर-सपाटा करती है, अब तक हम सब देखते आए हैं, हालांकि कहा कुछ भी नहीं है, लेकिन अब हम बरदाश्त नहीं करेंगे। अबकी जब भी उसे आपकी लड़की के साथ देखेंगे उसकी खाल उधेड़ देंगे। कहे देता हूं···"

"तुम आनन्द के बारे में कह रहे हो?"

"जी हां, चाचाजी! मुहल्ले की इज्जत हर व्यक्ति की इज्जत है। उस आवारा लड़के के साथ हमारे मुहल्ले की लड़की तीन रात होटल में बिताए और उसके कारण भले आदमियों के मुहल्ले में पुलिस आए, यह अच्छी बात नहीं है। आपकी लड़की की जिस तरह कोई इज्जत है, उसी तरह मुहल्ले की भी कोई इज्जत है। कहिए ठीक कह रहा हूं न?"

आक्रोश के कारण हरिपद चक्रवर्ती के पूरे शरीर में एक सिरे से दूसरे सिरे तक झुरझुरी रेंगने लगी।

भोलादत्त बोला, "जाइए, अभी आप दफ्तर से आ रहे हैं, अभी आप थके-मांदे हैं। घर जाइए, अधिक गुस्से में मत आइए इससे खून-खराबा हो सकता है···"

हरिपद अब वहां रुका नहीं। जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ नीलमणि हालदार लेन के अपने उनतीस बटे तीन बटे छह मकान की तरफ चल दिया।

•

हमेशा यही सिलसिला चालू था। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का जीवन इसी प्रकार के उत्थान-पतन के जटिल पथ से आगे बढ़ रहा था। अब तक ये आपसी झगड़ा-झंझट, गन्दगी और कलंक में जीवन जी रहे थे। लेकिन अब लगता है कि पुराना सिलसिला चलने वाला नहीं है।

उस बार जब सृष्टिधर आया तो सभी ने उसे घर दबाया। राधा बुआ ने एकबारगी सीधे बढ़कर सृष्टिधर का गला जैसे दबोच लिया।

"तुमने क्या सोचा है सृष्टिधर—सोचा क्या है? तुम क्या हमें घर से निकालना चाहते हो? तुम्हारा मालिक यहां आयेगा या वह मर चुका है?"

दो मंजिलें की हिमांशु बाबू की पत्नी भी झुंझला उठी, "क्या चाहते हो? बताओ, तुम क्या चाहते हो? सुनू तो सही, तुम फिर किस वास्ते आए हो? यह गृहस्थों का घर है या बस्ती का कोई मकान? बस्ती में भी आदमी इसके बनिस्बत आराम से रहते हैं। तुम्हारा मालिक क्या हमें गाय-भेड़ समझता है? इस तरह रोज-रोज पुलिस आयेगी और लोग-बाग चोर समझकर हम पर शक-शुबहा करेंगे? हम लोग क्या दागी आसामी हैं?"

तीनमंजिले में भी वही स्वागत-सत्कार हुआ। सृष्टिधर पर आंखें जाते ही हरिपद चक्रवर्ती ने खरी-खोटी सुनाई—

"भागो, भागो, सामने से हटो···अबकी तुम्हारा मालिक अगर खुद नहीं आयेगा तो मैं भी किराया नहीं दूगा।"

मानो, गरदन पर हाथ रखकर सृष्टिधर को बाहर निकाल दिया।

लेकिन सृष्टिधर करे तो क्या करे? वह तो कोई मालिक है नहीं। मालिक है वही अदृश्य, अलभ्य, अवाङ्मनसोगोचर ईश्वरप्रसाद ढनढनियां। न उसका क्षय होता है, न वह लय होता है। वह है अव्यय, अक्षय, निराकार, निरवयव विधाता पुरुष। उसे न तो आंखों से देखा जा सकता है, न हाथ से पकड़ा जा सकता है। वह किसी नियम के अधीन नहीं है और न किसी शृंखला से आबद्ध है। वह है सच्चिदानन्द सोहं। उससे डरा जा सकता है क्योंकि वह भयंकर है; उसकी भक्ति की जा सकती है क्योंकि वह आनन्दस्वरूप है। वह हम लोगों का एकमात्र आश्रयदाता है, वही पतितपावन है। हम मन-प्राणों से उसी ईश्वर-प्रसाद ढनढनिया की कामना करते हैं, हम प्रार्थनारत है कि वह अपना मंगल-हस्त विस्तारित कर हमारा सारा दुःख, सारा अभाव दूर कर दे। समस्त अभि-योगों का प्रतिकार करे। लेकिन नहीं, वह आयेगा नहीं।

जब उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान में सारी चीजें स्वाभाविक गति से चलती हैं, तब ईश्वरप्रसाद ढनढनियां को लोग याद नहीं करते। तब वहां बच्चे पैदा होते है, अन्नप्राशन मनाया जाता है, शंख बजता है, मांस पकने की गन्ध आती है, घर की औरतें सिनेमा जाती हैं, गापा नलधर में जाकर सिनेमा के गीत गुनगुनाती है, राधा बुआ पूजाघर में घुसकर संध्या-आह्निक करती है, विजय सरकार अपने दोस्त-मित्रों के साथ मयूरभंज रोड की देशी शराब की दुकान में पेग पर पेग ढालता है और ईश्वरप्रसाद

ढनढनियां तब अपने अदृश्य स्वर्ग मे अदृश्य ही रहता है। उसके बारे में कोई आदमी माथापच्ची नही करता है। सृष्टिधर झंझट-झमेले के बिना माहवारी किराया वसूलकर रसीद दे जाता है।

लेकिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में नियम से अधिक अनियम का ही बोलबाला रहता है। अपवाद की वजह से ही अधिक संकट पैदा होता है। तब कही कोई समाधान नज़र न आने पर ईश्वरप्रसाद ढनढनियां को ही कोसा जाता है।

उस दिन भी लोग उसी तरह कोसने लगे।

वह एक कांड ही था।

बड़ा ही बीभत्स कांड !

पता नहीं, कैसे तो अचानक जानकारी प्राप्त हो गई। दुनिया में बहुत-सी गोपनीय वस्तुओं की कैसे तो एकाएक जानकारी प्राप्त हो जाती है !

शुरू में किसी को भी मालूम नही हुआ, लेकिन स्त्री से सम्बन्धित रहस्य हो तो फिर दबा का दबा कैसे रह सकता है ?

हरिपद चक्रवर्ती की लड़की को देखने के लिए डाक्टर आया था। और कोई बात होती तो हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी डाक्टर को नहीं बुलाती। लेकिन उसके बाद से ही यह बात जाहिर हो गई।

विजय दौड़ता हुआ भोलादत्त के अड्डे पर पहुंचा। भोलादत्त, पटला, फेतो वगैरह तब बेकार बैठे थे। सड़क की ओर उड़ती निगाहों से ताक रहे थे और ज़ोरो से सिगरेट का कश ले-लेकर धुएं के छल्ले उड़ा रहे थे।

विजय दौड़ता हुआ वहीं पहुंचा, "गुरू सर्वनाश हो गया ! साला सर्वनाश करके चलता बना।"

"कौन ? किसके बारे मे कह रहा है ?"

"वही साला। वही जो खुशनुमा गाड़ी पर चढ़कर यहां आता था और छोकरी को लेकर सैर-सपाटा किया करता था। वही साला···"

"क्या किया ?"

विजय बोला, "छोकरी का पांव भारी करके चलता बना···अब आ ही नहीं रहा है···"

"ऐं, क्या कह रहा है तू !"

भोलादत्त जैसा व्यक्ति भी जैसे आकाश से गिर पड़ा हो। कहां किस व्यक्ति की लड़की का सर्वनाश कर गया? परन्तु भोलादत्त को लगा जैसे उन लोगों का ही सर्वनाश हो गया हो। यह जैसे हरिपद चक्रवर्ती की लड़की का अपमान न हो बल्कि उन लोगों का अपमान हो। पराये मुहल्ले का लड़का इस मुहल्ले में आकर उन लोगों की आंखों के सामने जो अत्याचार कर गया, यह बरदाश्त करने लायक नहीं है। उत्तेजना के मारे हर किसी ने एक-एक सिगरेट जलाई।

केतो बोला, "तुमसे किसने कहा?"

"डाक्टर ने।"

"डाक्टर ने किससे कहा है?"

"फिर पूछ रहे हो किससे कहा! हरिपद चक्रवर्ती से कहा—लड़की के बाप से। अब बाप इस-उसके पास दौड़-धूप कर रहा है।"

"कितने महीने?"

विजय बोला, "सुनने में आया है सात महीने का। सात महीने से खींचतान चल रही है। इतने दिनों से किसी से बताया नहीं, अब नष्ट कर देना चाहती है।"

पटला बोला, "नष्ट नहीं करने दूंगा। मेरे मौसाजी का फ्रेंड मुचिपाड़ा थाने का ओ० सी० है, उसके बाप को पकड़वा दूंगा। और उस साले को भी पकड़वा दूंगा। अगर नष्ट कर दिया तो सभी पट्ठों को जेल की हवा खिलाऊंगा..."

बेकार आवारा युवकों की जमात को जैसे कोई महान् कार्य मिल गया हो। उस दिन सोचते-सोचते उन्होंने दस पैकेट सिगरेट फूंक डाली। इसके बाद मयूरभंज रोड जाकर चारों व्यक्तियों ने ठर्रा की चार बोतलें गटक डालीं। फिर भी सोच-सोचकर हैरान होने के बावजूद उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझा।

और एक बोतल जब हलक के नीचे उतरी, भोलादत्त के दिमाग में अक्ल आई। बोला, "बस, उपाय निकल आया।"

सभी चिहुंक उठे, "क्या? कौन-सा उपाय निकला गुरू?"

भोलादत्त बोला, "उस साले को खोज निकालूंगा। वही उस आवारा साले को। साले, तुम्हें बेइज्जत करने लायक और कोई नहीं मिली, हम लोगों के मुहल्ले में आकर कप्तान बनने चले हो।"

"कैसे खोज निकालोगे ?"

पटला बोला, "अरे, मेरे मौसाजी का दोस्त मुचिपाड़ा थाने का ओ० सी० है। खोज निकालने में कितनी देर लगेगी ?"

भोलादत्त ने कहा, "सुना है, साला बहुत पैसेवाला है। साले की जमीदारी है, तालाब है, बगीचा और मकान है। वहां से मछली लाकर हरिपद चक्रवर्ती के घरवालों को खिलाता है।"

"सो, हम खिला देते हैं! अबकी अच्छी तरह खिला देते हैं। पता लगे कि पट्ठा रहता कहां है!"

तब तक मयूरभज की देशी शराब की दुकान में शराब के नशे का रंग और ज्यादा जम चुका था। केकड़े का भुजिया और अंतड़ी का मास खाने के बाद उस दिन उन आवारा लड़कों को जैसे अचानक एक काम मिल गया। मानो, अब ये लोग पृथ्वी को जीत लेंगे। मानो, अबकी एक सामाजिक कार्य करने का मौका पाकर वे जी जाएंगे। इस काम के सामने दुर्गापूजा, सरस्वती पूजा इत्यादि का कोई महत्त्व नहीं। इतने दिनों के बाद दिखा देंगे कि वे भी मनुष्य की कोटि में हैं। वे भी नेता हैं।

भोलादत्त नशे की झोंक में बोला, "रघुपति राघव राजाराम···"

पेंतो, पटला, विजय वगैरह समवेत स्वर में बोल उठे, "सबसे अच्छा खांटीराम···"

उसके बाद सभी चिल्ला-चिल्लाकर शोरगुल करने लगे, "हिप-हिप हुर्रे··· हिप-हिप···"

पियक्कड़ कहकर उन लोगों को नजर-अन्दाज किया जा सकता है। वे आदमी नहीं हैं, समाज के बाहर हैं। लेकिन जो समाज के दायरे में हैं, वे भी कम माथापच्ची नहीं कर रहे हैं। सभी की आंखों की ओट में यह काम कर लिया जाएगा, हरिपद चक्रवर्ती ऐसी एक क्षीण आशा पाले हुए था। सोचा था, चुपके-चुपके सारा काम कर लेगा। किसी के कान में इसकी भनक नहीं पहुंचेगी।

हरिपद चक्रवर्ती की अपेक्षा उसकी पत्नी को ही अधिक चिन्ता थी।

अब लड़की को खरी-खोटी सुनाने से कोई फायदा नहीं था। बरहाल जो

करना था, कर चुकी थी। लेकिन गुस्सा अब तक दूर नहीं हुआ था।

"सर्वनाशी, मुहजली, तूने अपने पर तो कलंक लगाया ही, साथ-साथ हम पर भी लगाया। तुझमें अक्ल का नामोनिशान नहीं है। अब मुहल्लेवालों के सामने कैसे मुंह दिखाएं ?"

जयन्ती एक बात का भी उत्तर नहीं देती थी। केवल गुमसुम पड़ी रहती थी। जैसे वह बड़ी शान्त हो गई हो। जैसे उसका समस्त ज्ञान, समस्त विवेक लुप्त हो गया हो। आनन्द ने उसे अभयदान दिया था। कहा था, 'तुम्हारे लिए डरने की कोई बात नहीं है, मैं हूं ही।'

"बता, वह हरामजादा कहां गया ?"

जयन्ती फिर भी चुप्पी साधे रही।

"बता, वह हरामजादा कहां गया ? उसको या तो खबर भेज या उसका पता दे दे, वह उसके घर पर जायेंगे। जाकर बुला लायेंगे।"

इस पर भी जयन्ती ने कोई जवाब न दिया।

"पता बता न ! कई दिनों तक उसके देस में जाकर रही और पता तुझे मालूम ही नहीं है ? तेरे लिए इतना शरमाने की क्या बात है ? किस बात का डर है ? हम न तो उसे मारेंगे-पीटेंगे, न कुछ कहेंगे ही।"

जयन्ती सिर्फ रोती रहती थी। तकिये में मुंह छिपाकर सिर्फ रोती रहती थी। वह कैसे कहे कि आनन्द का पता उसे मालूम नहीं है। उसे सिर्फ मिस्टर पराशर के चेम्बर का पता मालूम है। वहां भी जाकर जयन्ती ने पूछताछ की थी। मिस्टर पराशर ने बताया था कि उसके बाप की कैंसर की बीमारी बढ़ गई है और यही वजह है कि वह आ नहीं पा रहा है।

इसके बाद अब वह कहां जाए ? किसके पास जाकर आनन्द का पता पूछे ? आनन्द का घर कहां है, यह भी उसे मालूम नहीं है। आनन्द ने उससे बहुत बार कहा था कि वह जयन्ती को अपने घर पर ले चलेगा, परन्तु ले नहीं गया ! अब वह कहां मिलेगा ?

और एक व्यक्ति है जिसके पास जाया जा सकता है और वह है कांजीभाई देसाई ! कांजीभाई देसाई से तीन ही रातों में वह तीन युगों की घनिष्ठता में आबद्ध हो गई थी।

लेकिन उसका असली नाम क्या यही है ?

पुलिस ने आकर बताया था कि कांजीभाई देसाई सोने की तस्करी करता है। असली नाम होटल के खाते में लिखा हुआ है।

हरिपद चक्रवर्ती सुबह से ही घटिया किस्म की जीविका कमाने निकल जाता है और रात में वापस आता है। लेकिन इन दिनों के दरम्यान उसका जाना न हो पाया। इस डाक्टर, उस डाक्टर की तलाश में दौड़-धूप करता रहा। सभी के सामने हर बात खोलकर भी नहीं कही जा सकती है।

डाक्टर कहते, "देखिए, यह सब रिस्क हम नहीं ले सकते। सात महीने निकल चुके हैं..."

जो लोग इस तरह का काम किया करते हैं, उनका पता हरिपद चक्रवर्ती को मालूम नहीं था।

सुबह से शाम तक घूमते-घूमते जब वह वापस आता था तो रात काफी गहरा चुकी होती थी।

पुष्प इन्तजार में बैठी रहती थी। हरिपद के वापस आते ही पूछती, 'क्या हुआ?"

"कुछ भी नहीं..." हरिपद कहता।

पुष्प गुस्से में आकर कहती, "कोई भी किसी तरह की दवा नहीं देता है?"

हरिपद कहता, "मैंने तो तो कहा था, लेकिन डाक्टर ने बताया कि उसमें मुसीबत है। इतनी देर हो चुकी है कि उससे नहीं होगा..."

"फिर अब क्या होगा?"

'अब क्या होगा,' हर कोई यही प्रश्न उछालता है। अब क्या होगा? कौन जिन्दा रख सकता है?

पुष्प कहती, "और तुम्हारा यह मकान ऐसा है कि किसी से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, किसी से सलाह-मशवरा तक नहीं किया जा सकता। मैं क्या करूं! इच्छा होती है कि सिर पीट-पीटकर जान दे दूं..."

इस तरह बात फैल जाएगी, यह बात इन लोगों ने नहीं सोची थी। सड़क पर निकलते ही हर कोई हरिपद चक्रवर्ती की ओर वेधक दृष्टि से ताकता था। राधा बुआ हर जगह इस बात का प्रचार किए चल रही थी। कहती, "अब मकान नफरत हो गई है बहन, पाप के राज्य में अब रहा नहीं जाता। दामाद से

दूसरा मकान खोजने को कहा है···"

फूल भाभी के मन में बड़ा ही आग्रह बना रहता था। खोद-खोदकर एक-एक बात पूछती थी। कहती, "लड़की को उल्टी वगैरह होती है, बहन ?"

राधा बुआ कहती, "मालूम नहीं बहन, नफरत के मारे मेरी जान निकलने लगती है। नेडी से कहती हूं : तेरे कारण मेरा जात-धर्म सब बरबाद हो गया ! कहां मैं पूजा-पाठ में व्यस्त रहती और कहां तुम मुझे इस पाप के राज्य में ले आई ··"

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान मे सचमुच संकट घिर आया है। संकट यहां पहले भी बहुत बार आ चुका है, लेकिन कभी उसका रूप इतना प्रबल नही था।

हिमांशु बाबू को दिल की बीमारी रहने से क्या होगा ? डाक्टर ने उन्हें उद्विग्न रहने से मना किया है। लेकिन बिना उद्विग्न हुए आदमी इस युग मे कही जीवन जी सकता है ? आज का युग क्या निरुद्विग्न होने का युग है !

हिमांशु बाबू की पत्नी कहती, "मकान बदल डालो, मैं अब इस पाप नगरी मे नहीं रह पाऊंगी। इससे तो अच्छा है कि झोंपड़े मे किसी तरह पडी रहूं, मुझे दोमंजिले की इस पक्की इमारत के सुख की जरूरत नहीं है। एक तो ऐसा गया-गुजरा मकान और उस पर यह पाप···"

विजय की वाणी मे प्रखरता आ गई है।

वह कहता, "तब मैंने कहा था न, कि इस लड़की का स्वभाव-चरित्र ठीक नही है। अब हुआ न !"

मां कहती, "तो क्या करूं, बेटा, तू तो किसी मकान की तलाश कर सकता है !"

"अबकी सृष्टिधर आया तो मैं उसकी जान ले लूंगा···सारा दोष साले मकान-मालिक का है, जिसको-तिसको किराये पर लगाता है···उसके बाद पुलिस से जाकर कहूंगा कि मैंने एक आदमी की हत्या की है···"

उस दिन शाम के अंधकार मे अचानक एक काड घटित हो गया। केतो, भोलादत्त, पटला और विजय नुक्कड़ पर अड्डेबाजी कर रहे थे। एकाएक लगा, उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के सामने एक टैक्सी

आकर खड़ी हुई।

भोलादत्त बोला, "अरे, लगता है, वह साला आया है, वही...वह आवारा लड़का।"

केतो के मन मे संदेह पैदा हुआ : "टैक्सी से क्यों आयेगा ? उसके पास गाड़ी है ..."

"लोगो की आंख में धूल झोंकने के लिए। गाड़ी लेकर आने से कही पता न चल जाए, इसीलिए ..."

अब बातचीत बन्द रहे। साले को पकड़ना है। सभी एक ही दौड़ में आए और आकर गाड़ी का घेराव किया। उन्होंने देखा, वह बात नही थी जो उन्होंने सोचा था। हरिपद चक्रवर्ती, उसकी पत्नी और लड़की गाड़ी में बैठे थे। साथ में गठरी-पेटी वगैरह थी।

सबके सब सजग हो गए।

"आप लोग कहा जा रहे हैं ?"

हरिपद चक्रवर्ती झुंझला उठा, "चाहे हम कही जाएं, तुम्हें बताना कोई जरूरी है कि हम लोग घर जा रहे हैं !"

"चले जा रहे है—इसका मतलब ? क्या मकान मिल गया है ?"

"तुम्हें इसकी कैफियत देनी पड़ेगी ?"

"हा, देनी है। बताइए, आप अपनी लड़की को कहां ले जा रहे हैं ?"

"खबरदार ! जबान संभालकर बातचीत करो।"

"हम लोग पुलिस बुला सकते हैं, मालूम है ?"

पुलिस का नाम सुनकर हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी बोली, "क्यों, हम लोगों ने क्या किया है जो पुलिस बुलाओगे ?"

भोलादत्त बोला, "पुलिस को बताएंगे कि आप अपनी लड़की को क्यों लेकर जा रही हैं। हम आप लोगों को जाने नही देंगे। देखें, आप हम लोगों का क्या कर लेते हैं ?"

अब हरिपद की पत्नी चीख-चीखकर रोने लगी, "मुहल्ले के लोग कितने शैतान हैं ! हम लोग अपनी मरजी से बाहर भी नही जा सकते..."

भोलादत्त बोला, "हम लोगों को सारी बातें मालूम हैं। हम लोगों से कुछ छिपाने की कोशिश मत करें। किसने यह काड किया है, हम यह भी बता

सकते हैं।"

"फिर तुम लोग हमें जाने नहीं दोगे ?"

टैक्सी-ड्राइवर बंगाली था। वह बोला, "नाहक झमेला बढ़ा रहे हैं। उनकी लड़की है, उनकी जो मरजी होगी, करेंगे। इससे आप लोगों का क्या बिगड़ता है ?"

विजय तनकर खड़ा हो गया, "हम लोगों के मुहल्ले की लड़की पर पराये मुहल्ले का लड़का अत्याचार कर जायेगा और हम डर से भाग जाएं ? हम लोगों के बदन में ताकत नहीं है ? हम उसे सबक नहीं सिखाएंगे ?"

"आप उन्हें पकड़ें तो सबक सिखाएं। हम लोगों को छोड़ दें। मैं कब तक खड़ा रहूं ?"

भीड़-भाड़ देखकर और भी लोग इकट्ठे हो गए। कलकत्ता शहर घेराव के लिए प्रख्यात है। यहां हर काम के लिए घेराव किया जाता है।

"यहां क्या हुआ है, साहब ?"

"देखिए न, भले आदमी लड़की को लेकर नवद्वीप भागे जा रहे हैं, वहां जाकर लड़की का एबॉरशन करायेंगे।"

किसी एक उत्साही व्यक्ति ने झांककर लड़की को भली-भांति देखना चाहा। जयन्ती ने तब घूंघट खींचकर अपना मुह ढक लिया था। वह जितना ही अपना मुख ढक रही थी, लोगों का आग्रह भी उतना ही तीव्र होता जा रहा था।

"देखें, लड़की का चेहरा कैसा है ! शादी न होने के बावजूद गर्भवती हो गई है ! इस तरह की लड़कियां आमतौर से दिख नहीं पड़ती हैं। देखें-देखें, जरा और मुह से घूंघट हटाओ, अच्छी तरह देखें।"

टैक्सीवाला डर गया। आजकल कलकत्ते की जो हालत है, सब कुछ हो सकता है। हो सकता है, मुहल्ले के लड़के कहीं टैक्सी में आग न लगा दें।

"हमारे मुहल्ले की लड़की का सतीत्व नष्ट करेगा और हम चुप रहें !"

सब कुछ सुनने के बाद एक बूढ़ा-जैसा आदमी बोला, "आप लोगों में नाम मात्र की भी हिम्मत नहीं है साहब ? उस लड़के को पकड़कर ले आइए न। वह लड़का कौन है ? कैसे खानदान का है ?"

टैक्सीवाला बोला, "मुझे पैसेंजर की जरूरत नहीं है साहब ! आप लोग उतर जाइए, दूसरी टैक्सी ठीक कर लीजिए।"

हरिपद चक्रवर्ती टैक्सी से उतरने जा रहा था। अपनी सफाई देते हुए कहा, "मैं अल्पवेतनभोगी आदमी हूं, भाई ! मुसीबत में फंसकर जा रहा हूं। लड़की को यहां रखने से बात फैल जाएगी और इसका शादी-व्याह नहीं हो पाएगा···"

एक आदमी ने कहा, "जानने को बाकी ही क्या रहा साहब ?"

बूढ़े आदमी ने कहा, "वह आसामी कहां है ?···वही जो आपकी लड़की का सर्वनाश कर गया ?"

भोलादत्त बोला, "अब वह क्यों रहने लगा ? चूस-चूसकर शहद पिया और उड़ गया।"

बूढ़े ने कहा, "बात सीरियस है और आपको मजाक सूझा है ? आप लोगों की लड़की रहती तो समझते !" फिर कहा, "अब यहां से भागकर ही क्या करेंगे ?"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "आप चतुर आदमी हैं, आप ही उपाय बताइए।"

हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी अन्दर से बोली, "तुम्हारे चलते ही यह सब हुआ। मैंने तब कहा था : यह मकान छोड़ दो, यह मुहल्ला छोड़ दो, सो तो उस वक्त सुना ही नहीं।"

"तुम खामोश रहो।"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "देख रहे हैं न, इस औरत की बात सुन ली न ! चाहने से ही क्या मकान मिल जाता है ? आजकल पैसा देने से ही मकान मिल जाता है ?"

भोलादत्त ने कहा, "आप लोग घर छोड़कर क्यों जा रहे हैं ? इसी मकान की मरम्मत कराकर रहिए। उस साले मकान-मालिक का हम घेराव करेंगे। बताइए, मकान-मालिक कहां रहता है ?"

बूढ़े ने कहा, "सो सब बाद में होगा, अभी आप लोग कहां जा रहे हैं, यही बताइए !"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "क्यों ?"

"फालतू बात है !" विजय ने कहा।

"सोचते हैं कि हमें मालूम ही नहीं है ?"

"मेरे साले नवद्वीप आए हुए हैं, वहीं जा रहा हूं ?" हरिपद चक्रवर्ती ने बताया।

"सारी फालतू बातें है। हम लोग जाने नहीं देंगे। उतर जाइए। आप लोग सभी उतर जाइए। आप लोगों को इसी मकान में रहना पड़ेगा।"

भीड़ तब खासी तगडी हो गई थी। सभी तब जानने को आग्रहशील थे, "क्या हुआ है साहब ? यहां क्या हुआ है···?"

भोलादत्त ने बिगड़कर कहा, "यहां से हटिए···हट जाइए। क्या देख रहे हैं ? तमाशा है !"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "अब क्या करूं साहब ? उफ, मैं बड़ी मुसीबत में फंस गया। मैं अल्पवेतनभोगी आदमी हूं···"

भोलादत्त ने कहा, "उतर आइए और क्या कीजिएगा ! हम लोग आपको मुसीबत से उबारेंगे। हम लोग इस मुहल्ले के लड़के हैं। हम लोगों के रहते आपने पराये मुहल्ले के लड़के को घर में घुसने दिया···"

"लेकिन मेरी लड़की ? मेरी लड़की का क्या इन्तजाम होगा ?"

भोलादत्त ने कहा, "होगा; इन्तजाम किया जायेगा। हम लोग जब हैं तो कोई न कोई इन्तजाम कर ही देंगे।"

"क्या इन्तजाम कीजिएगा ?"

भोलादत्त ने कहा, "हम लोग इतने आदमी है और कोई इन्तजाम नहीं होगा ? आप क्या कह रहे है ? आप किसके डर से भागे जा रहे हैं ? आदमी के डर से ? वहां भी तो लोग आपकी हानि कर सकते हैं। लोगों से आपको छुटकारा कैसे मिलेगा ?"

हिमांशु बाबू दिल के दौरे के बावजूद खिड़की से झांककर सब सुन रहे थे।

विजय की पत्नी गोपा भी दोमंजिले की एक खिड़की के किनारे खड़ी होकर सब सुन रही थी।

राधा बुआ सुन रही थी। भवदुलाल सुन रहा था। हर कोई सुन रहा था।

एक-एक कर सभी फिर से टैक्सी से नीचे उतर आए। पहले हरिपद चक्रवर्ती उसके बाद उसकी पत्नी। सबसे आखिर में हरिपद चक्रवर्ती की लड़की संपूर्ण चेहरे को घूंघट से ढके नीचे उतरी। सभी एक-दूसरे को धक्का देते हुए

देखने के लिए आगे बढ आए।

बूढ़े आदमी ने जयन्ती की ओर देखते हुए कहा, "जाओ बेटी, अन्दर चली जाओ। डरने की कौन-सी बात है !"

भोलादत्त ने सभी को ज़ोरों से झिडका, "साले, तुम लोगों को मार डालूगा। साले, अपनी मा-बहन की ओर आंख गड़ाकर नही देख सकते हो ?"

उसके बाद भोलादत्त वगैरह ने खुद गठरी-पेटी आदि चीज़ों को अपने-अपने हाथों में उठाया और तीनमञ्जिले पर ले आए।

टैक्सीवाले ने कहा, "मेरा किराया ? इतनी देर का वेटिंग चार्ज ?"

"किराया-विराया नही मिलेगा। चले जाइए।"

टैक्सी-ड्राइवर को और कुछ कहने का साहस न हुआ। इतने आदमी हैं। गनीमत है कि टैक्सी में आग नहीं लगाई। इसके बाद किराये की माग करके उसने झमेला बढ़ाना नही चाहा। इंजिन स्टार्ट कर धुआ उगलता हुआ आखो से ओझल हो गया।

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में संभवतः एक ऐसा आकर्षण है जिसे अलगाया नही जा सकता। पुण्य का आकर्षण है, पाप का आकर्षण है। विरह का आकर्षण है, मिलन का आकर्षण है। यहा रहने में जिस तरह सभी अनिच्छुक हैं उसी तरह से इसे त्यागने में भी अनिच्छुक। यह ठीक वैसे ही लगता है जैसे रहना और त्यागना दोनो तकलीफदेह है। हरिपद चक्रवर्ती और उसके परिवार के लोग बहुत सोचने-विचारने के बाद इस निर्णय पर पहुचे थे वे यहा से निकलकर उस जगह चले जाएंगे जहां दोनो आखें ले जाएं। लेकिन यह संभव नही हो पाया। उन्हें रुकना पड़ा।

भोलादत्त बोला, 'साला भागकर कहां जाएगा! मैं देख लूगा। साले की उस पुष्पनमा गाटी को पकड़कर चूर-चूर कर डालूंगा। तभी मेरा भोलादत्त नाम सार्थक होगा।"

लेकिन कलकत्ता शहर में किसको किसका पता चलता है ? यहां जितने मनुष्य हैं उनसे ज्यादा अमनुष्य। यहां जितने अमनुष्य हैं उनसे ज्यादा हराम-

जादे। यहां वैसे ही हरामजादों की भीड़ में वह आदमी खो गया है जिसकी हड्डियों में शैतानी भरी हुई है। किसकी तलाश करे ? कहां तलाश करे ? कौन बताएगा कि आर्टिस्ट-सप्लाइंग के कमीशन-एजेंट आनन्द राय का मकान कहां है ?

एक आदमी पास आकर खो गया तो खो जाने दो। जयन्ती बहुत सस्ते में मिल गई थी, हालांकि उसे कुछ ज्यादा ही रुपये मिल गए थे।

लेकिन एकाएक एक सहूलियत हासिल हो गई। सहूलियत हासिल न हो तो आनन्द राय का चले कैसे ? उसे भी तो खाना-पहनना है।

कांजीभाई देसाई दो महीने के बाद फिर कलकत्ता पहुंचा। कमीशन-एजेंट की पुकार हुई।

आनन्द फिर स्ट्रैंड होटल में आकर उपस्थित हुआ।

अबकी काजीभाई देसाई नहीं बल्कि दूसरा ही नाम है। अबकी दो सौ बारह नंबर रूम को मिस्टर रमणलाल पाटिल ने बुक कराया है।

"मैं आपकी ही तलाश में था। उन लोगों ने बताया कि काजीभाई देसाई नाम का कोई भी व्यक्ति नहीं आया है। मैं वापस जा रहा था सर, फिर भी सोचा दो सौ बारह नंबर रूम एक बार देख जाऊं।"

देसाई जी ने कहा, "अपने पार्टनर के नाम से रूम बुक कराया है, इसीलिए खाते में मैंने यही नाम लिखा है। हां, तो मेरी आर्टिस्ट कहां है ? मेरी वही आर्टिस्ट !"

आनन्द ने कहा, "अबकी आपको एक दूसरी आर्टिस्ट दूंगा, सर !"

"क्यों उस आर्टिस्ट को क्या हुआ ?" देसाई ने पूछा।

"उसकी बात मत करें, सर। उस बार वह टाइट एट्टीन थी, अबकी आपको फाइन नाइन्टीन दे रहा हूं—बिलकुल सुपरफाइन···"

"नहीं-नहीं; मुझे सुपरफाइन नहीं चाहिए वही टाइट एट्टीन अच्छी है।"

"मगर, सर, उसके साथ एक परेशानी है ?"

"क्या ?"

"वह प्रेगनेंट हो गई है। बिलकुल बेवकूफ लड़की है, प्रिकॉशन नहीं लिया, अब फ्लैट पड़ गई···"

"फ्लैट का मतलब ?"

"बिलकुल औंधे मुह।"

सोने का तस्कर-व्यापारी रहने के बावजूद देसाई के मन में थोड़ी-बहुत दया-ममता थी। या कह सकते हैं, उसे वह लड़की बड़ी अच्छी लगी थी। देसाई कितने ही जगहों का चक्कर काटता है—बेरुत, पेरिस, बर्लिन, हांगकांग, सिंगापुर। हो सकता है उसे कहीं इस तरह की टाइट एट्टीम नहीं मिली हो।

"फिर मैंने उस लड़की की बड़ी ही हानि की···"

"नहीं सर, आप क्यों हानि करने लगे? वह लड़की क्या सिर्फ आपके साथ ही सोई थी? मिस्टर पराशर के चेम्बर की वह रेगुलर विजिटर थी। आप व्यर्थ ही यह सब सोचकर मन खराब कर रहे हैं। जैसे भी हो, वह सब झंझट चुक जाएगी। आजकल इतनी दवाएं निकल चुकी हैं कि कोई इसके बारे में चिन्ता नहीं करता है। यह सब अब कोई प्राब्लेम है ही नहीं···"

देसाई का मन जैसे बुझ गया। बोला, "नहीं, इस संबंध में मेरी भी अपनी एक जिम्मेदारी है, मिस्टर राय! दोषी मैं ही हूं। मैं उसे थोड़ी-बहुत हेल्प करना चाहता हूं। उसे मैंने कुल मिलाकर लगभग ढाई सौ रुपये दिए थे। अबकी अपने साथ बहुत पैसा ले आया हूं। बतौर कपेन्सेशन उसे मैं कुछ देना चाहता हूं···"

आनन्द बोला, "सो दीजिए न, सर, यह तो अच्छी बात है। गरीब लड़की की भलाई हो जाएगी। आपकी तरह गरीबों के बारे में कोई नहीं सोचता है, अगर सोचता तो कलकत्ता शहर सोने का मुल्क हो जाता, सर! मुझे रुपया दीजिए, मैं उसके हाथों में पहुंचा आऊंगा।"

मिस्टर देसाई ने मन ही मन कुछ सोचा। हो सकता है, उसे संदेह हुआ हो। बोला, "नहीं; उसी को एक बार मेरे पास ले आओ। उसी के हाथ में देना है।"

"वह इस प्रेगनेंट स्टेज में आने को क्या राजी होगी, सर?"

देसाई बोला, "क्यों, आने में क्या दोष है? किसी टैक्सी में ले आना और टैक्सी से ही पहुंचा देना। पांच मिनट की बात है। पांच मिनट में ही उसे छोड़ दूंगा। टैक्सी का किराया मैं चुका दूंगा।"

आनन्द क्या करे, समझ में नहीं आया।

देसाई बोला, "या नहीं तो और एक काम कर सकते हो। मुझे उनके घर

पर ले चलो। मैं खुद जाकर अपने हाथों से पैसा दे आऊंगा।"

आनन्द बोला, "नहीं सर, यह नहीं हो सकता। आप ठहरे काम के आदमी, आप आर्टिस्ट के घर पर क्यों जाइएगा? आपकी भी तो कोई प्रेस्टिज है! आपको क्या पड़ी है! इसके अलावा वे लोग क्या आदमी हैं सर? आदमी नहीं हैं..."

देसाई बोला, "कहने का मतलब यही है कि मैं उसे कुछ रुपया दूंगा ही, आई मस्ट गिव हर सर्मथिंग एज़ कंपेन्सेशन। मेरे विवेक को चोट पहुंची है... तुम्हें रुपया मिलेगा, राय, यह मत सोचना कि मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दूंगा।"

"मुझे कितना मिलेगा, सर?"

"पिछली बार मैंने कितना दिया था?"

"ढाई हज़ार नेट। तीन दिनों के लिए..."

"ठीक है, अबकी वन-थर्ड दूंगा।"

आनन्द ने मन ही मन हिसाब लगाया कि ढाई हज़ार का वन-थर्ड कितना होता है।

उसके बाद बोला, "ठीक है सर, मैं आज ही शाम को आर्टिस्ट को लाकर आपके सामने हाज़िर करूंगा।"

इतना कहकर आनन्द राय स्ट्रैंड होटल के दो सौ बारह नंबर कमरे से आहिस्ता-आहिस्ता बाहर आया और बायें हाथ से दरवाज़े को खींचकर बन्द कर दिया।

सभी हिसाब का खाता लिए बैठे हैं।

हिमांशु बाबू ने हिसाब से जीवन की शुरुआत की थी। और न केवल हिमांशु बाबू ने बल्कि हर किसी ने। काजीभाई देसाई ने हिसाब से शुरुआत नहीं की थी? उसने भी हिसाब करके देखा है, किस दर में सोना खरीदकर किस दर से बेचने का क्या लाभ होगा। हिसाब करके देखा है, कितना रुपया गोरा धन रहेगा और कितना काला धन। हिसाब करके यह भी देखा है कि कितना काला धन कमाने से लड़कियों के पीछे कितना पैसा खर्च किया जा सकता है।

लेकिन एकाएक यहां इस कलकत्ते में उसके हिसाब में भी कोई गड़बड़ी रह गई। अचानक उसे लगा, यह हिसाब क्यों नहीं मिल रहा है! डेबिट-क्रेडिट का बैलेन्सशीट इस तरह क्यों गड़बड़ा गया?

रणवीर के सामने उस वक्त भी वाउचर का पहाड़ खड़ा था। आंखों के आंसू का पहाड़ अगर हो सकता तो गणित का पहाड़ क्यों नहीं होगा?

वाउचरों को अपने सामने रखकर रणवीर फिर से हिसाब करने लगा। जन्म, मृत्यु और विवाह का हिसाब। रणवीर के पिता, माता सभी ने एक दिन इसी तरह अपने सामने वाउचरों को रखकर हिसाब लगाया था। डेबिट-क्रेडिट का बैलेन्सशीट तैयार किया था। जब हिसाब नहीं मिल सका तो दुबारा हिसाब किया, फिर से वाउचरों को सामने रखकर बैठा और गिनना शुरू किया—पांच साते पैंतीस का पांच, हासिल रहा तीन ··

लेकिन उननीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का विधाता निर्विकार है, निरंकुश, अदृश्य, अलभ्य, अवाङ्मनसोगोचर। वह जितना भयंकर है उतना ही आनन्दस्वरूप। उसके सामने जिस प्रकार मनुष्य की निरंतर प्रार्थना स्तुति के गीतों में गूंजती रहती है, उसी प्रकार वह अपनी इच्छा को व्यक्त करने में निरासक्त है—स्वयं के नियम के आनन्द से उदासीन। यही कारण है कि कोई उसे अत्यन्त दयालु कहता है, कोई भोलानाथ। विश्व की सृष्टि की अमोघ नीति के कारण वह सभी स्थानों में विराजमान है, सभी जीवों में निवास करता है लेकिन उसके साथ-साथ वह अव्यक्त भी है। उसे छुआ नहीं जा सकता, फिर भी उसका अस्तित्व है। उसे देखा नहीं जा सकता, फिर भी वह दृश्यमान है।

इसीलिए हरिपद चक्रवर्ती जब फिर से तीनमंजिले में लौट आया और दैनंदिन जीवन-यातना के आघातों से बेतरह परेशान हो उठा तब मालिक फिर से याद आया। मालिक यानी ईश्वरप्रसाद झनझनियां। वह मालिक कहां है? उस मालिक के आने से ही इसका हल निकलेगा। मालिक के आने से ही उन लोगों को चैन मिलेगा।

"साला, हरामजादा मकान-मालिक! अबकी मुट्ठियर आया तो उसके मुंह पर झाड़ू न मारूं तो मैं ब्राह्मण की बेटी नहीं···"

लेकिन गुस्सा उतारा जाए तो किस पर? गुस्सा करने से कौन सुनता है!

राधा बुआ कहती, "घर में पाप आकर समा गया; अब तक़दीर में क्या लिखा है, कौन जाने···"

हिमांशु बाबू के सीने का दर्द फिर से बढ़ गया है। फिर भी दर्द की हालत में ही कहते, "सृष्टिधर आया ?"

पत्नी कहती, "सृष्टिधर आए, चाहे न आए इससे तुम्हारा क्या ? तुम रोगी आदमी ठहरे, चुपचाप लेटे रहो !"

हिमांशु बाबू कहते, "चुपचाप कैसे पड़ा रहूं ? ज़रा बातचीत करना भी दोष है ?"

"सुनू तो सही, तुम क्या बात करना चाहते हो ? कहने में कहना इतना ही है कि मकान-मालिक आया या नहीं ? मकान-मालिक के आते ही सब दुःख दूर हो जाएगा ? मकान-मालिक के आ जाने से ही तुम्हारी दिल की बीमारी दूर हो जाएगी ?"

हिमांशु बाबू कहते, "अगर मकान का ज़ीना अच्छा रहता तो मुझे दिल की यह बीमारी नहीं होती। यह मकान ही तमाम अनर्थों का मूल है। मकान-मालिक आता तो उसे सारी बातें समझाकर कहता···"

यह न केवल हिमांशु बाबू की बात है बल्कि हर किसी की यही बात है। विजय भी यही कहता है, राधा बुआ और भवदुलाल भी यही बात कहते हैं। हरिपद चक्रवर्ती, उसकी पत्नी, जयन्ती, नेड़ी—सबके सब यही इस एक बात को दुहराते रहते हैं।

जिस दिन से हरिपद चक्रवर्ती वगैरह टैक्सी से उतरकर फिर से तीन-मंजिले पर लौट आए हैं, उसी दिन से उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन को केन्द्र मानकर नये सिरे से चर्चा-परिचर्चा चल रही है। पहले खुद जयन्ती सवेरे के वक़्त एकमंजिले पर आकर पानी ले जाया करती थी। उस दिन से उसने आना बन्द कर दिया है। उस दिन से हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी नीचे आती है और चुपके से नल से पानी ले जाती है। हरिपद चक्रवर्ती की ज़बान में पहले जो तेज़ी थी, वह कम हो गई है।

राधा बुआ कहती, "तेज़ी रहे तो कैसे ? तेज़ी रहने के लायक मुंह रह गया है ? अब तेज़ी दिखाएगा तो लोग हालत ख़राब कर देंगे।"

हिमांशु बाबू की पत्नी कहती, "दिमाग़ बड़ा चढ़ गया था। दर्पहारी

मधुसूदन आदमी का घमंड चूर कर देते है।"

फूल भाभी कहती, "राधा दी, अब वह छोकरी क्या करती है ?"

"करेगी क्या वह, सारा दिन मुह लटकाए पडी रहती है।"

"अब सडक पर निकलती है ?"

राधा बुआ कहती, "वैसा पेट लेकर कैसे निकलेगी। निकलने में शर्म नही मालूम होती है ?"

"तो हया-शर्म अभी तक है ? इधर उस शर्म के कारण हम अधमरी हो गई हैं राधा दी···"

रफ्ता-रफ्ता लोगों को और भी मजा आने लगा। मानो, उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान के कारण मुहल्ले के लोगों को नीद ही नही आती है। छोकरी क्या कर रही है, क्या सोच रही है, क्या खाती है—इसकी मजेदार चर्चा मुहल्ले के लोगों के हर अड्डे मे चलने लगी। बच्चा होने पर कहा होगा, किस होटल में ?—यह चर्चा भी चली।

भोलादत्त वगैरह छिप-छिपकर दिन-रात पहरा दे रहे थे। कोई डाक्टर जाता हुआ दिखता तो ध्यान से देखते कि किस मकान मे जा रहा है। कोई टैक्सी जाती तो गौर से देखते कि किस मकान के सामने जाकर खड़ी होती है। वे बारी-बारी से पहरा देते थे। रात मे मयूरभंज रोड न जाकर उस नुक्कड़ पर ही बारी-बारी से ठर्रा पीकर लौट आते थे।

आकर अड्डेबाजी करते थे और हिसाब लगाते थे : जीवन का हिसाब, जवानी का हिसाब, अन्याय, अत्याचार, अपव्यय का हिसाब, मौज-मस्ती और आवारागर्दी का हिसाब। उन लोगों के हिसाब का फारमूला ही कुछ और था। तेजी जरा कम हो जाए, खून थोडा ठंडा हो जाए, तब देखने में आएगा कि वे ही हिसाब कर रहे हैं : पांचसाते पैंतीस, हासिल रहा···"

उस दिन सवेरे-सवेरे सृष्टिधर पकड़ में आ गया।

सृष्टिधर और ही दिनों की तरह उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान से आ रहा था। रास्ते मे भोलादत्त ने पकड़ा—

"कहां जा रहे हो बेटे सृष्टिधर ?"

"हुजूर, मालिक के घर में···"

"क्यों ?"

"और करने ही क्या जाऊंगा, किराये के लिए तकाजा करने जा रहा हूं।"

"देखना, होशियार रहना, हम लोग यहां बैठे-बैठे पहरा दे रहे हैं, तीन-मंजिले से अगर कोई निकलकर भागना चाहेगा तो उसे धर दबाएंगे।"

सृष्टिधर सब कुछ जानता है, सब कुछ देख चुका है, सुन चुका है। वह बोला, "आप लोगों के लिए डरने की कोई बात नहीं है हुजूर, किराया वसूल कर मालिक को भेज देने के बाद मैं निश्चिन्त हो जाऊंगा।"

"तुम्हारा मालिक कब आ रहा है ? तुम्हारा मालिक बिल्कुल भगवान हो गया है क्या ?"

सृष्टिधर के चेहरे पर मुसकराहट फैल गई, "अबकी सचमुच आ रहे हैं हुजूर, यही बात कहने आया हूं। देखिए, यह उनकी चिट्ठी है।"

और सृष्टिधर ने एक चिट्ठी निकालकर दिखाई। चिट्ठी में क्या लिखा है, यह किसी ने नहीं देखना चाहा। इसलिए उसने चिट्ठी को फिर से जेब के अन्दर डालकर रख लिया।

"मालिक ने कहा है कि अबकी मकान को नये सिरे से मरम्मत करा देंगे। जीना मरम्मत करायेंगे, दीवार में पलस्तर लगवायेंगे, खिड़की, दरवाजे और पलस्तर को रंगवा देंगे, सब कुछ मरम्मत करा देंगे। अबकी किसी को कोई शिकायत नहीं रहेगी, हुजूर!"

भोलादत्त ने पूछा, "तुम्हारे मालिक कब आ रहे हैं ?"

"कल।"

"ठीक है। कल कै बजे ?"

"शाम को—छह बजे।"

"हम लोग उस वक्त रहेंगे सृष्टिधर। याद रखना। तुम्हारे मालिक से हमें कुछ बातें करनी हैं। अब हम लोग किसी तरह की नियमहीनता बरदाश्त नहीं करेंगे। जाओ…"

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में भी यह खबर फैल गई। मालिक कल आ रहा है। अब भय की कोई बात नहीं है। अबकी जीने की मरम्मत हो जायेगी, पानी टपकना बन्द हो जायेगा, सब कुछ ठीक हो जायेगा। अब डरने की कोई बात नहीं है…"

लेकिन फिर भी मालिक नहीं आया। ईश्वरप्रसाद ढनढनिया बहुत ही काम-

काजी आदमी है। सिर्फ उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की देखरेख करने से उसका काम नहीं चल सकता। दुनिया में उसके और भी बहुत सारे मकान हैं। दुनिया के आदमी उत्सुकता के साथ ईश्वरप्रसाद ढनढनियां के इन्तज़ार में बैठे हैं। उससे मुलाकात होना क्या इतना आसान है! जप-तप-साधना करने से भी उसकी प्राप्ति नहीं हो सकती है।

सभी ने राहत की सांस ली थी और सोचा था कि मकान-मालिक आएगा। भोलादत्त, केतो, पटला सभी प्रतीक्षा कर रहे थे। विजय भी तत्पर था।

दूसरे दिन अचानक एक टैक्सी उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के सामने आकर रुकी। टैक्सी का किराया चुकाकर आनन्द चुपके-से नीचे उतरा। एकाएक भोलादत्त ने पीछे से उसके गले को धर दबाया।

'क्यों साले, फिर आए हो?"

आनन्द राय इसके लिए कतई तैयार न था। पीछे मुड़ने पर इतने गुंडों पर दृष्टि पड़ते ही वह चिहुक उठा।

"मुझे क्यों मार रहे हैं? मैंने क्या किया है?"

"तुमने क्या नहीं किया है, पहले यही बताओ साले! सुनूं! तीनमंजिले पर तुम क्यों जा रहे थे? किसके पास जा रहे थे? लड़की को प्रेगनेंट करके भाग गए थे! अब तुम्हारा मतलब क्या है? क्या मतलब है, बताओ?"

"क्या कहा, जयन्ती को मैंने प्रेगनेंट किया है? मैंने?"

"केतो, तुम कमीज का कालर कसकर पकड़ो वरना साला भाग जाएगा।"

आनन्द बोला, "मैं भागूंगा क्यों? मैंने क्या किया है?"

"तुमने क्या किया है साले, यह तो बता ही चुका हूं। अगर फिर से सुनना चाहते हो तो ऊपर चलो। जल्दी ऊपर चलो···एक भले आदमी का सर्वनाश करके पूछते हो कि क्या किया है?"

इतना कहकर विजय ने उसकी गरदन पर कसकर धक्का लगाया।

"अपनी गुनगुना गाड़ी में आओगे तो हम पहचान लेंगे, यही सोचकर टैक्सी पर आए हो। साले, पराये मुहल्ले का लड़का होकर हमारे मुहल्ले की लड़की पर तुम्हारा हमला करना हम निकालते हैं। चलो साले, ऊपर चलो···"

धक्का दे-देकर भोलादत्त उसे जीने से ऊपर की तरफ ले जाने लगा।

उनतीस बटे तीन बटे छह् नीलमणि हालदार लेन का यह मकान एक अजीब ही दुनिया है। यहां कोई न कोई हलचल हर रोज लगी ही रहती है।

"क्या हुआ साहब, इस मकान में फिर क्या हुआ ?"

भवदुलाल कुल मिलाकर तब दफ्तर से वापस आया था। उसकी पत्नी को फिर से बच्चा होने वाला है। डाक्टर के पास आना-जाना लगा रहता है। सातवें के बाद यह आठवां है। आठवी बार भी पहली बार की तरह ही घोर चिन्ता लगी हुई है ? "क्या हुआ है वहां ? शोर-शराबा क्यों मचा है ?"

"उसी लडके को वे लोग पकड़कर ले आए हैं और तीनमंजिले की तरफ ले जा रहे हैं।"

"मार-पीट रहे हैं ?"

"मालूम नही। गुंडे हैं गुंडे। इस मकान को छोड़ने पर ही जान बचेगी।"

हिमांशु बाबू के सीने का दर्द शान्त था। करवट लेकर पूछा, "वहां शोर-गुल क्यों हो रहा है ?"

उधर जीने पर धक्का-मुक्का लगाता हुआ भोलादत्त आनन्द को तीनमंजिले की तरफ ले जा रहा था, "चलो साले, मजा चखाता हूं, पराये मुहल्ले का होकर हमारे मुहल्ले की लड़की से···"

पीछे-पीछे बहुत-से आदमी तमाशा देखने के लिए ऊपर की ओर गए। वे लोग भी देखेंगे कि भोलादत्त क्या करता है, ऊपर क्या वाकया होता है···

अन्तिम सीढ़ी पर पहुचकर भोलादत्त दरवाजे की कुंडी खटखटाने लगा, "मौसीजी, मौसीजी···"

मुद्रा ऐसी थी जैसे किसी राज्य को जीतकर लौटा हो। जैसे हर कोई जयन्ती की शुभाशंसा का अधिकारी हो। जैसे जयन्ती की भलाई किए बिना उन लोगों का खाना हजम नही हो रहा है, हिसाब नहीं मिल रहा है। हासिल कुछ भी नही बच रहा है।

रणवीर चाहे लाख कोशिश करे, हिसाब किसी भी हालत में नहीं मिलेगा। हिसाब किसी का मिलता भी नही है। हिसाब मिलनेवाली चीज है ही नहीं।

रणवीर के बाप का हिसाब नहीं मिला था, फिर रणवीर का ही हिसाब क्यों मिलेगा ?

डेबिट-क्रेडिट अगर मिल ही जाता तो नीलमणि हालदार लेन के उनतीस बटे तीन बटे छह मकान की शक्ल कुछ और ही होती। उनतीस बटे तीन बटे छह मकान का डेबिट-क्रेडिट और ही तरह का होता। उसके हिसाब के खाते में लिखा हुआ होता—पांच साते पैंतीस, पैंतीस का पांच हासिल रहा···

मगर वह बात अभी रहे।

इधर दूसरे ही दिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन की शक्ल देखकर रास्ते के लोग विस्मय में डूबने-उतराने लगे। शाम होते ही मकान की छत पर रोशनियां जल उठीं। मंडप तैयार किया गया। भोलादत्त वगैरह ने विराट् आयोजन किया। वे कहीं से पुरोहित बुला लाए। मसालेदार कचौरियां छन रही हैं, झींगा मछली का फ्राइ हो रहा है। बैंगन का भुजिया, कोंहड़े की सब्जी, मिठाई। कुछ भी छोड़ा नहीं गया है। हरिपद चक्रवर्ती अल्पवेतनभोगी आदमी है। शुरू में ज्यादा खर्च करने की उसे इच्छा नहीं थी। लेकिन अंततः उसे कर्ज लेना ही पड़ा और कर्ज के पैसे से ही सारा आयोजन किया गया है। विवाह-मंडप में एक ओर जयन्ती बैठी हुई है, दूसरी ओर आनन्द। भोलादत्त ने चिल्लाकर कहा, "बोलो साले, मंत्र का उच्चारण करो · यदिदं हृदयं तव, तदिदं हृदयं मम···"

सारी रात घर को अटकाए रखा तब शादी हो रही है। आनन्द ने कहा था, "मैं गरीब आदमी हूं, शादी कर मैं खर्च नहीं चला पाऊंगा, पत्नी को खाना-कपड़ा नहीं दे पाऊंगा। मेरे पिताजी कैंसर के मरीज हैं, मेरी बहन को पोलियो है···"

तब छत पर मंडप के तले विजय गरम-गरम मसालेदार कचौरियां परोस रहा था, "आपको और मसालेदार कचौरी दूं, भैया ?"

दोमंजिले के हिमांशु बाबू के सीने का दर्द फिर से बढ़ गया। बोला, "अजी, सुनती हो, डाक्टर को जरा खबर भेजो, मेरी छाती धड़क रही है।"

नीचे एकमंजिले पर नेड़ी चिल्लाई, "मां, ओ मां···"

राधा बुआ बोली, "क्यों री, दर्द उठा है क्या ? दाई बुलाऊं ?"

ऊपर मडप बनी छत पर कन्यादान की रस्म पूरी हो गई। हरिपद चक्रवर्ती ने कन्यादान की रस्म की। उसके बाद है कोहबर, उसके बाद ··

"कहां है ! अरे, सृष्टिधर कहां है ? सृष्टिधर ?"

रणवीर तब भी वाउचर लेकर हिसाब किए जा रहा है। गणित का पहाड। आंखों के आंसू का पहाड हो सकता है तो गणित का पहाड क्यो नही होगा ? रणवीर आज जिस तरह हिसाब कर रहा है, रणवीर का बाप भी एक दिन उसी तरह हिसाब करता था। रणवीर की मा ने भी हिसाब किया था। लेकिन कहां, किसी का हिसाब कहा मिला ? फिर रणवीर का ही हिसाब क्यों मिलेगा ?

फिर भी दुनिया मे हिसाब का सिलसिला बन्द नही होगा। रणवीर, रणवीर का बाप, उसकी मा, हरिपद चक्रवर्ती, भवदुलाल, राधा बुआ, विजय, भोलादत्त, पटला, काजीभाई देसाई, सभी हिसाब करते ही रहेंगे। चाहे हिसाब मिले, चाहे न मिले। हर कोई कहेगा : पाच साते पैंतीस, पैंतीस का पाच हासिल रहा··

सृष्टिधर तब एक कोने मे बैठा हुआ बैंगन के भुजिया के साथ मसालेदार कचौरी खा रहा था। "मैं यहा हूं ··" उसने कहा।

"तुम्हारा मालिक कहा है ?"

'यदिदं हृदयं तव, तदिद हृदयं मम···'

"देखिए, मैं गरीब आदमी हूं, शादी कर खर्च चलाना मेरे लिए मुश्किल है, पत्नी को खाना-कपडा नही दे पाऊंगा। मेरे पिताजी कैंसर के मरीज हैं, मेरी बहन को पोलियो है···"

"साले, तुम पराये मुहल्ले का होकर मौज करके चले जाओगे और हम लोग चुप रहें ? बोल साले, मंत्र का उच्चारण कर···यदिदं हृदयं तव, तदिदं हृदयं मम···

"आपको और एक चॉप दू भैया ?"

'साले, मेरे मौसाजी का दोस्त मुचीपाड़ा के थाने का ओ० सी० है ! हम लोगों से चालाकी करने चला है !"

"दही, दही चाहिए ?"

"देखिए, मैं शादी करके खर्च नही चला पाऊंगा। मेरे पिताजी कैंसर के मरीज हैं, मेरी बहन को पोलियो है···"

"अरे युधिष्ठिर, तुम तो भाई कुछ खा ही नहीं रहे हो; लो, और एक रसगुल्ला लो।"

'यदिदं हृदयं तव, तदिदं हृदयं मम…'

'पाच साते पैंतीस, पैंतीस का पांच, हासिल रहा तीन…'

'बोल साले, मंत्र का उच्चारण कर…'

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान का मालिक उस दिन भी नही आया। जन्म, मृत्यु, विवाह की जटिलता के बीच जब दुनिया सकटग्रस्त थी, सभी उसके आने की प्रतीक्षा करते-करते थक गए, तब भी वह नही आया। हो सकता है, वह कभी आए ही नहीं। युधिष्ठिर ने खाते-खाते कहा, "अचानक वह हांगकाग चले गए हुजूर, मेरे पास तार आया है…"

मालिक भले ही न आए, परन्तु उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की दैनंदिन जीवन-यात्रा मे कभी कोई अवरोध पैदा नही हुआ है। ऊपर जब मंडप बनाकर हरिपद चक्रवर्ती की लड़की की शादी हो रही है, शंख बज रहा है, सभी खान-पान कर रहे हैं, दोमंजिले पर तब हिमांशु बाबू के सीने का दर्द बढ़ रहा है। डाक्टर आ चुका है, कोरामिन और आक्सिजन दिया जा चुका है और नीचे के एकमंजिले मे भवदुलाल के एक और लड़का हुआ है। यह आठवी सन्तान है। किसी के किसी काम मे अवरोध पैदा नही होता। ईश्वरप्रसाद ढनढनियां चाहे कलकत्ते मे रहे, चाहे हांगकांग मे, उसके चलते जीवन-यात्रा के क्रम मे कोई व्यतिक्रम नही आता। इसी तरह जब यह गड़बड़ी टल जाएगी, जिस दिन तमाम मनहूसियत की छाया हट जाएगी, उस दिन हो सकता है ईश्वरप्रसाद ढनढनिया की फिर से खोज-पड़ताल हो, लेकिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मालिक के पास इतना वक्त नहीं है कि वह यहा आये। आकर पाखाने की सीढ़ी की मरम्मत कराए, रसोईघर की छत का सूराख ठीक कराए, दीवार में सफेदी कराए और तमाम शिकवा-शिकायत और अभावों को दूर कर दे ताकि सभी राहत की सांस ले सकें।

और रणवीर तब भी हिसाब करता रहेगा: पांच साते पैंतीस, पैंतीस का पांच हासिल रहा…

○ ○ ○

विश्व प्रिंटिंग सर्विस द्वारा, शाहदरा प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली मे मुद्रित